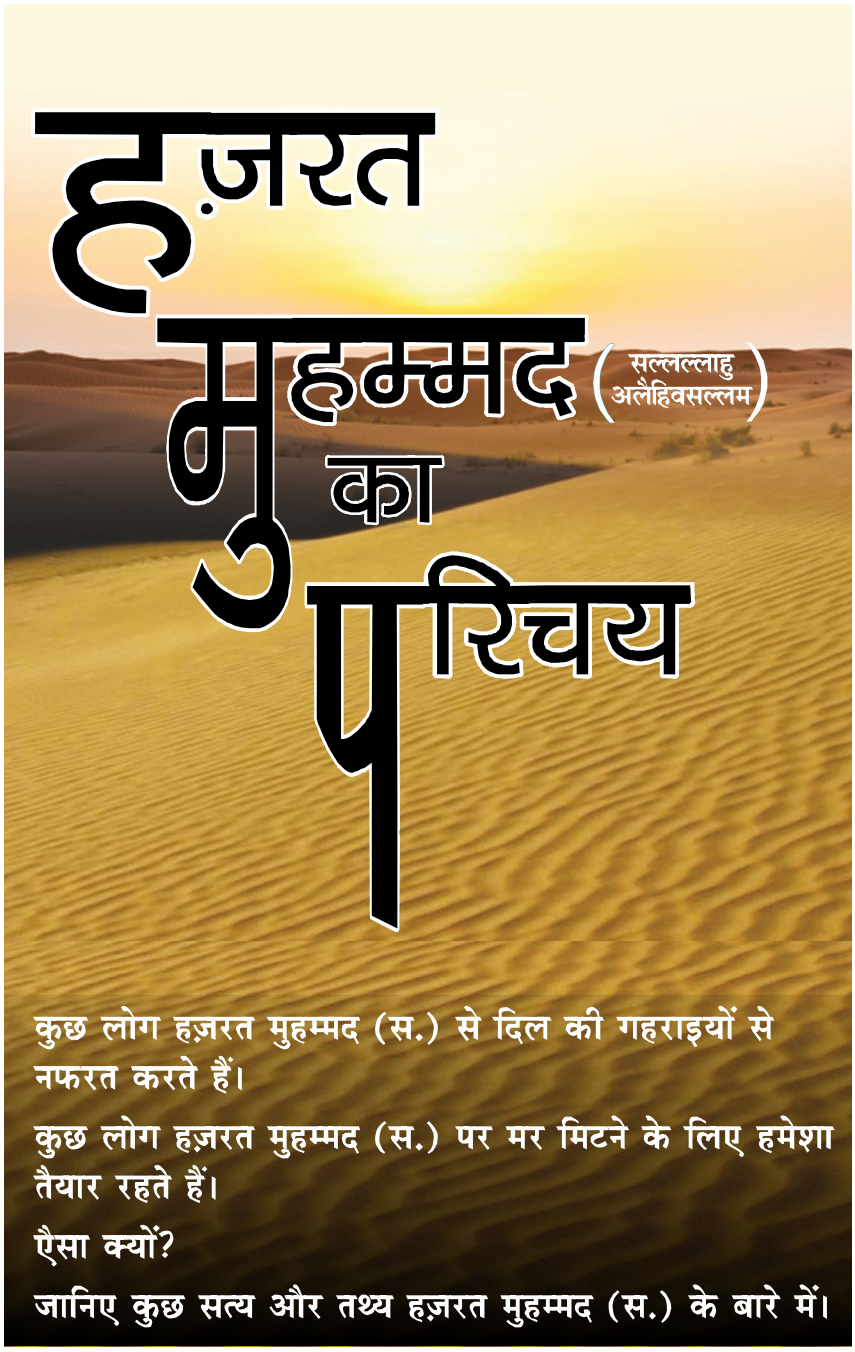
हज़रत
मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम)
का
परिचय
कुछ लोग हज़रत मुहम्मद (स.) से दिल की गहराइयों से नफरत करते हैं।
कुछ लोग हज़रत मुहम्मद (स.) पर मर मिटने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।
ऐसा क्यों?
जानिए कुछ सत्य और तथ्य हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का परिचय

क्यू. एस. खान
B.E (Mech)

Tanveer Publication
Hydro Electric Machinari Primaises
A-13, Ram Rahim Udyog Nagar, Bus stop lane,
L.B.S Marg, Sonapur, Bhandup (West)
Mumbai- 400078
Phone - 022-25965930 Cell- 9320064026
E-mail- hydelect@vsnl.com, hydelect@mtnl.net.in
Website- **www.freeeducation.co.in**

No Copyright

इस पुस्तक की कॉपी-राइट क्यू. एस. खान के पास है। आप इस पुस्तक में कुछ कमी या ज्यादती न करें तो इस की इजाज़त है कि इस पुस्तक को कोई भी बगैर इजाज़त ट्रान्सलेट कर सकता है और छाप सकता है। अगर आप इस किताब में कोई ग़लती पाते हैं तो कृपया हमें सूचित करें ताकि हम उसे अगले संस्करण में दुरूस्त कर सकें ।

हज़रत मुहम्मद (स.) का परिचय

ISBN No-978-93-80778-21-1

First Edition : Feb 2014

Price: **₹ 30/-**

Printed by

Al Qalam PUBLICATION PVT. LTD.

3, Gali Garhaiyya Bazar Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Tel :- 011-23241481, 23261481. Fax :- 011-23241481.

E-mail :- alqalambooks@gmail.com

प्रस्तावना

ईश्वर ने यह ब्रह्माण्ड लगभग ४५० करोड वर्ष पूर्व बनाया था। ईश्वर ने इस ब्रह्माण्ड और मानवजाति को बनाने के पहले हमारी आत्माएं बनाई थीं (पवित्र कुरआन ७:११)। अर्थात हम इस ब्रह्माण्ड में बहुत लम्बी अवधी से हैं। आत्मा नष्ट नहीं होती इसलिए भविष्य में भी हम अनंत काल तक इसमें रहेंगे।

हम आने वाले अनंत काल में सुख से रहेंगे या दु:ख से, यह हमारा इस धरती पर ६०, ७०, ८० या १०० वर्ष के जीवन पर निर्भर करता है। हम क्या जीवनशैली अपनाएं जिससे हमको मरने के बाद सुख प्राप्त हो यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है।

इसके लिए आप को स्वंय शोध और ज्ञान मंथन करना होगा। हम और आप से पहले भी बहुत से आचार्य और विद्वानों ने ऐसा ही शोध और ज्ञान मंथन किया है।

इस पुस्तक के अध्याय ९ में ऐसे ही कुछ विद्वानों के विचार लिखे हैं जिन्होंने जीवन भर शोध और ज्ञान मंथन किया है और किसी नतीजे पर पहुंचे है।

महापुरुष ज्ञानी वेद व्यास जी, महाकवि तुलसीदास जी, संत तुकाराम, ईसा मसीह (अ.स.) और बहुत से विद्वानों ने कल्की अवतार हज़रत मुहम्मद (स.) की प्रशंसा की है। अगर हम हज़रत मुहम्मद (स.) बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करें, उनको जांचें और परखें और फिर अपने विश्वास का निर्णय लें तो हमारे मरने के बाद, और इस धरती पर भी हमारी सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं।

यह पुस्तक इसी हेतु लिखी गई है। आप सुनी सुनाई बातों पर विश्वास न करें। धर्म के बारे में हर जानकारी को जांचें परखें, शोध करें और सही निर्णय पर पहुंचने की कोशिश करें। आप की धर्म और विश्वास की दिशा में लापरवाही आप के मरने के बाद का जीवन बरबाद कर सकती है। इसलिए इस मामले में गंभीर रहें और सही निर्णय लें।

देश में जो साम्प्रदायिक दंगे हो रहे है। और लोगों के बीच जो नफरत फैलाई जा रही है, इस पुस्तक से मुझे आशा है कि वह भी कम होगी।

मैंने यह पुस्तक बहुत सी दूसरी पुस्तकें पढ़ कर लिखी है। हो सकता है मुझसे समझने में या लिखने में गलती हुई हो। आप से विनति है कि आपको इसमें ऐसी कोई बात लगे जो किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाती हो, या किसी का अपमान करती हो, या इसमें कोई बात या तथ्य गलत लिखा गया हो तो मुझे इसकी सूचना दें। हम इसे सुधारने की पूरी कोशिश करेंगे।

आपका भाई

Q.S.Khan

अनुक्रमाणिका

१. हज़रत मुहम्मद (स.) के पूर्वज.....०५
२. हज़रत मुहम्मद (स.) का परिवार.....१०
३. हज़रत मुहम्मद (स.) का पैग़म्बरी से पहले का जीवन.....१२
४. हज़रत मुहम्मद (स.) का पैग़म्बरी के बाद का जीवन.....१४
५. हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में विद्वानों के विचार.....२२
६. हज़रत मुहम्मद (स.) का आचरण कैसा था?.....२९
७. हज़रत मुहम्मद (स.) के उपदेश.....३७
८. एक ईश्वर का अस्तित्व है इसका प्रमाण.....४४
९. पैग़म्बर कौन?.....४७
१०. पैग़म्बरों के दुश्मन कौन?.....५१
११. क्या हज़रत मुहम्मद (स.) हिंसा की शिक्षा देते थे?.....५५
१२. हज़रत मुहम्मद (स.) की १२ पत्नियाँ क्यों थीं?.....६६
१३. अग्नि का रहस्य क्या है?.....७४
हज़रत मुहम्मद (स.) का जीवन एक नज़र में.....७८

लिखने तथा छापने में प्रयोग किये जानेवाले कुछ प्रचलित शब्दों और वाक्यों के छोटे रुप इस प्रकार हैं;

BC :- Before Christ- F&mee cemeern kesâ pevce kesâ henues~ (DeLee&le F&mee hetJe&)

AD :- (Anno Domini) F&mee cemeern kesâ pevce kesâ yeeo~ (DeLee&le F&mee heMÛeele)

(me.) :- सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (F&Õej keâer ef›eâhee n]pejle cegncceo Deewj Gvekesâ heefjJeej hej nes~)

9. हज़रत मुहम्मद (स.) के पूर्वज

हज़रत आदम (अ.स.):-

● ईश्वर के बहुत से नाम विशेषता के आधार पर लिये जाते हैं। ईश्वर (अल्लाह) ही ख़ालिक है अर्थात पैदा और रचना करने वाला है यानी उसमें ब्रम्हा वाली विशेषता है, वही पालनहार (विष्णु) है और वही जिन्दगी के बाद मौत भी देता है और उसी की आज्ञा से प्रलय भी होगा। उसके इस विशेषता को महेश कहा गया है। अर्थात ईश्वर के कार्यों के अनुसार उसका नाम ब्रह्मा, विष्णू और महेश है, परन्तु ईश्वर एक ही है।

● भविष्य-पुराण में कहा गया है कि आदम और हव्वा को विष्णु (ईश्वर) ने गीली मिट्टी से पैदा किया। प्रदान नगर (जन्नत) के पूर्व हिस्से में, ईश्वर द्वारा बनाया गया ४ (स्केवर) कोस का एक बहुत बड़ा जंगल था। (तीन किलोमीटर का एक कोस होता है) अपनी पत्नी (हव्वा) को देखने की बेताबी से आदम गुनाह वाले वृक्ष के नीचे गए। तभी सांप की शक्ल बनाकर वहाँ कली (शैतान) प्रकट हुआ। उस चालाक दुश्मन के ज़रिए आदम और हव्वावती ठग लिए गए और उस विषवृक्ष के फल को आदम ने खा लिया और उन्होंने विष्णु (ईश्वर) के हुक्म को तोड़ डाला। परिणाम स्वरुप उनको पृथ्वीं पर भेज दिया गया। उन दोनों को बहुत सी औलादें हुई। आदम की उम्र ९३० साल थी। (YeefJe<Ùe hegjeCe)

● यही बात क़ुरआन में भी लिखी है और बाइबल में भी।

● सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) में पैग़म्बरों को मनु कहा जाता है। हिन्दू धर्म के ग्रंथों में चौदह मनु का जिक्र हैं। हज़रत आदम पहले मनु हैं। और सातवें मनु के युग में बाढ़ आयी थी। और उन्होंने ही मनुस्मृति लिखी है।

सभी मानवजाति हज़रत आदम (अ.स.) की ही संतान हैं। इसको ऋग्वेद में ऐसे कहा गया है;

● जन मनुजात। ($e+iJeso 1:45:1)

सब मनु की संतानें हैं। (मनु हज़रत आदम (अ.स.) को कहा गया है।)

इसी बात को पवित्र क़ुरआन में इस तरह कहा गया है; ''लोगो, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया।'' (]kegâjDeeve 49:13)

तो हज़रत आदम (अ.स.) हमारे, आपके, हज़रत मुहम्मद (स.) और सभी के सबसे पहले पूर्वज हैं।

हज़रत नूह (अ.स.) (मनु) :-

● मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण में है, कि मनु के काल (युग) में एक बहुत बड़ी बाढ़ (Flood) आयी थी। जिसमें केवल मनु और एक ईश्वर को मानने वाले लोगों को छोड़कर सभी लोग इस बाढ़ में डूबकर मर गए थे।

नूह (मनु) ने अपने हाथों से एक नाव बनायी थी और उसमें वह खुद सवार हुए और एक ईश्वर को मानने वालों को सवार कर लिया और हर प्रकार के प्राणियों के दो-दो जोड़ों को

सवार कर लिया। यही लोग जिंदा बचे और सारी दुनिया इस सैलाब (बाढ़) में डूब गयी।

यही बात क़ुरआन में भी लिखी है (पवित्र क़ुरआन ११-२५-४८) यही बात बाइबल में भी लिखी है। (pesefveefmeme 6-8)

हज़रत नूह (मनु) हज़रत आदम (अ.स.) के नवे वंशज हैं। इन दोनों के बीच जो लोग हैं उनके नाम इस प्रकार हैं।

आदम-शीश-अनुश-कैनन-महलैल-यारीद-अंकुश (इडविल) -मुटू शल्क- लूनिक-नूह

(www.wikipedia.org)

नूह या मनु हमारे आपके हज़रत मुहम्मद (स.) और सभी लोगों के दूसरे प्रसिद्ध पूर्वज हैं।

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) (अबीराम) :-

● एक ईश्वर को लोग अनेक नामों से याद करते हैं, जैसे; अल्लाह, मालिक, रहीम, रहमान इत्यादि। वास्तव में ईश्वर के कुल १०० नाम हैं। इसमें से कुछ नाम उसके विशेष गुणों के लिए हैं। जैसे; खालिक़ अर्थात पैदा करने वाला (ईश्वर)। क्योंकि ईश्वर के अलावा और कोई दूसरा पैदा करने वाला नहीं है। मालिक यानी (Owner) ईश्वर के अलावा इस संसार का और कोई मालिक नहीं है। इस लिए यह भी ईश्वर का विशेष नाम है।

● लेकिन ईश्वर के कुछ ऐसे नाम भी हैं, जो उसकी स्वभाव (Features) के अनुसार हैं। जैसे रहीम, अर्थात अत्याधीक दया करने वाला। 'गफूर' अर्थात क्षमा करने वाला।

कभी-कभी ईश्वर अपने उन नामों से जो उसके गुणों के अनुसार है, उन पैग़म्बरों को भी याद करता है, जिनमें वह गुण है। जैसा कि पवित्र क़ुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.) को रहीम और ग़फूर के नाम से याद किया है। (पवित्र क़ुरआन ९:१२८) क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत ही दयालु और क्षमा करने वाले थे।

इसी प्रकार हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में ईश्वर ने बहुत से पैग़म्बरों को अपने ही नामों से याद किया है, उदाहरणत: हरिवंश पुराण में उल्लेख है कि ब्रह्मा ने अपने शरीर के दो भाग किए। एक भाग पुरुष का तथा दूसरा भाग स्त्री का बन गया।

इसी प्रकार की बात हदीस और बाइबल में भी है, कि हज़रत आदम (अ.स.) के शरीर के बायीं ओर (Left side) से हज़रत हव्वा (अ.स.) को पैदा किया गया।

तो हरिवंश पुराण में जिसे ब्रह्मा कहा गया है, वह वास्तव में ईश्वर स्वयं नहीं, हज़रत आदम (अ.स.) हैं।

इसी प्रकार अथर्ववेद में हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को ब्रह्मा कहा गया है, और लिखा है कि ब्रह्मा (अ.स.) ने अपने पुत्र अथर्वा की बलि (क़ुर्बानी) दी। यही बात पवित्र क़ुरआन में है, कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अ.स.) की क़ुर्बानी दी थी। (पवित्र क़ुरआन३७-१०५) और इसी प्रकार बाइबल में भी हज़रत इब्राहीम (अ.स.) के द्वारा किए गए क़ुर्बानी का वर्णन है (Genesis-22)। तो अथर्ववेद में जिसे ब्रह्मा कहा गया है वह स्वयं ईश्वर नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) हैं। हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को यहूदी, इसाई और मुसलमान सभी एक महान पैग़म्बर मानते हैं और हज़रत इब्राहीम (अ.स.) हज़रत मुहम्मद (स.) के पूर्वज भी हैं।

● हज़रत इब्राहीम (अ.स.) मनु के दसवें

वंशज हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं।

नूह-साम-अरफकशद-शालीख-अबीर-फालिख-अब्रागु-शाहरु-ताहरु-तारीह (अझहूर)-इब्राहीम (www.wikipedia.org)

हज़रत इस्माईल (अ.स.) (अथर्वा) :-

● अथर्ववेद में जो ब्रह्मा (हज़रत इब्राहीम) का अपने बेटे अथर्वा (हज़रत इस्माईल) की कुर्बानी देने का वर्णन है उसे पुरुष मेधा कहा गया है। पुरुष मेधा के दो श्लोक इस प्रकार हैं,

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत् ।
मस्तिश्कादूर्ध्व पैरयत् पवमानोधि शीर्शत:
तद् वा अथर्वरा: शिरो देवकोश: समुब्जित:
तत् प्रारो अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मन:
(अथर्ववेद १०:२:२६)

आखरी श्लोक का अर्थ है, ब्रह्मा ने जहाँ अथर्वा की कुर्बानी देनी चाही, वहाँ फरिश्ते रहते हैं, और ईश्वर उसकी रक्षा करता है।

ऊपर दिए गए अथर्ववेद के श्लोक में जिसे अथर्वा कहा गया है उनको अरबी भाषा में हज़रत इस्माईल कहा जाता है और वह हज़रत मुहम्मद (स.) के ६१ वे वंशज हैं।

● हज़रत मुहम्मद (स.) और अथर्वा (हज़रत इस्माईल) के बीच जो प्रसिद्ध लोग गुजरे है केवल उनके नाम इस प्रकार हैं।

(अथर्वा)इस्माईल-सबाफ-यासाब-नाकर-अदनान-माअद-नाजर-नासर-इल्यास-कनाना-नफ्र-मालिक-फिक्र-गालिब-लोवई-काब-मुरा-खिलाब-कोसाय-अब्द मनाफ-हाशिम-अब्दुल मुत्तलिब- अब्दुल्लाह-पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद)
(www.victorynewsmagazine.com/Ancestryofprophetmuhammeds.htm)

मक्का के निवासियों की विशेषता :-

● आज भारत में व्यापार की दुनिया में मारवाडी समुदाय का राज है। राजस्थान में न वर्षा है न खेती बाड़ी। होना तो यह चाहिए था की वहाँ के लोग भूखे मरते, मगर वहाँ के लोग तो देश पर राज करते हैं। ऐसा क्यों?

क्योंकि उनके पूर्वज कभी गरीब किसान न थे। किसान आसमान देखता रहता है। वर्षा हुई तो पेट भरा, वरना भूखे जीवन गुज़ारते रहता है। मगर राजस्थान के लोग जिनका वर्षा से कोई लेना देना नहीं है वह अपने बाजुओं की ताकत से रोटी कमाते रहे। बुद्धी का प्रयोग करते रहे और व्यापार और सेना में बहुत उन्नति करके जीवित रहे।

● ईश्वर ने अपने घर (काबा) को धरती के केंद्र पर बनाया है। और वहाँ का वातावरण रेगिस्तान से भी ज़्यादा कठिन (सख्त) कर दिया है। वहाँ खेती बाडी की कोई संभावना ही नहीं। और न किसी मानसिक गुलाम और गरीब किसान के वहाँ बसने की कोई संभावना है।

इसलिए जो भी मक्का में बसे वह मारवाड़ियों से अधिक व्यापारी और राजपूतों से अधिक बहादुर हुए। क्योंकि वहाँ जीवित रहना राजस्थान से अधिक कठिन था।

मक्का शहर कैसे बसा?

● जब हज़रत इस्माईल (अथर्वा) का जन्म हुआ तो हज़रत इब्राहीम (अबिराम-ब्रह्मा) ने हज़रत इस्माईल और उनकी माता हज़रत हाजरा (रजि.) को ले जा कर काबा शरीफ के पास बसा दिया। और ईश्वर ने चमत्कारी रुप से काबा शरीफ के पास एक ऐसा झरना (Spring) जारी कर दिया कि उसका पानी जिस उद्देश्य से पिया जाए वह वैसा फल देता है। इस झरने को 'ज़मज़म' कहते हैं। अगर कोई इसे भूख मिटाने कि नीयत से पीये तो पेट भर

जाता है। बीमारी अच्छी होने की नीयत से पीये तो बीमारी दूर हो जाती है। हाजी हज से आते समय यह पानी जरुर लाते हैं और उपहार के तौर पर मित्रों में बांटते हैं। तो इसी चमत्कारी आबे ज़मज़म के कारण दूर-दूर से कबीले आते गए और मक्का शहर बसता गया। हज़रत मुहम्मद (स.) के समय इस शहर की जनसंख्या लगभग ६० हज़ार थी।

● काबा को फरिश्तों ने धरती पर बहुत पहले बनाया था, मगर यह मनु (हज़रत नूह) के जमाने में आए बाढ़ में गिर गया था।

● जब हज़रत इस्माईल (अथर्वा) बड़े हुए तो हज़रत इब्राहीम (अ.स.) और हज़रत इस्माईल (अ.स.) ने मिल कर इसको फिर बना दिया। तबसे हज़रत इस्माईल (अ.स.) और उनके वंशज ही इसके विश्वस्त (Trustee) रहे।

● काबा को हज़रत इस्माईल (अ.स.) (अथर्वा) और हज़रत इब्राहीम ने फिर से बनाया था इसलिए अथर्ववेद में काबा की प्रशंसा में पांच श्लोक हैं (१०-२-२९ से ३३ तक) उसमें से एक इस प्रकार है।

तस्मिन हिररायये कोशे त्र यरे त्रिप्रतिष्ठते
तस्मिन यद यक्षमात्मन्वत तद वै ब्रह्मविदो विदुः

(...१०:२:३२)

● अर्थात प्रा... र के घर में तीन स्तं... न बीम (Beam) हैं ... का केंद्र है। ईश्वर की प्राथना करन वाल इस बात को जानते हैं।

ऊपर का चित्र काबा शरीफ के अंदर का है। इस में आप तीन स्तंभ और तीन बीम देख सकते हैं। (इंटरनेट पर भी यह चित्र खोजा और देखा जा सकता है।)

Inside view

(www.yo... Link http://youtu.be ...र काबा शरीफ के अन्दर ... सकते हैं, इसमें तीन स्तंभ ...

● पदम पुराण में काबा शरीफ को आदिपुष्कर तीर्थ कहा गया है और उसमें लिखा है की, "सभी तीर्थों में आदिपुष्कर तीर्थ सबसे प्राचीन तीर्थ है।"

(पदम पुराण, कल्याण, ऑक्टोबर १९४४, पेज नं ९६, गोरखपूर से प्रकाशित)

● हज़रत इस्माईल (अ.स.) के देहांत के बाद जैसे काल व्यतीत हुआ लोगों ने एक ईश्वर को छोड़ कर अनेक देवी देवताओं को पूजने लगे। काबा शरीफ के अंदर ३६० मूर्तियाँ रखी हुई थीं। लोगों के ऐसे पापों से नाराज़ होकर ईश्वर ने अपनी कृपा उनसे हटा ली और ज़मज़म का चमत्कारी कुआँ सूख गया। और एक लंबी मुददत तक सूखा रहा और उसके निशान भी मिट गए।

हज़रत मुहम्मद (स.) के दादा :-

हज़रत मुहम्मद (स.) के दादा का नाम आमिर था। मगर आप अब्दुल मुत्तलिब के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप बहुत ही समझदार, दानी और आकर्षक व्यक्तित्व वाले इन्सान थे। आप अपने कबीले के सरदार थे और हज के लिए मक्का आने वाले हाजियों के खाने-पीने का इन्तेजाम करते थे। आप एक अल्लाह को मानने वाले थे। रमज़ान के महीने में हिरा गुफा में एक महीने तक एक अल्लाह की इबादत

(प्रार्थना) करते रहते। और वापस आकर गरीबों को खाना खिलाते।

काबा शरीफ के पास जो ज़मज़म का चमत्कारी कुआँ था। और लोगों के मूर्ति पूजा से क्रोधित होकर ईश्वर ने जिसका पानी सुखा दिया। कुछ समय बाद वह कुआँ पट कर धरती के बराबर हो गया।

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने अपने पुरखों से इस चमत्कारी ज़मज़म के कुएं के बारे में सुना था। और आप चाहते थे कि अल्लाह उनपर फिर कृपा करे और ज़मज़म का पानी फिर प्रदान करे।

एक रात अल्लाह ने उन्हें सपने में वह जगह बता दी जहाँ जमजम का कुआँ था। मगर उस समय वह दो मूर्ति 'इस्नाफ' और 'नाइला' के बीच था। और वहाँ बली के ऊंट कुर्बान होते थे। इसलिए लोगों ने इस जगह को खोदना बुरा समझा और आप की कोई मदद न की।

मजबूरन हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बड़े बेटे हारिस के साथ वह जगह खोदा और ज़मज़म का पानी निकल आया।

इस ज़मज़म की खोज से आप का सम्मान और बढ़ गया।

जब लोगों ने हज़रत मुत्तलिब का कुआं खोदने में मदद नहीं किया और आप को अपने एकलौते बेटे के साथ कुआं खोदना पड़ा, तो आप ने अल्लाह से दस बेटों के लिए दुआ किया। और यह मन्नत मांगा की अगर उनके दस बेटे जवान हुए तो एक बेटे को अल्लाह के राह में कुर्बान करेंगे।

अल्लाह ने आप को दस बेटे दिए। जब वह जवान हुए तो नाम की पर्ची अर्थात कुरा अंदाज़ी द्वारा कुर्बान होने वाले बेटे का नाम निकाला गया। तो हज़रत अब्दुल्ला का नाम निकला। हज़रत अब्दुल्ला सबसे छोटे बेटे थे, और हर तरह से अपने भाइयों में सबसे अच्छे और चहीते थे। बहनों ने रो रोकर बाप पर कुर्बानी न करने का दबाव डाला।

विद्वानों से जब इस समस्या का उपाय पूछा गया तो उन्होंने कहा की हज़रत अब्दुल्ला और कुर्बानी के लिए दस ऊंट इनके बीच नाम की पर्ची डालकर नाम निकालो। अगर अब्दुल्ला का फिर से कुर्बानी के लिए नाम आए तो कुर्बानी के ऊंटों की संख्या बढ़ाते जाओ।

इस तरह कई बार नाम निकाला गया आखिर १०० ऊंटों की कुर्बानी पर हज़रत अब्दुल्ला का नाम नहीं आया और उनकी जान बच गई।

यही हज़रत अब्दुल्ला जिनको हज़रत इस्माईल (अ.स.) (या अथर्वा) की तरह कुर्बान होना था हज़रत मुहम्मद (स.) के पिताश्री हैं।

हज़रत अब्दुल्ला नेक बाप के नेक बेटे थे। बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व था। माथे से पवित्रता की ज्योती निकलती थी। जिसे देख कर एक ज्योतिषी महिला ने (उम्में कताल बिन नोफी) आप से विवाह करना चाहा। मगर हज़रत अब्दुल मुत्तलीब ने आप की शादी मदीना के आदरणीय कबीले बनु जोहरा के सरदार वहब बिन अबद मुनाफ की बेटी हज़रत आमना से कर दिया।

उस समय हज़रत अब्दुल्ला २५ वर्ष और हज़रत आमना २० वर्ष की थीं।

शादी के बाद हज़रत अब्दुल्ला तीन दिन मदीना रहे फिर कुछ महीने मक्का में अपने घर पर हज़रत आमना के साथ रहे। उन्हीं दिनों एक काफिला (Carvan) व्यापार के लिए शाम (Syria) जा रहा था। हज़रत अब्दुल्ला भी उन्हीं के साथ व्यापार के लिए शाम गए। वापसी में मदीना के पास तबीयत खराब हुई। आप मदीना में अपने ननिहाल (बनी अदद बीन नज्जार) में ठहर गए और एक महीना बीमार रहने के बाद आप का देहांत हो गया।

हज़रत अब्दुल्ला के देहांत के सात महीने बाद हज़रत मुहम्मद (स.) 20/22 अप्रेल 570 AD

२. हज़रत मुहम्मद (स.) का परिवार

- हज़रत मुहम्मद (स.) के नौ चाचा थे।

१) हारिस २) कसम ३) अबूलहब ४) हज़रत अबूतालिब ५) हज़रत अब्बास ६) हज़रत हमज़ा ७) ज़ुबैर ८) मकुम ९) साफर/गीदाक

n]pejle Deyet leeefueye: उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) को अपने बच्चे जैसा पाला और आप (स.) के ५० वर्ष की आयु तक आप (स.) की मक्का वालों से रक्षा करते रहे।

n]pejle Deyyeeme: आप हज़रत मुहम्मद (स.) को बहुत चाहते थे, मगर बहुत देर से मुसलमान हुए। आप बहुत अमीर थे। आप Financer थे। हज़रत मुहम्मद (स.) के देहांत के बहुत दिन बाद जो अब्बासी खानदान के बहुत सारे खलिफा हुए वह आप की संतानों की संतान थे।

n]pejle nce]pee: यह हज़रत मुहम्मद (स.) के चाचा थे मगर लगभग एक ही आयु के थे। आप बहुत बहादुर थे। आप जंगे उहद में शहीद हो गए थे।

Deyetuenye: यह बहुत आकर्षक व्यक्तित्व वाला था। हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म की खुशखबरी देने वाली दासी को खुश होकर आज़ाद कर दिया। मगर आप (स.) के पैग़म्बरी के बाद यह आपका सबसे बड़ा दुश्मन हो गया।

बाकी पांच चाचाओं ने भी इस्लाम स्वीकार नहीं किया था।

- हज़रत मुहम्मद (स.) के तीन बेटे और चार बेटियाँ पैदा हुईं। तीनों बेटों का बचपन में ही देहांत हो गया था। इन सात सन्तानों में से छह हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से पैदा हुए। और सब से छोटे बेटे हज़रत इब्राहीम हज़रत मारया (रज़ि.) से मदीना में पैदा हुए थे। तीन बेटों के नाम इस तरह हैं। १) हज़रत क़ासिम २) हज़रत अब्दुल्ला (ताहीर/तय्यब) ३) हज़रत इब्राहीम.

- चारों बेटियों का नाम इस तरह है;

१) हज़रत जैनब (रज़ि.) २) हज़रत रुक़ैया (रज़ि.) ३) हज़रत उम्मे कुलसूम (रज़ि.) ४) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.)

हज़रत जैनब (रज़ि.) :-

हज़रत जैनब (रज़ि.) सबसे बड़ी बेटी थीं। आप का ब्याह आप के खाला के बेटे हज़रत अबुल आस से हुआ था। आप की दो संताने थीं। बेटे हज़रत अली बिन अबुल आस (रज़ि.) और बेटी हज़रत उमामा बिन्ते अबुल आस (रज़ि.)। मक्का से मदीना जाते समय अबू जहल के बेटे अकरमा ने आप के ऊंट को जख्मी कर दिया। आप ऊंट से नीचे गिरीं और घायल हो गईं। उस समय आप गर्भवती थीं। उसी दुर्घटना के कारण कुछ वर्ष बाद आप का देहांत हो गया।

हज़रत रुक़ैया (रज़ि.) :-

हज़रत रुक़ैया (रज़ि.) हज़रत जैनब (रज़ि.) से छोटी थीं। आप का विवाह पहले अबू लहब के बेटे उतबा से हुआ (बिदाई नहीं हुई थी)। इस्लाम के दुश्मनी में अबू लहब ने यह रिश्ता तोड़ दिया, तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने आप का विवाह

हज़रत उस्मान (रज़ि.) से कर दिया। आप ने पहले हज़रत उस्मान (रज़ि.) के साथ हब्शा (इथोपिया) हिजरत किया। फिर मदीना आ गईं। आप का एक बेटा था जिनका नाम अब्दुल्ला था। छह वर्ष की आयु में अब्दुल्ला का देहांत हो गया। 624 AD में हज़रत रुक़ैया (रज़ि.) का भी चेचक की बीमारी में देहांत हो गया।

हज़रत उम्मे कुलसूम (रजि.) :-

आप हज़रत रुक़ैया (रज़ि.) से छोटी थीं। आप का भी अबू लहब के दूसरे बेटे अतीबा से विवाह हुआ था (बिदाई नहीं हुई थी) और अबू लहब ने दुश्मनी में यह रिश्ता भी तुड़वा दिया था।

जब हज़रत रुक़ैया (रज़ि.) का देहांत हुआ तो हज़रत उस्मान (रज़ि.) बहुत उदास रहने लगे थे। हज़रत उस्मान (रज़ि.) बहुत ही नेक, शर्मीले और उन लोगों में से थे जिनको धरती पर ही जन्नत की खुशखबरी मिल गई थी। आप ने हज़रत रुक़ैया (रज़ि.) का बहुत ख्याल रखा था। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत उम्मे कुलसूम (रज़ि.) का विवाह भी हज़रत उस्मान (रज़ि.) से कर दिया। विवाह के छह वर्ष बाद (631 AD) आप का भी देहांत हो गया। आप को कोई संतान न थी।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) :-

आप हज़रत मुहम्मद (स.) की सबसे छोटी बेटी थीं। 624 AD में आप का विवाह हज़रत अली (रज़ि.) से हुआ। आप की छह संताने हुईं जिनमें से दो का बचपन में देहांत हो गया। जो चार जीवित रहे वह बहुत प्रसिद्ध हुए, उनके नाम इस तरह हैं।

१) हज़रत हसन बिन अली

२) हज़रत हुसैन बिन अली

३) हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्ते अली

४) हज़रत जैनब बिन्ते अली

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का देहांत 633 AD में हो गया।

● हज़रत मुहम्मद (स.) का पहला विवाह हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से २५ वर्ष की आयु में (596 AD) में हुआ था। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) का देहांत 618 AD में हुआ। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के देहांत के बाद आप (स.) ने अपनी कमसिन बेटियों की देखभाल के लिए हज़रत सौदा (रज़ि.) से विवाह किया था। विवाह के समय हज़रत सौदा (रज़ि.) बहुत अधिक आयु की थी। आप का कद लम्बा और वज़न ज़्यादा था। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के देहांत के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) चार वर्ष तक केवल एक पत्नी (हज़रत सौदा (रज़ि.) के साथ रहे।

● हज़रत सौदा (रज़ि.) के बाद आप ने विभिन्न कारणों से जिन महिलाओं से विवाह किए उनके नाम इस तरह हैं।

३) हज़रत आयशा (रज़ि.) ४) हज़रत हफ्सा (रज़ि.) ५) हज़रत जैनब बिन्ते खज़िमा (रज़ि.) ६) हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ७) हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि.) ८) हज़रत जैनब बिन्ते हजश (रज़ि.) ९) हज़रत जुवैरिया (रज़ि.) १०) हज़रत सूफिया (रज़ि.) ११) हज़रत रेहाना (रज़ि.) १२) हज़रत मैमूना (रज़ि.).

● हज़रत ज़ैद (रज़ि.) गुलाम थे। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनको आज़ाद करने के बाद अपना बेटा बना लिया था। आप 'ज़ैद बिन मुहम्मद' के नाम से पुकारे जाते। मगर ईश्वर ने असली बाप की जगह दूसरों का नाम लगाने से मना किया तो आप 'ज़ैद बिन हारिस' के नाम से पहचाने जाने लगे। उनका एक बेटा था जिसका नाम उसामा था। हज़रत मुहम्मद (स.) इन दोनों बाप बेटों से बहुत मुहब्बत करते थे। और यह

३. हज़रत मुहम्मद (स.) का पैग़म्बरी से पहले का जीवन

• इस जमाने में बच्चों को बोर्डिंग स्कूलों में अच्छी पढ़ाई के लिए डाला जाता है। १४०० वर्ष पहले अरब देश में छोटे बच्चों को देहातों में भेजा जाता था। ताकि बच्चा साफ सुथरे माहौल में रहे। भाषा अच्छी हो। बच्चा मेहनती और बहादुर बने।

इसलिए चार महीने की आयु से पांच वर्ष की आयु तक हज़रत मुहम्मद (me.) हज़रत हलीमा (jefpe.) के पास देहात में रहे।

• जब आप (me.) छह वर्ष के थे तब आप (me.) की माता हज़रत आमना (jef]pe.) आप (me.) को लेकर अपने मायके मदीना गईं। आप वहाँ एक महीने रहीं, फिर मक्का वापस आते समय अबुवा के पास आप बीमार हो गईं और वहीं आप का 577 AD में देहांत हो गया। आप की खादिमा (Maid) उम्में ऐमन (jef]pe.) जो आप के साथ थीं वह हज़रत मुहम्मद (me.) को लेकर मक्का आ गईं और आप (me.) keâes Deehe (me.) kesâ oeoe n]pejle Deyogue cegòeefueye keâes meeQhe efoÙee~

• आप के दादा आप को बहुत चाहते थे। उन्होंने आप की बहुत प्यार और मुहब्बत से परवरिश की, मगर जब आप (स.) आठ वर्ष के थे तो उनका भी 579 AD ceW देहांत हो गया।

• अपने देहांत से पहले उन्होंने आप (स.) को आप (स.) के सगे चाचा हज़रत अबू तालिब को सौंप दिया। हज़रत अबू तालिब भी आप को जी जान से ज़्यादा चाहते थे। और चालीस वर्ष तक आप (स.) की देखभाल और रक्षा करते रहे।

• हज़रत अबू तालिब व्यापारी थे। आप का शाम और मक्का के बीच गेंहूँ और इत्र (Perfume) का व्यापार था। हज़रत मुहम्मद (स.) ने आप ही से व्यापार की कला सीखी और २५ वर्ष की आयु में ही साझेदारी (Partnership) में आप (स.) भी अपना व्यापार करने लगे।

• हज़रत अबू तालिब का परिवार बड़ा था। खर्चे ज़्यादा थे, इसलिए वह आप (स.) को कारोबार के लिए अधिक पूंजी न दे सके। इसलिए आप (स.) साझेदारी में व्यापार करते रहे। मेहनत और भागदौड़ आप (स.) की रहती और पूंजी किसी और का। और नफ़ा दोनों बांट लेते।

आप (स.) स्वभाविक रुप से ईमानदार, सच्चे और वादे के पक्के थे। इसलिए लोग आप को अमीन (सच्चा) पुकारते। और खुद आप (स.) से साझेदारी के इच्छुक रहते।

• हज़रत ख़दीजा (रजि.) एक इन्तेहाई पाक दामन (Pious) समझदार और दौलतमंद (Rich) महिला थीं। वह खुद तो व्यापारिक

सफर नहीं करतीं, मगर लोगों को पूंजी देकर साझेदारी में व्यापार करतीं।

जब उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) के ईमानदारी, सच्चाई और समझदारी का चर्चा सुना तो आप (स.) को भी व्यापार का सामान देकर अपने ग़ुलाम मैसरा के साथ शाम (Syria) भेजा। आप (स.) का यह व्यापारिक सफर बहुत लाभदायक रहा, और हज़रत ख़दीजा (jef]pe.) को अपेक्षा से अधिक लाभ हुआ।

● हज़रत मुहम्मद (me.) के बारे में साधारण लोग इतना तो जानते थे कि आप (स.) इन्तेहाई पवित्र, सच्चे, इमानदार, वादे के पक्के हैं। इसलिए वह लोग आपको सादिक और अमीन (सच्चा) कह कर पुकारते। मगर जो लोग आप (स.) के साथ दिन रात रहते थे, वह यह अनुभव भी करते थे कि आप (स.) के साथ बहुत विचित्र घटनाएँ भी होती हैं। जैसे अगर आप (स.) किसी पेड़ के नीचे बैठ जाएँ और अगर आप पर धूप आती हो तो उस पेड़ की डालें अपने आप ऐसे मुड़ जातीं कि आप पर साया हो जाता। जब आप (स.) तपती धूप में रेगिस्तान में चल रहे हों तो कोई अदृश्य शक्ती आप (स.) के सर पर साया किए रहती। आप (स.) के पसीने में दुर्गंध नहीं था। इत्यादि।

हज़रत ख़दीजा (jef]pe.) के गुलाम मैसरा ने यह सारी बातें हज़रत ख़दीजा (jef]pe.) को बताई दी।

● हज़रत ख़दीजा (jef]pe.) सिर्फ ४० वर्ष की थीं, मगर इतनी कम उमर में भी तीन बार विधवा हो चुकी थीं। और आप के जीवन में एक खालीपन था। हज़रत मुहम्मद (me.) की सच्चाई, ईमानदारी, आदरनीय खानदान, और दैविक सुरक्षा को देखा तो फिर एक बार आप के मन में एक खुशहाल और सम्पूर्ण जीवन के सपने जागे और आपने अपनी सहेली नफीसा द्वारा हज़रत मुहम्मद (me.) को विवाह का पैगाम भेजा। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के पिता का भी देहांत हो गया था, इसलिए उनके चाचा उमरो बिन असद, हज़रत मुहम्मद (स.) के चाचा हज़रत अबूतालिब और हज़रत हमज़ा ने आपस के सलाह मशवरे से आप दोनों का निकाह (595 AD) ceW कर दिया।

● इस के बाद आप (me.) १५ वर्ष तक लोगों के बीच एक अच्छे पती, अच्छे पिता और समाज के दु:ख सुख की चिंता करने वाले एक आदर्श पुरुष की तरह रहे। और पैग़म्बरों को एक आदर्श पुरुष के रुप में समाज में एक लंबे समय तक रखने की अल्लाह की यह एक परंपरा है।

इसका फायदा यह है कि जब भी वह आदर्श पुरुष कहता है कि में अल्लाह का पैगम्बर हूँ, तो लोग जानते हैं कि इसने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला है, इसलिए यह आज भी सच ही कह रहा है। जब पैग़म्बर कहता है कि असहाय की सहायता करो, तो लोग यह नहीं कह सकते कि खुद तो इसने ४० साल तक लोगों के साथ अन्याय किया और अब हमें न्याय का पाठ पढ़ा रहा है। अर्थात् वह पैग़म्बर को, उसके वंश को, उसके आचरण को, या उसकी हर चीज को अच्छी तरह जानते हैं। और उसको न मानने के लिए उसमें कोई दोष नहीं निकाल सकते हैं।

ऐसा ही हज़रत मुहम्मद (me.) के साथ हुआ। मक्का के निवासियों ने उनकी शिक्षा को अहंकार, घमंड, दुराधर्मी, ज़िद में आकर

४. हज़रत मुहम्मद (स.) का पैग़म्बरी के बाद का जीवन

३७ वर्ष की आयु से ४० वर्ष की आयु तक हज़रत मुहम्मद (स.) सच्चे सपने देखते। आप (स.) का मन लोगों से दूर अकेले में एक ईश्वर की याद में मग्न रहने की चाह करता। और आप (स.) घर से खाने पीने का कई दिनों का सामान लेकर पहाड़ के शिखर पर एक हिरा नाम के गुफा में चले जाते और अल्लाह को याद करते रहते।

(मक्का के लोग एक अल्लाह को मानते थे मगर साथ में बहुत सारे देवी देवता की पूजा भी करते। धरती पर इस मूर्ति पूजा को रोकने के लिए ही अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (स.) को पैग़म्बर बनाया था।)

इसी हिरा गुफा में ईश्वर की याद करते समय हज़रत मुहम्मद (me.) को ईश्वर ने हज़रत जिब्रईल (अ.स.) द्वारा ४० वर्ष की आयु में यह बताया कि आप (स.) एक पैग़म्बर हैं, और आप को लोगों का मार्गदर्शन करना है। हज़रत मुहम्मद (स.) ४० वर्ष की आयु से ६३ वर्ष की आयु तक अर्थात २३ वर्ष तक ईश्वर का संदेश लोगों तक पहुँचाते रहे।

२३ वर्ष का यह वह काल है जिसमें बहुत सारे लोग आप (स.) को समझने में ग़लती करते हैं। आप (स.) के जीवन को अच्छी तरह समझने के लिए मैं सारांश में आप (स.) को उनके पैगंबरी के २३ वर्ष के जीवन के बारे में बताने का प्रयास करता हूँ।

● ४० वर्ष की आयु में ईश्वर ने आप (स.) को क़ुरआन का ज्ञान देना शुरु किया। और अगले २३ वर्ष तक देते रहे।

पहले तीन वर्ष तक आप को केवल अपने दोस्तों और रिश्तेदारों में ही धर्म के प्रचार की अनुमति थी। इस तीन वर्ष के धर्म प्रचार से केवल ४० लोग मुसलमान हुए थे।

● चौथे वर्ष (614 AD) ceW आप को साधारण जनता में धर्म का प्रचार करने का आदेश मिला। मूर्ति पूजा न करने की शिक्षा लोगों को पसंद नहीं आयी, और सारा शहर आप का दुश्मन बन गया।

● पांचवे वर्ष से १३ वर्ष तक आप मक्का में ही रहे। मगर आप के मानने वालों को बहुत यातनाएँ दी जाती रहीं, इसलिए वह सब मक्का शहर छोड़कर चले गए। उन सब की संख्या लगभग ८० थी।

● हज़रत मुहम्मद (स.) का कबीला बहुत आदरणीय और शक्तिशाली था। आप (स.) के कबीले के बहुत सारे लोग मुसलमान नहीं हुए, थे फिर भी वह आप की रक्षा करते। जब मक्का वालों को हज़रत मुहम्मद (स.) को परेशान करने का अवसर न मिला तो उन्होंने आप (स.) के पूरे कबीले का Oct 615 AD से Sep 618 AD तक सामाजिक बहिष्कार कर दिया। यह तीन वर्ष आप (स.) के पूरे कबीले के लिए बहुत कठिन था।

● तीन वर्ष बाद सामाजिक बहिष्कार खत्म हुआ मगर इसी वर्ष (618 AD) ceW Deehe keâer DeeojCeerrÙe helveer n]pejle]Keoerrpee (रज़ि.) Deewj Deehe kesâ efØeÙe ÛeeÙee n]pejle Deyet leeefueye keâe osneble nes

ieÙee~

• हज़रत अबू तालिब के बाद आप (me.) kesâ keâyeerues keâe mejoej Deyet uenye ngDee~ Ùen Deehe (me.) keâe hekeäkeâe ogMceve Lee~ Fmeves Deheves keâyeerues Éeje Deehe (me.) keâer megj#ee mes Fvkeâej keâj efoÙee~ Deewj Deehe (me.) hej cegmeeryeleeW kessâ henelÌ[štš helÌ[s~

• cekeäkeâe mes efvejeMe neskeâj Deehe ves (June 619 AD keâes) cekeäkeâe kesâ heeme ner otmejs Menj leeS]heâ keâe meheâj efkeâÙee Deewj JeneB kesâ mejoejeW keâes F&MJej keâe hewieece osvee Ûeene~ ceiej Gve ueesieeW ves Deehe (me.) kesâ meeLe yengle ogJÙe&Jenej efkeâÙee~ Deewj Deehe (me.) keâes Fleves helLej ceejs efkeâ Deehe pe]KceeW mes Ûetj nes ieS~

• पत्नी और चाचा का देहांत। मक्का का हर व्यक्ति आप का दुश्मन। ताएफ़ में असफलता, इन कारणों से आप (स.) बहुत दु:खी रहने लगे, तो अल्लाह ने हज़रत जिब्रईल (अ.स.) द्वारा आप को (July 620 AD की) एक रात, पहले 'बुर्राक' (एक दैविक घोड़ा) पर सवार करके मक्का से येरुसलेम (इस्राईल) ले गये। वहाँ आप (स.) ने धरती पर पहले आ चुके सभी पैग़म्बरों को नमाज़ पढ़ाया। फिर वहाँ से अल्लाह ने आसमान पर बुलाकर स्वर्ग लोक का सैर कराया। आप (स.) ने मरने के बाद जो होना है वह अपनी आंखो से देखा। इससे आप का मनोबल और बढ़ा और आप की निराशा कम हो गई।

• अरब के लोग मूर्ति पूजा तो करते थे। मगर वह इस सत्य को जानते थे कि इस सृष्टि का रचयिता केवल अल्लाह है। और जो हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने हज का पैगाम दिया था उसके मुताबिक वह हज भी करते।

हज के अवसर पर सारे अरब से लोग मक्का में जमा होते तो इस अवसर पर हज़रत मुहम्मद (me.) उनको अल्लाह के सच्चे धर्म के बारे में बताते। यहूदी और ईसाइयों के धर्म ग्रंथों में एक पैग़म्बर आने वाला है, ऐसी भविष्यवाणी थी और वह उस पैग़म्बर की राह देख रहे थे। और वह अरबों को धमकी देते कि उस पैग़म्बर के आने के बाद हम और शक्तिशाली हो जाएंगे और तुम सब को पराजित कर देंगे।

FmeefueS Dejye JeeefmeÙeeW keâes Yeer helee Lee keâer Skeâ hew]iecyej Deeves Jeeuee nw~ 620 AD ceW kegâÚ ceoervee kesâ neefpeÙeeW ves peye n]pejle cegncceo (me.) keâer yeele keâes megvee lees Jen henÛeeve ieS efkeâ Ùener Jen hew]iecyej nw efpemekesâ Deeves keâer ÛeÛee& Ùentoer Deewj F&meeF& keâjles Les~ GvneWves meesÛee efkeâ Fmekesâ henues Ùentoer Fve hej

F&ceeve ueeÙeW, nce F&ceeve ueeles nQ Deewj Jen meye cegmeueceeve nes ieS~ Ùen Ûn (6) ueesie Les~ Deieues meeue 621 AD ceW Jen npe hej Deheves meeLe Deewj ueesie ueeS, Jen Yeer cegmeueceeve nes ieS~ Fmeer lejn 622 AD keâes npe kesâ DeJemej hej ceoervee kesâ 75 ueesie cegmeueceeve ngS~ GvneWves n]pejle cegncceo (me.) mes]kegâjDeeve meerKeeves kesâ efueS Skeâ efMe#ekeâ ceebiee~ Deehe (me.) ves n]pejle cegmewye efyeve Gcewj (jef]pe.) keâes Gvekesâ meeLe keâj efoÙee~ n]pejle cegmesye (jef]pe.) ceoervee ieS, Deewj Deehe kesâ Oece& ØeÛeej mes ceoervee kesâ yengle meejs ueesie cegmeueceeve ngS~

• keâeyee Mejerheâ ceW 360 cetefle&Ùee jKeer ngF& LeeR~ efpemekesâ oMe&ve kesâ efueS meeue Yej ueesie Deeles jnles Deewj cekeäkeâe JeeueeW keâe JÙeeheej Ûeuelee jnlee~ Fmueece Oece& kesâ Deeles ner cetefle& hetpee Deewj cekeäkeâe JeeueeW keâe JÙeeheej yebo nes peelee~ FmeefueS peye cekeäkeâe kesâ ueesieeW keâes ceoervee ceW Fmueece kesâ hewâueves keâer Keyej ngF& lees Jen yengle ›eâesefOele ngS Deewj n]pejle cegncceo (me.) keâes ner Kelce keâj osves keâe hewâmeuee efkeâÙee~ peye Deehe (me.) keâes Gvekesâ FjeoeW keâe helee Ûeuee lees Deehe 12 Deewj 13 Sep 622 AD kesâ yeerÛe keâer jele keâes cekeäkeâe mes ceoervee Ûeues ieS~ Ùen hew]iecyejer keâe lesjnJeeB Je<e& Lee~ Fme lešvee keâes efnpejle keânles nQ Deewj Fmeer lešvee mes efn]pejer mebJele (meved) keâer Meg®Jeele nesleer nw~

• मक्का में हज़रत मुहम्मद (स.) और दो चार मुसलमानों को छोड़ कर सारे मूर्ति पूजा करने वाले थे। इसलिए मक्का में हज़रत मुहम्मद (स.) की सारी शिक्षा बहुत Basic होती। अर्थात इस संसार का रचयिता केवल एक ईश्वर है इसलिए उस एक ईश्वर को छोड़कर और किसी के सामने माथा मत टेको। मगर मदीना में बहुत सारे लोग मुसलमान हो गए थे और मुसलमान दूसरे शहरों से भी मदीना आकर शरण ले रहे थे, इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने पैग़म्बरी के चौदहवें वर्ष मदीना में कई मस्जिदें बनाई और एक इस्लामी समाज कायम किया। जब हज़रत मुहम्मद (स.) मदीने आ गए और वहाँ मुसलमानों की संख्या बढ़ने

लगी तो मक्का वालों ने मदीना से भी मुसलमानों का सफाया करने का ठान लिया। युद्ध के खर्च को पूरा करने के लिए उन्होंने ऐसी योजना बनाई कि मक्का शहर का हर व्यक्ति व्यापार में धन लगाए और उससे जो नफा हो उसे युद्ध के लिए दान करे।

पैग़म्बरी का १५ वा वर्ष

• cekeäkeâe Jeeues Meece (Syria) Deewj Ùeceve mes JÙeeheej keâjles Les~ ceoervee, cekeäkeâe Deewj Meece kesâ yeerÛe jemles ceW nw~ peye n]pejle cegncceo (me.) keâes Gvekesâ Ùeespevee keâe helee Ûeuee lees Fmemes henues efkeâ Jen Meece mes JÙeeheej keâjkesâ Oeve keâceeSB Deewj ceoerves hej Dee›eâceCe keâjW~ Deehe ves Gvekeâe Meece keâe jemlee yebo keâj osves keâer Ùeespevee yeveeF&, Fmemes cekeäkesâ JeeueeW keâes Yeer Snmeeme nes ieÙee efkeâ Deye Jes Meece mes megjef#ele JÙeeheej veneR keâj mekeâles nw~

• इसलिए शाम से आने वाले उनके एक व्यापारी काफिले को किसी भी खतरे से बचाने के लिए उन्होंने १३०० सैनिक भेज दिए।

जब वह काफिला सुरक्षित मदीना के पास से रास्ता बदल कर गुजर गया तो केवल ३०० सैनिक ही मक्का वापस हुए। और १००० सैनिकों का मदीना पर आक्रमण करने का इरादा था। हज़रत मुहम्मद ने केवल ३१३ साथियों से इनका बदर के मुकाम पर मुकाबला किया, और आप विजयी रहे। यह घटना पैग़म्बरी के १५ वें वर्ष में हुई।

पैग़म्बरी का सोलहवां वर्ष

• मक्का वालों ने युद्ध के लिए व्यापार से धन तो पहले से ही जमा कर लिया था और वह इस्लाम को तो पहले से ही मिटा देना चाहते थे। मगर अब उसके साथ बदर के मुकाम पर अपने पराजय का कलंक भी मिटाना था। इसलिए उन्होंने ३००० सैनिकों के साथ मदीना पर धावा बोल दिया। उहद के मुकाम पर मुसलमानों से उनका मुकाबला हुआ। मुसलमान विजयी होने के बाद अपने एक दस्ते से ग़लती हो जाने के कारण पराजित हुए और उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ा।

पैग़म्बरी का १८ वां वर्ष

• उहद के मुकाम पर मुसलमान पराजित हुए थे। मुसलमानों को पूरी तरह मिटाने के लिए मक्के वालों ने दो वर्ष बाद सारे अरब से १०,००० सैनिक लेकर मदीने पर टूट पड़े। मुसलमान सबका एक साथ मुकाबला नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने शहर की सीमा पर खाईं (Trench) खोदकर अपना बचाव किया।

Ùen Ùegæ Skeâ cenerves lekeâ Ûeuelee jne, ceiej Dee›eâceCekeâejer KeeFË heej veneR keâj heeS, Deewj DeeefKej ceW F&MJej ves DeebOeer letheâeve Yespe keâj Gvekesâ KesceW (Tent) GKeeÙ[efoS, Deewj Jen hejsMeeve neskeâj

Jeeheme Ûeues ieS~

अगर वह सफल होते तो न एक मुसलमान जिवित होता न अंतिम मशाल (पवित्र क़ुरआन) उज्वलित रहती।

यह घटना पैग़म्बरी के १८ वें वर्ष March 627 AD में हुई। इस युद्ध का भविष्यवाणिक वर्णन अथर्ववेद (२०:२१,६) में इस तरह है।

से त्रा अमदन तानि वृष्याया ते सोमासो वृत्रहत्येषु स्त्पतें
यत कारवे दश वृत्राायपति वर्हिष्मते नि सहस्रानि वर्हयः ॥६॥

(भावार्थ : सत्यवादी वीरों ने ईश्वर की प्रार्थना के गीत गाते हुए वीरता से दस हज़ार शत्रु की सेना को बगैर लड़े पराजित किया। Muhammed in world scripture by A.H. Vidyarthi, Page no. 118)

● जब सारा अरब एकजुट होकर मदीना पर आक्रमण की तैयारी कर रहा था तो हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके साथियों को इसका ज्ञान था। मगर वह असहाय थे। वह अरब देश के हर ठिकानों पर जाकर उन्हें नहीं रोक सकते थे। इसलिए खाईं खोद कर अपना बचाव किया। इस बार तो वह किसी तरह बच गए। मगर हो सकता है दूसरी बार दुश्मन और अधिक संख्या में आक्रमण करे, और फिर खाईं खोद कर भी बचाव न हो पाए। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने ऐसी नीति अपनाई कि जैसे ही कहीं सैनिकों के एकजुट होने की खबर पाते तो तुरंत अपने साथियों को भेज कर उन्हें तितरबितर कर देते। और ऐसा बहुत बार हुआ।

पैग़म्बरी का १९ वां वर्ष

● एक रात हज़रत मुहम्मद (स.) ने सपना देखा कि आप (स.) उमरा कर रहे हैं। उमरा में काबा शरीफ, सफा-मरवा का परिक्रमा किया जाता है और सर के बाल मुँडाए जाते हैं।

जब आप (स.) ने अपने साथियों से इस सपने की चर्चा की, तो सबके दिल अपने पुराने शहर मक्का और ईश्वर के घर को देखने के लिए तड़प उठे।

● हज़रत मुहम्मद (स.) और १४०० लोगों ने उमरा के इरादे से मदीना से मक्का प्रस्थान किया। मगर मक्का वालों ने उन्हें मक्का शहर में प्रवेश करने कि आज्ञा न दी, और युद्ध पर उतारु हो गए। बहुत चर्चा के बाद दोनों पक्ष एक शांति संधि पर सहमत हुए। इसे सुलह हुदेबिया के नाम से याद किया जाता है।

इस संधि में इस बात को माना गया था कि दोनों पक्ष एक दूसरे से और एक दूसरे के मित्र कबीलों से, भी युद्ध नहीं करगें, और हज़रत मुहम्मद (स.) अगले वर्ष उमरा के लिए आएं (इस वर्ष नहीं।)

(यह घटना पैग़म्बरी के १९ वें साल हुई।)

पैग़म्बरी का २० वां वर्ष

● यहूदी अरब देश में बहुत मालदार और पढ़े लिखे थे। वह अपने आप को अरबों से बहुत महान समझते थे। मगर जब से अरब में इस्लाम आया उनका बड़ापन खतम हो गया। इसलिए वह मुसलमानों से बहुत नफरत करते थे। और अरबों को मुसलमानों के खिलाफ उकसाते रहते थे। अरबों को उनके षड़यंत्रों से सुरक्षित करने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हीं १४०० उमरावाले साथियों के साथ यहूदियों के खैबर के मुकाम पर जो दुर्ग थे उनको घेर लिया। वह बीस हज़ार थे, मगर बहुत कम लड़े। उन्होंने हार मान ली, और एक शांन्ति संधि पर हस्ताक्षर कर दिए।

संधि के बाद उन लोगों ने मुसलमानों को खाने की दावत पर बुलाया। और खाने में जहर मिला दिया।

हज़रत मुहम्मद (स.) के एक साथी ने एक निवाला निगल लिया और उनकी मृत्यु हो गई। हज़रत मुहम्मद (स.) ने निवाला मुंह में रखकर थूक दिया। मगर फिर भी जहर का कुछ असर आप (स.) पर हो गया। आप (स.) अगले पांच वर्ष जीवित रहे मगर कभी कभी आप (स.) उस ज़हर के असर से बीमार पड़ जाते और अंत में इसी ज़हर के असर से आप (स.) का इन्तक़ाल (देहांत) हो गया। (mener yegKeejer Vol-2, Page-695, No-1554)

यह घटना पैग़म्बरी के २० वें वर्ष घटी।

● मक्का शहर वाले हज़रत मुहम्मद (स.) को हमेशा परेशान किए रहते थे, और एक तरह से सरदर्द बने रहते थे। उनसे हुदेबिया के मुकाम पर शांति संधि होने के बाद एक शांती का वातावरण हो गया। तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने अरब देश से बाहर के राजाओं को धर्म प्रचार हेतु पत्र लिखना शुरु किया। आप ने रोम, ईरान, मिस्र (Egypt), इथोपिया, यमन और शाम के राजाओं को पत्र भेजा।

रोम के राजा ने आप को पैग़म्बर माना मगर मुसलमान न हुआ। ईरान का राजा बहुत नाराज़ हुआ और आप के पत्र को फाड़ डाला। मिस्र के राजा ने आप के पत्र ले जाने वाले का बहुत आदर सत्कार किया और उपहार के साथ वापस भेजा।

यमन के राजा ने लिखा कि अगर आप राजपाट में मुझे साझीदार करो तो ही में इस्लाम कुबूल करुँगा। इस्लाम राजपाट के लिए अवतरित नहीं हुआ है, इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने इन्कार कर दिया।

इथोपिया के राजा ने आप के सफीर (संदेशवाहक) का बहुत आदर किया और ईमान कुबूल करके मुसलमान हो गया।

शाम के सीमा पर शरजील बिन उमरु नाम का सरदार राज करता था। यह रुमियों के मातहत था। यह हज़रत मुहम्मद (स.) का पत्र पढ़कर बहुत नाराज हुआ। आप के सफीर को कत्ल कर दिया और मदीना पर आक्रमण की तैयारी का आदेश दे दिया।

● शरजील बिन उमरु से निपटने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने ३००० सैनिक भेजे। मगर शरजील पहले से ही आक्रमण की तैयारी कर रहा था इसलिए उसने २ लाख सैनिक जमा कर लिए।

दो लाख सेना के सामने केवल ३००० मुसलमान थे। मगर उन्होंने हिम्मत न हारी और युद्ध शुरु हो गया। मुसलमानों के तीन सेनापति एक एक करके शहीद हो गए। दूसरे दिन खालिद बिन वलीद सेना पती बने। उन्होंने ३००० की सेना को ऐसे खड़ा किया कि वह कल के घायल सैनिक नहीं बल्कि अभी आए हुए नये सैनिक नजर आते थे। फिर अपनी सेना को धीरे धीरे पीछे हटाना शुरु किया। रुमी समझे कि यह मुसलमानों की चाल है, वह हमें रेगिस्तान में ले जाकर लड़ना चाहते हैं। तो उन्होंने पीछा नहीं किया, और मुसलमानों की यह सेना सुरक्षित वापस आ गई। यह घटना मुअत्ता के मुकाम पर घटी थी। और आज भी वहाँ शहीदों के स्मारक हैं।

hew]iecyejer keâe 21 Jeeb Je<e& (630 AD)

● मक्का के निवासियों से तो शान्ति संधि थी मगर वह इस संधि का पालन नहीं करते थे। मक्का शहर को ईश्वर ने शान्ति और सबके लिए शरण का शहर बनाया है। इस शहर में पेढ़-पौधे काटना यहां तक कि पशु-पक्षी बिना कारण मारना भी मना है। वहां किसी प्रकार का कोई उपद्रव नहीं होना चाहिए। अर्थात् मक्का

एक शान्ति और शरण का शहर है। मगर मक्का के निवासियों ने ऐसे किसी धार्मिक नियम का पालन नहीं किया और न उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) से किए अपने शान्ति संधि का लेहाज़ रखा। और हज़रत मुहम्मद (स.) के मित्र कबीलों के वह लोग जो मक्का आए हुए थे उन सब को काबा शरीफ के सामने कत्ल कर दिया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने पैगाम भेजा कि या तो कत्ल का जुर्माना दो या शान्ति संधि भंग कर दो। तो मक्का वालों ने घमंड में आकर शान्ति संधि को भंग कर दिया।

● शान्ति संधि भंग होने के बाद अब फिर मक्का वालों के आक्रमण का खतरा था। इस से पहले वह आक्रमण करते हज़रत मुहम्मद (स.) खुद दस हज़ार की सेना लेकर मक्का शहर को घेर लिया।

मक्का वाले इस आक्रमण के लिए बिल्कुल तैयार न थे, और न वह सशस्त्र थे। इसलिए बिना लड़े अपनी हार स्वीकार कर ली। यह घटना पैग़म्बरी के २१ वें वर्ष घटी।

● मक्का वालों ने २१ वर्ष तक हज़रत मुहम्मद (स.) पर तरह तरह के अत्याचार किए। कत्ल करने की कोशिश की। मुसलमानों को यातनाएं दीं। तीन बार मदीना पर आक्रमण किया। उनके मुसलमानों के प्रति अनगिनत अपराध थे। मगर जब हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन पर पूरी तरह कब्ज़ा कर लिया तो सबको क्षमा कर दिया। इस क्षमा और दयालुता से वह इतने प्रभावित हुए कि पूरे शहर ने इस्लाम धर्म कुबूल कर लिया।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ दस हजार सैनिक थे। और उन्होंने विजय प्राप्त करने के बाद किसी को नुकसान नहीं पहुँचाया इसलिए अथर्ववेद की भविष्यवाणी में इन्हें गाय के नाम से याद किया गया था। वह श्लोक इस तरह है,

एश इशाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सस्त्रादश गोनाम॥

भावार्थ:- ईश्वर मामहे ऋषी को १०० हार, १० स्वर्ण मुद्रा, ३०० घोड़े और १०००० गायें देगा।

इस श्लोक में १०० हार 'असहाबे सुफ्फा' को कहा गया है। १० स्वर्ण मुद्रा 'अश्र-ए-मुबश्शरा' (वह दस लोग जिनको धरती पर स्वर्ग मिलने की खुशखबरी मिली थी।) को कहा गया है। ३०० घोड़े उन सैनिकों को कहा गया है जो पहले युद्ध में बदर के मुकाम पर लड़े थे। और १०,००० गायें यही सैनिक हैं जिन्होंने किसी को नुकसान नहीं पहुचाया जिनका व्यवहार गाय की तरह था।

त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः।
षष्टिं सहसा।
नवर्ति नव श्रुतो नि चक्रेरा रथ्या दुष्पदावृराक ॥९॥

दूसरे श्लोक में कहा गया कि ईश्वर आप (स.) को ६०,०९९ दुश्मनों से बचाएगा। तो यह ६०,०९९ दुश्मन यही मक्का के निवासी थे। (उस समय मक्का की आबादी तकरीबन ६०,००० थी।)

(Mohammed in world Scriptures, Page No.127-Atherva ved- 20: 21-3)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने अचानक मक्का शहर को घेरा था। इसलिए मक्का निवासी युद्ध की तैयारी न कर सके और पराजित हुए। मगर आस पास के कबीलें मक्का शहर पर आक्रमण से सावधान हो गए। उनको युद्ध की तैयारी का समय मिल गया था। इसलिए उन्होंने १२,००० सैनिकों की सेना तैयार कर ली और मुकाबले के लिए निकल पड़े।

● हुनैन के मुकाम पर हज़रत मुहम्मद (स.) के साथियों से मुकाबला हुआ। हमलावर बहुत बहादुरी से लड़े मगर अंत में पराजित हुए।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें पराजित करने और सब को बंदी बनाने के बाद फिर सबको क्षमा कर दिया और आज़ाद कर दिया। क्योंकि ईश्वर ने अपने पैगम्बर को सारी दुनिया के लिए दयालु (Blessing of Mankind) बना कर भेजा था।

इस दयालुता और उदारता ने उनका भी मन मोह लिया और वह सब भी मुसलमान हो गए।

इस तरह सारे अरब देश से इस्लाम का विरोध करने वालों का खात्मा हो गया।

hew]iecyejer keâe 22 Jeeb Je<e

● जब रोम ने देखा कि सारा अरब क्षेत्र मुसलमान हो गया है तो उन्हें खतरा महसूस होने लगा। और उन्होंने एक बड़े युद्ध की तैयारी शुरु कर दी। और सीमा पर सैनिक जमा होना शुरु हो गए।

जब हज़रत मुहम्मद (स.) को इस बात की सूचना मिली तो इससे पहले की वह आक्रमण करते आप (स.) खुद ३०००० हजार की सेना लेकर १००० किलोमीटर का सफर करके उनके द्वार पर पहुँच गए।

रोम की २ लाख की सेना मुअत्ता के मुकाम पर ३००० मुसलमानों की सेना से लड़ चुकी थी। और वह जानते थे कि केवल ३००० भी २ लाख की सेना से टकराने से नहीं डरे और एक दिन युद्ध करके ही पीछे हटे। अब तो वह तीस हजार हैं और उनका पैग़म्बर भी उनके साथ है। तो उनमें मुकाबले कि हिम्मत न हुई और वह आस पास के गांव में भाग कर छुप गए। हज़रत मुहम्मद (स.) एक महीने तबूक के मुकाम पर उनका इन्तेज़ार करते रहे और बिना लड़े वापस आ गए।

यह घटना पैग़म्बरी के २२ वें वर्ष घटी।

इस तरह अरब देश में पूरी तरह शान्ति हो गई और अधिक तर लोगों ने इस्लाम धर्म अपना लिया।

पैग़म्बरी का २३ वां वर्ष

● अल्लाह ने पैग़म्बरी के २२ वें वर्ष ही मुसलमानों पर हज फर्ज़ कर दिया था। मगर हज़रत मुहम्मद (स.) किसी कारण हज न कर सके। इसलिए पैग़म्बरी के २३ वें वर्ष आप ने हज पर जाने की घोषणा की। आप से हज सीखने और आप के साथ हज का सौभाग्यपूर्ण अवसर का लाभ उठाने के लिए अरब देश से एक लाख चालीस हजार लोग मक्का में जमा हो गए। और आप के साथ हज किया।

आप (स.) ने हज के अवसर पर जो भाषण दिया वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने लायक है। उस भाषण के मुख्य उपदेश हम ७ वें अध्याय में लिखेंगे।

● मक्का आप का जन्म स्थान था। आप मक्का शहर से बेपनाह प्रेम करते थे। हज से वापसी में मक्का छोड़ते समय आप बहुत दु:खी थे और आप के आखों से आसू बह रहे थे।

● मदीना आने के ७५ दिन बाद आप को सरदर्द और बुखार हो गया। यह वही ज़हर का असर था जो आप (स.) को यहूदियों ने दिया था। आप १५ दिन बीमार रहे और ८ जून (632 AD) को आपका इन्तकाल (देहांत) हो गया।

● आप (स.) इस धरती पर ६३ वर्ष रहे। आप के जीवन का अध्ययन किया जाए तो हम महसूस करते हैं कि सुख के कुछ वर्ष जो आप को मिले वह पैग़म्बरी की ज़िम्मेदारी मिलने के पहले के ही कुछ वर्ष हैं। उन वर्षों को अगर छोड़ दें तो आप का सारा जीवन एक निरंतर संघर्ष की कथा है।

● जन्म के पहले पिता का देहांत हुआ। छह वर्ष की आयु में माता का देहांत हुआ। ८ वर्ष

५. हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में विद्वानों के विचार

महर्षि व्यासजी की भविष्यवाणी

महर्षि श्री वेद व्यासजी हिंदु धर्म के सबसे बड़े विद्वान हैं। महाभारत आप ही ने लिखा है। श्री कृष्ण जी के आदेश जो उन्होंने अर्जुन को दिए थे उनको भी पुस्तक के रुप में आप ही ने लिखा है। इसी पुस्तक को गीता कहते हैं। चारों वेदों में ऋचा और सुक्त की तरतीब आप ही ने दी है। आप ने १७ पुराण लिखे हैं। उनमें से एक पुराण का नाम भविष्य पुराण है। विद्वान मानते हैं कि भविष्य पुराण के बोल (ज्ञान) ईश्वरीय हैं। केवल लिखा श्री व्यासजी ने है।

श्री व्यासजी आज से ४००० वर्ष पहले गुज़रे हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) आज से १४०० वर्ष पहले गुज़रे हैं। श्री व्यासजी ने हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म के २६०० वर्ष पहले ही उनकी भविष्यवाणी भविष्यपुराण में लिख दिया था।

भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व ३, अध्याय ३, खंड ३, कलियुगी इतिहास समुच्चय में २७ श्लोक इस्लाम धर्म और हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में हैं। उन भविष्यवाणियों का सारांश निम्नलिखित है;

- भारत वर्ष में धर्म की शिक्षा लोग भूल जाएंगे।
- भारत से दूर अरब देश (रेगिस्तान) में मुहम्मद (स.) पैदा होंगे।
- ईश्वर उन्हें ब्रह्मा की पदवी देगा और वह मानवजाति को फिर से धर्म की शिक्षा देंगे।
- भारत में आर्य धर्म का सुधार होगा और सारे लोग मुसलमान हो जाएंगे।
- श्री व्यासजी ने महान आचार्य हज़रत मुहम्मद (स.) के चरणों में शरण लेने की इच्छा व्यक्त की है।

भविष्यपुराण के कई श्लोकों में हज़रत मुहम्मद (स.) के नाम के साथ भविष्यवाणी की गई है उनमें से कुछ श्लोक निम्नलिखित हैं;

एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येरा समन्वितः।
महामद इति रव्यात शिष्यशाखासमन्वितः।।५।।

अयोनिः स वरो मत्तः प्राप्तवान्दैत्यवर्द्धनः ।
महामद इति ख्यात पैशाचकृनितत्पर।।१२।।

इति श्रुत्वा नृपश्चैव स्वदेशानपु नरागमनतः।
महामदश्च तैः सार्द्धे सिंधुतीरमुपाययौ।।१४।।

तच्छू त्वा कालिदासस्तु रुषा प्राह महामदम।
माया ते निर्मिता धूर्त नृपमोहनहेतवे ।।१८।।
विना कौलं च पशवस्तेषां भश्रया मता ममा
मुसलैनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति।।२६।।

(Ref. Muhammed in world Scripture by A.H.Vidyarthi. Page No. 35-43, Bhavishya puran printed by venkateshwar press-Mumbai)

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी की भविष्यवाणी

संग्राम पुराण की गणना पुराणों में की जाती है। इस पुराण का अनुवाद तुलसीदासजी ने किया है। इस पुराण में भी ईश्वर के अंतिम ईशदूत और पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स.) के आगमन की पूर्व-सूचना मिलती है। पंडित धर्मवीर उपाध्याय ने अपनी मशहूर किताब ''अंतिम ईश्वरदूत'' में संग्राम पुराण का अनुवाद इस तरह लिखा है :

यहां न पक्षपात कछु राखहुं।
वेद, पुराण, संत मत भाखहुं ।।
संवत विक्रम दोऊ अनङ्गा ।
महाकोक नस चतुर्पतङ्गा ।।
राजनीति भव प्रीति दिखावै।
आपन मत सबका समझावै।।
सुरन चतुसुदर सतचारी।
तिनको वंश भयो अति भारी।।
तब तक सुन्दर मद्दिकोया।
बिना महामद पार न होया।।
तबसे मानहु जन्तु भिखारी।
समरथ नाम एहि व्रतधारी।।
हर सुन्दर निर्माण न होई।
तुलसी वचन सत्य सच होई।।

(संग्राम पुराण, स्कन्द १२, कांड ६ : पद्यानुवाद, गोस्वामी तुलसीदास)

● पंडित धर्मवीर उपाध्याय ने इनका भावानुवाद इस प्रकार किया है- ''(तुलसीदासजी कहते हैं:) मैंने यहाँ किसी प्रकार का पक्षपात न करते हुए संतो, वेदों और पुराणों के मत को कहा है। सातवीं विक्रमी सदी में चारों सूर्यों के प्रकाश के साथ वह पैदा होगा। राज करने में जैसी परिस्थितियाँ हों, प्रेम से या सख्ती से वह अपना मत सभी को समझा सकेगा। उसके साथ चार देवता (प्रमुख सहयोगी) होंगे, जिनकी सहायता से उसके अनुयायियों की संख्या काफ़ी हो जाएगी। जब तक सुन्दर वाणी (क़ुरआन) धरती पर रहेगी (उसके) महामद (हज़रत मुहम्मद (स.)) के बिना मुक्ति (निजात) नहीं मिलेगी। इन्सान, भिखारी, कीड़े-मकोड़े और जानवर इस व्रतधारी का नाम लेते ही ईश्वर के भक्त हो जाएँगे। फिर कोई उसकी तरह का पैदा न होगा (अर्थात्, कोई रसूल नहीं आएगा) तुलसीदासजी ऐसा कहते हैं कि उनका वचन सत्य सिद्ध होगा।

● कोष्ठक में दिए गए शब्द व्याख्या के लिए लिखे हैं।

यहाँ एक और संदर्भ स्पष्ट करना प्रासंगिक होगा कि संग्राम पुराण की गणना भले ही अर्वाचीन पुराणों में की जाती हो, लेकिन इसका आधार प्राचीन हिन्दू धर्मग्रंथ ही हैं, जैसा कि अन्य पुराणों व ग्रथों एवं विचारों के आधार पर अर्थात भूतकालिक प्रमाणों की रौशनी में हज़रत मुहम्मद (स.) के आगमन की सूचना दी गई है। अत:पुराण के अर्वाचीन अथवा प्राचीन होने से संबधित तथ्य के निरुपण में कोई गतिरोध नहीं पैदा होता।

● ''अंतिम ईश्वरदूत'' यह किताब १९२७ में नेशनल प्रिंटींग प्रेस, दरियागंज, दिल्ली से सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी।

● ऊपर लिखी हुई सारी बातें हमने डा.एम.ए. श्रीवास्तव जी की पुस्तक हज़रत मुहम्मद (स.) और भारतीय धर्मग्रंथ' से ली है।

meble legkeâejece (१५७७-१६५०) यह महाराष्ट्र के एक महान संत हैं। आप देहू (पूने के करीब) पैदा हुए। आप समाज में गरीबों पर हो रहे अत्याचार के सख़्त खिलाफ़ थे। आप के लिखे हुए अभंग बहुत प्रसिद्ध हैं। उनमें से एक हम यहाँ लिख रहे हैं।

अल्ला देवे अल्ला दिलावे
अल्ला दारु (दाता)।
अल्ला खिलावे।
अल्लाबिगर नहीं कोय।
अल्ला करे सोहि होय।।

भावार्थ :- अल्लाह देता है। अल्लाह दिलाता है। अल्लाह खिलाता है। अल्लाह की आज्ञा के बिना कुछ नहीं हो सकता है। जो अल्लाह चाहता है वही होता है।

अव्वल नाम अल्ला बडा
लेते भूल न जाये।
इलाम त्याकालजमुपरताही तुंब बजाये।।१।।

भावार्थ:- सबसे पहला नाम अल्लाह का है जो महान है। उसका नाम लेना मत भूलो। उसकी तुंब बजाते हुए (यानी डंके की चोट पर) प्रार्थना करो।

अल्ला एक तुं
नबी एक तुं।
काटतें सिर पावों हातें
नहीं जीव डराये।।२।।

भावार्थ:- अल्लाह एक ही है। उसके नबी (आखरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स.)) भी एक ही हैं। अल्लाह और पैग़म्बर को मानने के बाद सत्य के मार्ग पर चलते समय सर पाँव कटने का भी डर नहीं रहता।

प्यार खुदाई प्यार खुदाई प्यार खुदाई।
प्यार खुदाई बाबा जिकिर खुदाई ।।२।।

भावार्थ:- (यह संसार ईश्वर का कुटुम्ब है इसलिए) लोगों से प्रेम करना यह ईश्वर के इच्छा के अनुसार है।

(अल्लाह ने मनुष्य को अपने प्रार्थना के लिए पैदा किया इसलिए) अल्लाह के नाम का जिक्र करना या जाप करना यह भी अल्लाह के ईच्छा अनुसार है।

अल्ला करे सो होय
बाबा करतारका सिरताज।
जिकर करो अल्लाकी
बाबा सबल्यां अंदर भेस।
कहे तुका जो नर
बुझे सो हि भया दरवेस।।३।।

भावार्थ:- अगर अल्लाह चाहे तो किसी भी व्यक्ति का आदर सर पर पहने जाने वाले मुकुट की तरह होता है। इसलिए (इस बात को समझो और) मन की गहराई से अल्लाह की प्रार्थना करो। और जो इस सत्य को जान लेता है वह ही ज्ञानी (दरवेश या संत) होता है।

बाट खाना
अल्लाह कहना एकबारा तो ही।
अपना नफा देख
कहे तुका सो ही सखा
हाक अल्ला एक ।। ६।।

भावार्थ:- अल्लाह ने जो दिया है उसमें से गरीबों को दान करो। और एक बार ही सही अल्लाह को याद तो करो।

तुकाराम महाराज जो आपके मित्र हैं, वह कहते हैं कि, अल्लाह एक है ऐसा (पुकारने) कहने में ही नफा (दोनों लोक की सफलता) है।

संदर्भ:- सार्थ श्री तुकारामाची गाथा
संपादक: विष्णुबुवा जोग महाराज पान नं. ८९२/८९३/८९४

महामति प्राणनाथी जी की शिक्षा

efnvogDeeW kesâ Jew<CeJe mecegoeÙe ceW ØeeCeveeLeer mecØeoeÙe GuuesKeveerÙe nw~ Fmekesâ mebmLeehekeâ SJeb ØeeJele&keâ ceneceefle ØeeCeveeLe Les~ pevce keâe veece cesnjece "ekegâj Lee~ ØeeCeveeLe peer keâe pevce 1618 F&. ceW iegpejele kesâ peeceveiej Menj ceW ngDee Lee~ Deeheves FvmeeveeW keâes Skeâ SskeâMJejJeeo keâer efMe#ee oer Deewj Skeâ ner efvejekeâej F&MJej keâer hetpee-Gheemevee hej yeue efoÙee~ Deeheves vegyetJJele DeLee&le F&MeotlelJe keâer OeejCee keâe meceLe&ve efkeâÙee Deewj Fmes mener "njeÙee~ ØeeCeveeLe peer keânles nQ-

कै बड़े कहे पैग़म्बर,

पर एक 'महामद' पर खतम।

अर्थात, धर्मग्रंथों में अनेकों पैग़म्बर को बड़ा कहा गया है। किन्तु मुहम्मद (स.) पर ईशदूतों की श्रृंखला समाप्त हुई। हज़रत मुहम्मद (स.) आखिरी पैग़म्बर हुए।

प्राणनाथ जी ने ... लिखा:

रसूल आवेगा तुम पर,
ले मेरा फुरमान।
आए मेरे अरस की,
देखी सब पहेचान।।

अर्थात्, (ईश्वर ने कहा:) मेरा रसूल हज़रत मुहम्मद (स.) तुम्हारे पास मेरा संदेश लेकर आएगा जिसमें मेरे अर्श (तख्त) की अच्छी तरह पहचाना हुआ है। अर्थात जो मेरे आदेशों और धर्म को अच्छी तरह जानता है।

(मारफत सागर, पृ. १९, श्री प्राणनाथ मिशन नई दिल्ली)

(हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ, डा. एम.ए.श्रीवास्तव)

अल्लोपनिषद के श्लोक

अदल्ला बुक मेककम
अल्लबूक निखादकम ।।४।।
इस श्लोक का अनुवाद नहीं हो सका।

अला यज्ञन हुत हुत्वा अल्ला सूर्य चंद्र सर्व नक्षत्रा।।५।।
अल्लाह की युगों युगों से प्रार्थना हो रही है, सूरज, चाँद और तारे सब अल्लाह की रचना है।

अल्लो ऋषीणां सर्व दिव्यां इन्द्राय पूर्व माया परमन्तरिक्षा।।६।।
अल्लाह सती का रक्षक है, वह सबसे महान है, अल्लाह सब वस्तुओं से और आसमान से अधिक विलक्षण (Mysterious) है।

अल्ल पृथिव्या अन्तरिक्षं विश्वरुपम् ।।७।।
अल्लाह का (उसकी शक्तिओं का) दर्शन पृथ्वी, आकाश और सौर्य मंडल की सभी वस्तुओं में होता है।

इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्ला ।।८।।
अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उस जैसा कोई नहीं।

ओम अल्ला इल्लला अनदि।
ऊँ (Om) अर्थात अल्लाह। हम उसका आरंभ और उसका अंत नहीं पता कर सकते। सारी बुराइयों से रक्षा करने के लिए हम ऐसे अल्लाह से प्रार्थना करते हैं।

दे स्वरुपाय अथर्वण श्यामा हुही जनान पशून सिद्धान।
जलवरान् अदृश्टं कुरु कुरु फट।

ऐ अल्लाह! बुरे, गुनाहगार, और लोगों को गुमराह करने वाले धार्मिक लोगों का नाश कर, और पानी के नुकसान पहुँचाने वाले किटाणुओं (Bacteria और Virus) से हमारी रक्षा कर।

असुरसंहारिणी हुं ही अल्लो रसूल महमदरकबरस्य अल्लो।
अल्लाह दानव शक्ति का नाश करने वाला है, मुहम्मद (स.) अल्लाह के पैगंबर हैं।

अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्ला।
अल्लाह तो अल्लाह ही है, उस जैसा कोई नहीं।
(अल्लोपनिषद ४-१०)

संत तुकडो जी महाराज

संत तुकडोजी महाराज (सन १९०९-१९६८) उनका जन्म यावली (महाराष्ट्र) में हुआ था। उन्होंने पारखेड ग्राम के समर्थ अडकोजी महाराज से आध्यात्मिक दिक्षा प्राप्त की थी। वह एक महान अध्यात्मिक संत थे। उन्होंने मराठी और हिन्दी भाषा में ३००० से अधिक भजन (अध्यात्मिक कविता) रची थी। उनके धार्मिक योगदान के लिए उन्हें डा. राजेंद्रप्रसाद (उस समय के राष्ट्रपति) द्वारा राष्टसंत यह पदवी मिली थी।

संत तुकडोजी महाराज की लिखी हुई एक मराठी भाषा की कविता इस तरह है;

मुहम्मदाने केली प्रार्थना।
विखुरला इस्लाम कराया शहाणा।।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने परिश्रम किया जिसके कारण इस्लाम विश्व में फैल गया और लोक जागृत (ज्ञानी) हो गए।

संघटित केले त्याने स्वजना
तया काळी।।९०।।
लोक प्रतिमापूजक नसावे।
त्यांनी एका ईश्वरासि प्रार्थावे।।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस समय के सभी लोगों को इस शिक्षा पर जमा (सहमत) किया कि मूर्ति पूजा न करो और केवल एक ईश्वर की प्रार्थना करो।

हा मुहम्मदांचा उपदेश।
नव्हे एकाच देशासाठी।।९।।

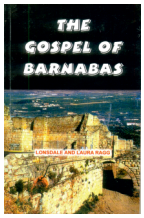

हज़रत मुहम्मद (स.) का यह उपदेश केवल अरब के लिए नहीं बल्कि सारे विश्व के लिए है।

राष्टसंत तुकडोजी महाराज विरचित ग्रामगीता: अध्याय क्र. २७, ओवी ९० पृष्ठ २९४ अध्याय क्र. २८, ओवी ९ पृष्ठ २९७

बाईबल में हज़रत मुहम्मद (स.) का उल्लेख :-

● हज़रत मुहम्मद (स.) केवल अरबों में धर्म का प्रचार करने या केवल मुसलमानों को मुक्ति दिलाने नहीं आए थे। बल्कि अल्लाह (ईश्वर) ने उन्हें सारी दुनिया के लिए भेजा था। और यही बात (Jesus Christ) हज़रत ईसा (अ.स) ने बरनाबास बाईबल में कहा था।

बरनाबास बाईबल क्या हैं?

● बाईबल कई तरह के हैं। पहले बाईबल को Old Testament कहते हैं। इसे ईश्वर ने हज़रत मूसा (अ.स.) पर अवतरित किया। यह हज़रत ईसा (अ.स.) के जन्म से पहले अवतरित हुआ था इसलिए इसमें हज़रत ईसा (अ.स.) के बारे में कुछ नहीं है। इस के बाद

Mark, Matthew, Luke और युहाना, इन चार लोगों ने हज़रत ईसा (अ.स.) के पृथ्वी से चले जाने के ७० वर्ष या उससे अधिक समय बाद जो हज़रत ईसा (अ.स.) की जीवन कथा लिखा वह 'बाईबल' कहलाता है। और उनकी लिखी हुई बाईबल उन चारों के नाम से है। फिर चारों बाईबल को एक पुस्तक बना दिया गया और New Testament नाम दिया गया। इन चारों बाईबल में हज़रत ईसा (अ.स.) को अल्लाह का बेटा कहा गया है। (ईश्वर हमें ऐसा कहने पर क्षमा करे।) छटे बाईबल को हजरत ईसा (अ.स.) के एक साथी (Apostle) बरनाबास ने लिखा था। मगर इस बाईबल में उन्होंने ईश्वर को एक और हज़रत ईसा (अ.स.) को पैग़म्बर बताया है। जो कि इसाई धर्म के शिक्षा के विरुद्ध है। इसलिए पोप Athanasins ने 367AD में, पोप Damasius ves 382AD में और Pop Gelasius ने 495AD में यानी हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म के ७५ वर्ष पहले इसे Apocryphal अर्थात् ग़लत घोषित किया। धर्म के विरुद्ध पुस्तक घर में रखना भी पाप समझा जाता और दण्ड दिया जाता था। इसलिए यह बाईबल १७०० वर्ष लोगों की नज़रों से छुपी रही। १७०९ में इसकी एक कॉपी Italian भाषा में ऐमस्टराडेम के एक लाईब्रेरी में मिली। अठरावीं शताब्दी के आरंभ में एक और कॉपी स्पॅनिश भाषा में मिडली के स्थान पर डॉ.महेलममेन को मिली। उसके बाद इसका फिर बहुत प्रचार, भाषांतर और छपाई हुई। इस बाईबल में केवल एक ईश्वर की प्रार्थना का उपदेश है और हज़रत मुहम्मद (स.) की स्पष्ट भविष्यवाणी है। इस बाईबल के कुछ अध्याय निम्नलिखित हैं;

बरनाबास बाईबल का अध्याय नं १२ :-

हज़रत ईसा (अ.स.) ने कहा हम ईश्वर के पवित्र नाम की प्रशंसा करते हैं, जिसने सभी महापुरुषों और पैगम्बरों के सरताज (हज़रत मुहम्मद) को सभी प्राणियों के पहले पैदा किया। ताकि उसे सभी लोगों के कल्याण (मुक्ति) के लिए भेजे।

(अध्याय १२ बरनाबास की बाईबल)

बरनाबास बाईबल का अध्याय नं ३९ :-

● जब ईश्वर ने मनुष्य (हज़रत आदम) के शरीर में आत्मा को प्रवेश कराया तो फरिश्तों ने (खुशी से) कहा ''ऐ हमारे ईश्वर! तेरा पवित्र नाम महान है।''

जब आदम खड़े हुए तो उन्होंने हवा में सूर्य की तरह उज्जवलित एक लेख देखा जिसमें लिखा था। ''ईश्वर एक है और मुहम्मद ईश्वर के पैग़म्बर हैं।''

आदम ने ईश्वर से कहा ''ऐ मेरे मालिक! मेरे खुदा, मुझे इस लेख का अर्थ बता। क्या मुझसे पहले भी तूने किसी मनुष्य को बनाया है?'' तब ईश्वर ने कहा, ''ऐ मेरे बन्दे आदम! मैं तुझे बताता हूँ की तुम ही पहले मनुष्य हो जिसे मैंने बनाया है। और जिसका नाम तूने लिखा देखा वह तेरा बेटा है। जो पृथ्वी पर बहुत वर्ष बाद आएगा। वह मेरा पैग़म्बर होगा। उसी के लिए मैंने इस सृष्टि का निर्माण किया है। जब वह आएगा तो विश्व को प्रकाशित करेगा। उसकी आत्मा मैंने इस सृष्टि को बनाने के साठ हज़ार वर्ष पूर्व बनाया था और अपने दैविक खज़ाने में रखा था। (DeOÙeeÙe 39 yejveeyeeme keâer yeeF&yeue)

बरनाबास बाईबल का अध्याय नं ४४ :

● हज़रत ईसा (अ.स.) ने कहा मैं तुमसे कहता हूँ कि यह रसूल (हज़रत मुहम्मद (स.)) ईश्वर की एक शान (Splendor) है। जो उन सभी को प्रसन्नता (मुक्ति) प्रदान करेंगे जिनको

ईश्वर ने बनाया है। क्योंकि ईश्वर ने उन्हें बुद्धि, शक्ति, न्याय, शराफत, धैर्य इत्यादि सभी प्राणियों से तीन गुना अधिक दिया है।

क्या ही शुभ दिन होगा वह जब हज़रत मुहम्मद (स.) पृथ्वी पर जन्म लेंगे। मेरा विश्वास करो मैंने उन्हें देखा है और उनका आदर-सन्मान किया है। जैसे हर पैग़म्बर उन्हें देखते हैं। क्योंकि उन्हीं की आत्मा से ईश्वर ने सभी को पैग़म्बरी दी है। जब मैंने उन्हें देखा तो यह कह कर के मेरी आत्मा संतुष्ट हो गई कि, ''ऐ मुहम्मद! ईश्वर तेरे साथ हो, और मुझे इस लायक बनाए कि मैं तेरे जूते का फीता बांध सकूं। क्योंकि ऐसा करके मैं एक बड़ा पैग़म्बर और ईश्वर का प्रिय हो जाऊँगा।''

ऐसा कहकर हज़रत ईसा (अ.स.) ने ईश्वर का आभार माना (शुक्र अदा किया)

(अध्याय ४४ बरनाबास की बाईबल)

बरनाबास बाईबल का अध्याय नं ९७/B :-

● तब पुरोहितों ने पूछा ''वह मसीहा किस नाम से जाना जाएगा और उसके आने की क्या निशानी है। हज़रत ईसा (अ.स.) ने कहा, ''उस मसीहा का नाम 'प्रशंसा के योग्य' होगा।''(इस नाम का अनुवाद संस्कृत में नराशंस और अरबी में मुहम्मद होता है) क्योंकि खुद ईश्वर ने उसका यह नाम उस समय रखा था जब ईश्वर ने उसे पैदा किया था और दैविक ख़जाने में रखा था।

(उसे पैदा करने के बाद) ईश्वर ने कहा, मुहम्मद प्रतिक्षा करो, क्योंकि मैं तेरे लिए स्वर्ग, धरती और अधिक संख्या में प्राणी पैदा करना चाहता हूँ, जिनको मैं उपहार में तुझे दूंगा। इनमें से जो तुझे शुभ कहेगा वह खुद भी शुभ होगा। और जो तुझे बुरा कहेगा वह खुद बुरा (प्रकोपित) होगा। जब मैं तुझे पृथ्वी पर भेजूंगा तो सबको मुक्ति दिलाने वाला पैग़म्बर बनाकर भेजूंगा। तेरा कथन (शिक्षा) इतना सच्चा होगा कि धरती आकाश जगह से हिल जायेंगे मगर तेरी शिक्षा (धर्म) न हिलेगी। ऐसे पवित्र अस्तित्व (पैग़म्बर) का नाम मुहम्मद है।

तब हज़रत ईसा (अ.स.) की सभा के सभी सदस्यों ने ऊँचे स्वर में कहा, ''हे ईश्वर हमारे पास अपना पैग़म्बर भेज। ऐ मुहम्मद! मानवजाति के उद्धार के लिए जल्दी आइए।

(अध्याय ९७/B बरनाबास की बाईबल)

सारांश:

● महर्षि श्री वेद व्यासजी जो कि महाभारत और सत्तरह (१७) पुराणों के लेखक हैं, और Jesus Christ (अ.स.) जिनके अनुयायी इस समय विश्व में सबसे अधिक हैं, इन दोनों और बड़े-बड़े पैगम्बरों और आचार्य ने ईश्वर से हज़रत मुहम्मद (स.) के अनुयायी बनने की इच्छा व्यक्त की थी। मगर उनकी इच्छा पूरी न हुई क्योंकि वह हज़रत मुहम्मद (स.) से पहले जन्में थे। यह हमारा सौभाग्य है कि हम उनके बाद पैदा हुए और हमें उनका अनुयायी बनने का अवसर मिला।

अगर हम उनको न पहचानें और उनके आदेशों को मानने से इन्कार करें, तो यह हमारा कितना बड़ा दुर्भाग्य होगा।

● हज़रत मुहम्मद (स.) और इस्लाम के बारे में जिन लोगों ने अपने नेक विचार व्यक्त किए हैं अगर हम उन सब की सूची बनाएँ तो वह इस पुस्तक से भी अधिक हो जाएंगे। इसलिए हम इस अध्याय का यही अंत करते हैं। आप ३० से अधिक गैर-मुस्लिम महापुरुषों के इस्लाम के प्रति नेक विचार निम्नलिखित पुस्तक में पढ़ सकते हैं। यह पुस्तक हमारी वेबसाईट www.freeeducation.co.in से भी मुफ्त पढ़ी और डाऊनलोड की जा सकती है।

६. हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण कैसे थे?

● किसी ने हज़रत आयशा (रज़ि.) से पूछा कि हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण कैसे थे? तो आप ने फ़रमाया आप (स.) का आचरण पवित्र क़ुरआन था। (noerme: cegefmuece)

अर्थात जैसे आचरण का आदेश ईश्वर ने मानवजाति को अपनाने के लिए पवित्र क़ुरआन में दिया था। हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण बिल्कुल वैसे ही थे।

● ईश्वर ने इन शब्दों में हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण की प्रशंसा की है,

''ऐ मुहम्मद आप के आचरण सर्वश्रेष्ठ हैं''
(heefJe$e]kegâjDeeve 68-4)

● हज़रत इमाम मालिक ने अपनी किताब मुअत्ता में लिखा है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया कि ईश्वर ने मानवजाति को सर्वश्रेष्ठ आचरण सिखाने के लिए ही मुझे पैग़म्बर बनाया है। (cegDeledlee)

हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत नम्र स्वभाव के थे।

● हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) की दस वर्ष सेवा की। मगर इस अवधि में आप (स.) ने मुझसे कभी कोई नाराज़गी वाला या डांट फटकार वाला वाक्य नहीं कहा। अगर मुझसे कोई ग़लती हो गई तो आप (स.) ने मुझसे कभी न पूछा कि यह ग़लती तुमने क्यों की? और जो काम मुझे करना चाहिए था अगर मैंने वह काम नहीं किया तो आप (स.) ने कभी मुझसे यह न पूछा कि आप ने यह काम क्यों नहीं किया? (yegKeejer, cegefmuece, peeosjen-314)

● हज़रत आयशा (रज़ि.) कहती हैं, ''हज़रत मुहम्मद (स.) ने कभी किसी को अपने हाथ से नहीं मारा। न किसी पत्नी को मारा न किसी नौकर को मारा, और न किसी और को। हाँ ईश्वर के आदेश अनुसार युद्ध करते हुए दुश्मनों को जरुर मारा। और आप (स.) को कष्ट पहुँचाने वालों से आप (स.) ने कभी बदला नहीं लिया।'' (cegefmuece, peeosjen-346)

हज़रत मुहम्मद (स.) की भाषा बहुत मधुर थी।

● n]pejle Deyoguuee efyeve Gce® efyeve Deeme (jef]pe.) keânles nQ efkeâ, n]pejle cegncceo (me.) ve lees yeo-efcepee]pe (Hot-Temper) Les Deewj ve ner yegjer yeeleW]peyeeve mes efvekeâeueles Les~
(yegKeejer, cegefmuece, peeosjen -74)

● आप (स.) अधिक समय चुप रहते।
(सूरह अल सना)

● जब भी आप (स.) बात करते तो ऐसे अंदाज़ से ठहर ठहर कर बात करते कि अगर कोई एक एक शब्द गिनना चाहे या लिखना

चाहे तो लिख ले।

(yegKeejer, cegefmuece, cee®hegâue noerme Vol-8, Page-238)

● आप (स.) ने जो वाक्य कहे वह साहित्यिक दृष्टिकोण से इतने अच्छे और परिपूर्ण थे कि आज भी लोग उनको दोहराते हैं। ऐसे वाक्यों के संग्रह का नाम 'जामिउलकलाम' है।

हज़रत मुहम्मद (स.) में बहुत आत्मसंयम था।

एक बार एक देहाती मदीना आया और हज़रत मुहम्मद (स.) की चादर (शाल जिसे आप (स.) ने ओढ़ रखा था) को पकड़ कर इतनी ज़ोर से खींचा कि आप (स.) की गर्दन पर रगड़ के निशान पड़ गए। और उसने कहा, ''ऐ मुहम्मद (स.) ईश्वर ने जो तुमको दिया है, उसमें से मुझे भी कुछ दे दो।'' उसके इस दुर्व्यवहार पर कोई भी उसे एक थप्पड़ मार सकता था। मगर आप (स.) ने संयम से काम लिया। आप (स.) केवल मुस्कुरा दिए और अपने साथियों को उसे कुछ अनाज देने के लिए कहा। (yegKeejer, cee®hegâue noerme, Vol-8-Page 232)

एक बार किसी ग़रीब मुसलमान की मदद के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक यहूदी से कुछ पैसे उधार लिये। और उसे अदा करने के लिए समय मांगा था। मगर वह यहूदी उस निश्चित समय से पहले ही अपना कर्ज मांगने आ गया। जब वह यहूदी अपना पैसा मांगने आया तो उस समय हज़रत मुहम्मद (स.) के पास देने के लिए कुछ न था। मगर यहूदी ने कहा कि मैं तो अपना पैसा लिए बगैर न जाऊंगा। इसलिए वह मस्जिद में ही बैठ गया। वह यहूदी दोपहर के पहले आया था और दूसरे दिन सुबह तक बैठा रहा। हज़रत मुहम्मद (स.) चूँकि उसके क़र्ज़दार थे। इसलिए आप (स.) भी लगातार उसके साथ मस्जिद में बैठे रहे। आप (स.) के साथी खुद वह क़र्ज़ा चुकाना चाहते थे मगर आप (स.) ने मना किया। आप (स.) के साथी उस यहूदी को वहाँ से चले जाने के लिए कहना चाहते थे। मगर आप (स.) ने किसी को उससे दुर्व्यवहार करने न दिया। उस यहूदी ने अपने धर्म ग्रंथ में पढ़ा था कि अंतिम पैग़म्बर में बहुत संयम और धीरज होगा। जब उसने अपनी आंखों से देख लिया तो कहा ''आप सच्चे पैग़म्बर हैं। मेरा सारा माल आप के चरणों में है। इसे आप (स.) जैसा चाहें ख़र्च करें। (efceMkeâele: cee®hegâue noerme, Vol-2, Page-109)

हज़रत मुहम्मद (स.) वादे के बहुत पक्के थे।

एक व्यापारिक सौदे में हज़रत मुहम्मद (स.) और एक यहूदी अब्दुल्लाह बिन अबील हामा ने वादा किया कि एक जगह मिलेंगे। निर्धारित समय पर हज़रत मुहम्मद (स.) उस जगह पहुंच गए, लेकिन यहूदी उस मुलाकात के वादे को भूल गया। हज़रत मुहम्मद (स.) तीन दिन तक वादे के अनुसार उस जगह पर खड़े रहे। तीसरे दिन यहूदी को अपनी मुलाक़ात का वादा याद आया और वह उस जगह दौड़ता हुआ पहुंचा और देखा कि हज़रत मुहम्मद (स.) उस जगह पर यहूदी की प्रतिक्षा कर रहे हैं। उसने अपनी ग़लती की माफ़ी मांगी। हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपनी नाराज़गी प्रकट करते हुए बस इतना फ़रमाया, ''तुमने मुझे बहुत कष्ट पहुंचाया क्यूंकि पिछले ३ दिनों से मैं तुम्हारा इंतेज़ार कर रहा हूँ।'' (efMeheâe, he=. 56)

ग़ैर मुस्लिमों से आप (स.) का व्यवहार

● एक बार हज़रत आसमा बिन्ते अबूबक़र (रज़ि.) की माँ जो की ग़ैरमुस्लिम थीं और मक्का में रहती थीं, आप से मिलने मदीना आईं। हज़रत आसमा (रज़ि.) ने हज़रत मुहम्मद

(स.) से पूछा मेरी माँ मुसलमान नहीं हैं मैं उनसे कैसा व्यवहार करुँ? आप (स.) ने कहा अच्छा व्यवहार करो, जैसे एक बेटी को माँ से करना चाहिए। हाँ अगर वह इस्लाम के विरुद्ध कहें तो कहना न मानना।

(बुखारी मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब, Vol-1-No-981)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि अगर कोई सत्ताधारी मुसलमान एक ग़ैर-मुस्लिम के साथ अन्याय करता है तो क़यामत के दिन ईश्वर के दरबार में मैं उस मुसलमान के खिलाफ़ और ग़ैर-मुस्लिम की तरफ से मुकदमा लड़ूंगा।

(अबू दाऊद, सफ़ीना निजात-१५१)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि जब किसी दूसरे समाज का कोई आदरणीय व्यक्ति तुम्हारे पास आए तो उसका आदर करो।

(जामिउल कलाम)

● हज़रत आयशा (रज़ि.) कहती हैं कि एक बार एक यहूदी हज़रत मुहम्मद (स.) से मिलने आया। आप (स.) ने उससे बहुत आदरपूर्वक बातचीत की। जब वह चला गया तो आप (स.) ने हज़रत आयशा (रजि.) से कहा ''यह व्यक्ति सज्जन नहीं था'' हज़रत आयशा (रजि.) ने आश्चर्य से पूछा कि फिर आप (स.) ने उससे इतना आदरपूर्वक बातचीत क्यों की? तो आप (स.) ने कहा, ''अल्लाह के नज़दीक सबसे बुरा व्यक्ति वह है जिसके दुर्व्यवहार के कारण लोग उससे दूर रहते हैं, और मैं ऐसा व्यक्ति बनना नहीं चाहता। (eflejefce&]peer, yewnkeâer)

● हज़रत मुहम्मद (स.) अपने घर से निकल कर जब काबा शरीफ नमाज़ पढ़ने जाते तो उस मुहल्ले की एक बुढ़िया जिसका घर रास्ते में था रोज आप के ऊपर घर का कचरा फेंकती।

फिर कुछ दिन तक आप (स.) पर कचरा नहीं फेंका गया, तो आप (स.) ने लोगों से इसका कारण पूछा। लोगों ने बताया कि वह बुढ़िया बीमार है और अपने बिस्तर पर पड़ी हैं। तो हज़रत मुहम्मद (स.) उसका हाल चाल पूछने उसके घर में गये। आप (स.) के इस स्वभाव को देखकर वह बहुत प्रभावित हुई और इस्लाम धर्म कुबूल कर लिया।

हज़रत मुहम्मद (स.) कट्टरवादी नहीं थे।

● हज़रत आयशा (रजि.) कहती हैं, कि हज़रत मुहम्मद (स.) अपने अनुयायियों के लिए आसानी चाहते थे। इसलिए जब दो कामों में से किसी एक को चुनना होता, तो अगर वह गुनाह न हो तो आसान काम ही चुनते।

(बुखारी, हदीसे नबवी पेज नं. ३१)

● हज़रत आयशा (रजि.) कहती हैं कि, हज़रत मुहम्मद (स.) मेरे कमरे में तशरीफ लाए तो एक महिला बैठी हुई थी। आप (स.) ने पूछा यह कौन हैं? मैंने कहा ''यह वही हैं जिन की नमाज़ प्रसिद्ध है'' (अर्थात वह साधारण लोगों से अधिक नमाज़ पढ़ती थीं) हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा ऐसा मत करो। तुम उतना ही करो जितना कर सकती हो। अल्लाह तआला पुण्य देने से नहीं उकताएगा, मगर तुम नमाज़ पढ़ने से उकता जाओगी। अल्लाह तआला को वही पसंद है जो तुम हमेशा कर सको। (yegKeejer, cegefmuece)

DeLee&led Deehe Deemeeveer Deewj ceOÙece (Middle path) ceeie& keâes DeefOekeâ hemebo keâjles Les~

● हजरत मुहम्मद (स. ने फ़रमाया धर्म को अपनी तरफ़ से कठिन बनाने वाले बरबाद (हलाक) हो गए। (cegefmuece,

efjÙeepegme mJeeuesnerve)

हज़रत मुहम्मद (स.) और उनका परिवार बहुत दानी था: -

● हज़रत सुहैल (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने देखा कि एक सहाबी ने वह चादर (शाल) आप (स.) से मांगी जिसे आप (स.) ने ओढ़ रखी थी। आप (स.) को उस चादर की आवश्यकता थी, फिर भी आप (स.) ने वह चादर उन सहाबी को उतार कर दे दिया।

लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) के चले जाने के बाद उस सहाबी को फटकारा कि तुम देख रहे थे कि हज़रत मुहम्मद (स.) को उस चादर की आवश्यकता थी फिर तुमने उनसे चादर क्यों मांगी। तो उन्होंने कहा कि यह पवित्र चादर मैंने अपने कफन के लिए माँगी है।

(menern yeg]Keejer, cee®hegâue noerme Vol-2, Page-194)

● मदीना और ख़ैबर के इलाके में हज़रत मुहम्मद (स.) की कुछ खेती थी जिससे इतना अनाज पैदा हो जाता कि वर्ष भर आप (स.) के परिवार का गुजारा हो सकता था। मगर आप (स.) और आप (स.) की पत्नियाँ इतनी दानी थीं कि वह सारा अनाज मांगने वाले गरीबों को बांट देतीं। और खुद खजूर और पानी पर जीवित रहतीं।

● आप (स.) ने किसी मांगने वाले को ना नहीं कहा। अगर कोई ग़रीब आप (स.) से कुछ मांगता और अगर आप (स.) के पास देने के लिए कुछ न होता तो आप उधार लेकर उसकी ज़रुरत पूरी करते। जब आप (स.) का देहांत हुआ तो आप (स.) की ज़िरह (युद्ध में पहना जाने वाला कवच) एक यहूदी के पास गिरवी रखी हुई थी।

(बुखारी मुस्लिम, मारुफुल हदीस, Vol-8 Page-233)

आप (स.) बहुत न्यायप्रिय थे।

हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत न्याय करने वाले थे। इसलिए यहूदी और ग़ैरमुस्लिम अपने विवाद आप (स.) के पास न्याय के लिए लाते। आप (स.) ने कई बार निर्णय मुसलमानों के विरुद्ध दिया है। ऐसे ही आप (स.) के एक न्याय का वर्णन पवित्र कुरआन में है। (heefJe$e]kegâjDeeve 4:62)

प्राचीन काल में स्थायी सरकार और कारागार (जेल) न थे। इसलिए इस्लाम के सारे दण्ड गुनाह साबित होने पर तुरंत देने वाले हैं। इस्लाम में चोरी का दण्ड हाथ काटना है। एक बार एक फातिमा नाम की महिला जो आदरणीय ख़ानदान से थी। उसने चोरी की और वह पकड़ी गई। न्यायालय ने उसे हाथ काटने का दण्ड दिया। कुछ लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सिफारिश की कि आदरणीय क़बीले की महिला है इसे माफी दें दे। इस बात पर हज़रत मुहम्मद (स.) नाराज़ हुए और कहा कि अगर मेरी बेटी फातिमा (रज़ि.) ने भी यह कार्य किया होता तो उसे भी यही दण्ड मिलता।

हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत बहादुर थे।

● 'रकाना' मक्का का सबसे बड़ा पहलवान था। उसने हज़रत मुहम्मद (स.) को कहा कि अगर तुम मुझे हरा दो, तो मैं मुसलमान हो जाऊंगा। यह बात आप के स्वभाव के विपरीत थी कि आप उससे कुस्ती लड़ें, मगर उसने बार-बार आप को मज़बूर किया तो आप (स.) ने उसे तीन बार हराया। (meerjles cegpleyee)

● हज़रत बरा बिन आज़ीब (रजि.) कहते हैं की युद्ध में आप (स.) सबसे आगे रहते थे। आप (स.) पर हमले भी अधिक होते इसलिए जो बहुत बहादुर होता वही आप (स.) के साथ

रहता था। और घमासान युद्ध में कभी किसी जख़्मी मुसलमान को बचना होता तो वह आप (स.) के पीछे हो जाता।

● हुनैन के युद्ध में शत्रु ने जब तीरों की वर्षा कर दी तो मुसलमान सेना को तीरों से बचने के लिए पीछे हटना पड़ा। मगर ऐसी गंभीर स्थिति में भी हज़रत मुहम्मद (स.) और आठ-दस साथी पीछे नहीं हटे, और आगे बढ़ते ही रहे। हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने उमरा वाले १४०० साथियों को आवाज दिया। जब वह पलटकर आए और फिर से हमला किया तो मुसलमान सेना फिर संभल गई और विजयी हुई। (meerjles cegpleyee)

● एक बार मदीना शहर के एक तरफ से बहुत ज़ोर की आवाज़ आई और लोग समझे कि आक्रमण हो गया। जब तक लोग अपने हथियार सजाकर घर से निकले, हज़रत मुहम्मद (स.) हज़रत तलहा (रज़ि.) के घोड़े की नंगी पीठ पर सवार और तलवार लटकाए उस तरफ से वापस आ रहे थे और लोगों को बताया कि चिंता की कोई आवश्यकता नहीं है।

(yegKeejer)

आप (स.) अन्न का बहुत आदर करते थे।

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि जब आप (स.) के सामने भोजन रखा जाता तो अगर आप (स.) को वह पसंद होता तो भोजन करते और अगर नापसंद होता तो वहाँ से उठ जाते मगर आप (स.) ने खाने को कभी बुरा नहीं कहा। (yegKeejer)

● हज़रत आयशा (रज़ि.) कहती हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) मेरे कमरे में तशरीफ लाए, और आप (स.) ने एक रोटी का टुकड़ा ज़मीन पर पड़ा देखा तो आप (स.) ने उसे उठा लिया और साफ करके खा लिया, और फरमाया, ''आयशा, अच्छी चीज़ का आदर करो, क्योंकि (अल्लाह के इस उपकार के अपमान के कारण) यह जिस समुदाय से चली गई फिर लौट कर नहीं आई। (megveve, Fyves cee]pee)

(अर्थात भोजन का अपमान करने से जो लोग गरीब हो गए वह फिर समृद्ध नहीं हुए।)

आप (स.) बहुत हसमुख थे।

● अल्लाह (ईश्वर) पवित्र क़ुरआन में कहता है कि हम मानवजाति के लिए सुविधा चाहते हैं, कठिनाई नहीं। (heefJe$e]kegâjDeeve 2:185)

● हज़रत मुहम्मद (स.) खुशमिज़ाज (हसमुख) थे। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि लोगों ने आश्चर्य से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! (आप पैग़म्बर होकर) हमसे हँसने हँसाने वाली बात करते हैं। आप (स.) ने जवाब दिया, ''हाँ! लेकिन मैं कोई ग़लत बात या धर्म के विरुद्ध कोई बात नहीं कहता।''

(तिरमिज़ी, जादे राह ३२०)

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस कहते हैं कि, मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) से अधिक किसी को मुस्कुराते नहीं देखा। (eflejefce]peer, cegvle]Keye DeyeJeeye-827)

● हज़रत अबूजर कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया अपने भाई के सामने (उससे दोस्ती और प्रेम से मिलने के लिए) मुस्कुराना भी दान देने जैसा पुण्य का काम है।

(तिरमिज़ी १९५६, हदीसे नबवी ११०)

● हज़रत मुहम्मद (स.) की हंसी मुस्कुराने तक रहती। हज़रत आयशा (रज़ि.) कहती हैं कि मैंने आप को कभी इतनी ज़ोर से हंसते नहीं देखा कि आप का हलक (मुँह के अंदर का भाग) नज़र आ जाए। (yegKeejer,

cegefmuece)

आप (स.) अपना आदर करवाना नहीं चाहते थे।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के साथी शाम (Syria) इराक, मिस्र इत्यादि से व्यापार करते थे। आप लोग जब वहाँ जाते तो देखते कि वह लोग अपने धार्मिक गुरु का आदर सजदा (सर झुका) करके या उनके आदर में खड़े होकर या उनके हाथ पैर चूम कर करते। तो आप (स.) के साथियों ने आप (स.) से कहा कि ''या रसूल अल्लाह! हम भी ऐसा ही आदरपूर्वक व्यवहार आप (स.) से भी करना चाहते हैं।'' तो आप (स.) ने इससे मना कर दिया।

हज़रत मुहम्मद (स.) इस बात को ना पसंद करते थे कि जब आप (स.) सभा में आएं तो आप (स.) के लोग उनके आदर में खड़े हो जाएं। (eflejefce]peer, cegvle]Keye DeyeJeeye-Vol-1, No-778)

● आप (स.) ने यह भी फ़रमाया कि जो खुद लोगों से ऐसा आदर करवाना चाहता है उस का ठिकाना जहन्नम (नर्क) होगा।

(तिरमिज़ी, मुन्तख़ब अबवाब-Vol-1, No-778)

● आप (स.) ने इस बात से भी मना किया था कि आप (स.) की कबर मुबारक पर कोई स्मारक बनाई जाए। या आप (स.) का कबर मुबारक को सजदा किया जाए।

हज़रत उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि एक हद (एक सीमा) से अधिक मेरी प्रशंसा मत करो, जैसे इसाइयों ने हज़रत ईसा (अ.स.) के साथ किया। (उनको पैग़म्बर से उठाकर ईश्वर का बेटा बना दिया) मैं खुदा का बंदा (दास) हूँ। इसलिए मुझे केवल अल्लाह का बंदा और पैग़म्बर कहो।

(बुखारी, मुस्लिम, मुन्तख़ब अबवाब Vol-1, No-965)

आप (स.) समाज में प्रेम और शांति चाहते थे।

● ईश्वर ने पवित्र क़ुरआन में आदेश दिया कि, ''ऐ ईमानवालों! कोई क़ौम (समुदाय) किसी क़ौम का मज़ाक न उड़ाए, संभव है कि वह उनसे अच्छी हो। और आपस में एक दूसरे पर ऐब (दोष) न लगाओ, और न किसी को बुरे नाम से पुकारो। इमान लाने के बाद बुरे नाम से पुकारना गुनाह है और जो तौबा न करें वह जालिम लोग हैं।'' (metjn ngpetjele DeeÙele-11)

● आप (स.) ने अपने सहाबियों (साथियों) को इस बात से मना किया था कि आप (स.) से कोई किसी की बुराई बयान करे। आप (स.) ने कहा कि मैं चाहता हूँ मेरा हृदय मेरे साथियों के लिए एक दम साफ हो। (cegvle]Keye DeyeJeeye)

● आप (स.) ने इस बात से मना किया कि कोई किसी कि बुराई जानने की टोह में रहे।

(सूरह हुजूरात आयत ११)

● आप (स.) ने कहा हर एक की जान, माल और सम्मान दूसरे के लिए सम्माननीय है। हर एक दूसरे व्यक्ति के जान माल की रक्षा करे और किसी को अपमानित न करें। (Keglyee nppelegue efJeoe)

● हज़रत आयशा (रज़ि.) कहती हैं, ''जब हज़रत मुहम्मद (स.) को किसी की बुराई की जानकारी होती, तो वह उसे बुलाकर सबके सामने नहीं डाँटते थे। बल्कि आप (स.) मस्जिद में इस तरह बग़ैर किसी का नाम लिए उपदेश देते (तक़रीर करते) कि सभी लोग उस बुराई से बचे रहें, और वह व्यक्ति भी अपने आप को सुधार ले। (efMeheâe-52)

● हज़रत हन्ज़ला (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) चाहते थे कि हर व्यक्ति को अच्छे और उसके पसंद के नाम से पुकारा जाए।

(Deeoeyegue cegheâjo)

● समाज में एक दूसरे के प्रति प्रेम और सद्भावना बढ़ाने के लिए आप (स.) ने सब को सलाम करने का आदेश दिया।

(मुस्लिम मुन्तखब अबवाब Vol-2 Page 391)

● आप (स.) खुद पहले सलाम करते और कहते जो पहले सलाम करता है उसमें घमंड नहीं होता है।

(बैहकी मुस्लिम मुन्तखब अबवाब Vol-1 Page 403)

● आप (स.) महिलाओं और बच्चों को भी सलाम करते थे।

(Denceo cegvleKeye DeyeJeeye Vol-1 Page 402)

हज़रत मुहम्मद (स.) के प्रति हमारा कर्तव्य

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपना और अपने परिवार का जीवन हम तक ईश्वर का सच्चा आदेश पहुँचाने में कुर्बान कर दिया। और इसके बदले में आपने हमसे अपने लिए और अपने परिवार के लिए कुछ न मांगा। और न हम आप (स.) और आप (स.) के खानदान वालों को कुछ दे सकते हैं। इसलिए हम जब भी उनका नाम सुनें तो ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना करें कि "हे ईश्वर! हज़रत मुहम्मद और उनके परिवार पर अपनी कृपा कर।"

● हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए ऐसी प्रार्थना करने को अरबी में दरुद पढ़ना कहते हैं।

● ईश्वर ने पवित्र क़ुरआन में भी हम सबको हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए दरुद पढ़ने का आदेश दिया है। (h e e f J e $ e]kegâjDeeve 33:56)

● फरिश्तों के सरदार हज़रत जिब्रईल (अ.स.) ने उन सब नाशुक्रों को बद्दुआ दी है जो आप (स.) का आभार नहीं मानते और आप (स.) का नाम सुनने के बाद चुप रहते हैं और आप (स.) के लिए प्रार्थना नहीं करते। (यानी दरुद नहीं पढ़ते।)

● आप (स.) के लिए सबसे सरल प्रार्थना (दरुद) है,

meuueuueeng Deuewefn Je meuuece

अर्थात ईश्वर आप (स.) और आप (स.) के परिवार पर कृपा करे। आप (स.) के साथ जो (स.) लिखा जाता है उसका अर्थ यही दरुद है।

इसलिए जब भी हज़रत मुहम्मद (स.) का नाम सुनें तो इसे पढ़ लिया करें।

ईश्वर ने पवित्र क़ुरआन में लोगों को आदेश दिया था कि वह जब भी हज़रत मुहम्मद (स.) से बात करें तो आदर पूर्वक और मध्यम आवाज़ में बात करें, वरना उनके सत्कर्म नष्ट हो जाएंगे। (h e e f J e $ e]kegâjDeeve 49:2-3)

इसलिए आज भी हमें आप (स.) का नाम आदर पूर्वक लेना चाहिए।

आप (स.) सर्वश्रेष्ठ शिक्षक थे

Michael H. Hart ने एक विश्व प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है जिस का शीर्षक है, The 100 ranking of the most influencial persons in history लेखक खुद ईसाई है मगर उसने विश्व के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति के रुप में हज़रत मुहम्मद (स.) का नाम लिखा है। जबकि उसकी आस्था के अनुसार हज़रत ईसा (अ.स.) को प्राथमिकता दे सकता था। उसका कारण लेखक माइकल हार्ट ने लिखा है कि, हज़रत मुहम्मद (स.) के पास धन, सत्ता, शिक्षा, सेना इत्यादि कुछ भी न था। मगर केवल २३ वर्ष के संघर्ष से जो प्रभाव उन्होंने मानवजाति के जीवन पर छोड़ा

है वह आश्चर्यजनक और सबसे अधिक है।

हज़रत मुहम्मद (स.) के बातों में असर था। लोग उनके आदेश और उपदेश तुरंत सुनते, मानते और अपनाते। क्योंकि वह जो कहते पहले वह उसे खुद परिपूर्ण तरीके से करते थे। उनके कथनी और करनी में अंतर न था। इसलिए उनकी शिक्षा में असर था। इसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित है।

- आप (स.) सबको पांच समय नमाज़ पढ़ने के लिए कहते, मगर आप (स.) खुद आँठ समय नमाज़ पढ़ते। तहज्जुद, इशराक और चाश्त यह आप (स.) की तीन अतिरिक्त नमाजें थीं।

- आप (स.) सबको दान करते समय अपने परिवार के लिए भी बचाकर रखने के लिए कहते। मगर आप (स.) अपना सब कुछ दान कर देते।

- आप (स.) सबको एक महीने (फर्ज़ रोज़ा) रमज़ान का रोज़ा (उपवास) रखने को कहते मगर आप (स.) रमज़ान के साथ शाबान का रोज़ा रखते और साल के हर महीने कम से कम तीन रोज़ा ज़रुर रखते।

- जब आप (स.) मदीना में मस्जिद बना रहे थे तो सबके साथ आप (स.) भी मिट्टी पत्थर लाद कर ला रहे थे।

- मक्का के १००० सैनिकों का आक्रमण रोकने के लिए जब आप (स.) बदर जा रहे थे तो आप (स.) के सभी साथियों की सवारी के लिए ऊंट उपलब्ध नहीं थे। इसलिए तीन साथी एक ऊंट पर बारी बारी सवारी करते और कुछ दूर पैदल चलते। हज़रत मुहम्मद (स.) भी सबकी तरह बारी बारी पैदल चले और सवारी करते। साथियों के आग्रह पर भी आप (स.)ने अकेले सवारी करना पसंद नहीं किया।

(मिश्कात, जादे राह Page 235)

- ६२७ AD के खन्दक युद्ध में जब खाईं खोदी गई तो जितना सामान्य मुसलमान सैनिक ने खाईं खोदी उतनी ही हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी खाईं खोदी।

यह युद्ध जो एक महीने तक चला और सब का खाना पानी ख़त्म हो गया, तो जैसे सारे सैनिक भूखे रहते, वैसे आप (स.) भी उनके साथ भूखे रहते।

अर्थात् आप (स.) ने मानवजाति को जो शिक्षा दी पहले आप (स.) ने खुद उसे करके दिखाया, फिर लोगों से उस पर चलने के लिए कहा।

हज़रत मुहम्मद (स.) कैसे नज़र आते थे।

- आप (स.) का क़द न बहुत ऊंचा था और न बहुत छोटा था मगर आप अपने सहाबियों (साथियों) के बीच होते तो सबसे ऊंचे नज़र आते। (eflejefce]peer Vol-1)

- आप (स.) का रंग गंदुमी (गेहुँ/Wheat) था। (eflejefce]peer Vol-1)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि आप का रंग गोरे रंग के करीब था। (आप (स.) बिल्कुल गोरे न थे।) (cemveo Fceece ngceo veb.944)

- हज़रत अली (रज़ि.) कहते हैं कि आप (स.) का रंग सुर्ख (लाल) और सफेद (गोरे रंग) का सुंदर मिश्रण था। (Masnad Imam Humad no 944)

- आप (स.) के बाल न एकदम सीधे थे न एक दम घुंगराले थे। बल्कि हल्के घुंघराले थे।

(इस पा" keâe yeekeâer efnmmee hespe veb 73 hej nw~)

७. हज़रत मुहम्मद (स.) के उपदेश

• हज़रत मुहम्मद (स.) ने जो कुछ कहा था, उन्होंने जो जीवनशैली अपनाया था। उन सब को विद्वानों ने ज्यों का त्यों लिख लिया था। उन विद्वानों ने जो पुस्तकें लिखीं वह उनके नाम से प्रसिद्ध हैं। जैसे बुखारी, मुस्लिम, इब्ने माजा, तिरमिजी, अबू दाऊद इत्यादि। हज़रत मुहम्मद (स.) की कही हुई बातों को हदीस कहते हैं। हम यहाँ हदीस का सारांश व भावार्थ लिख रहे हैं, और संदर्भ उन पुस्तकों का दे रहे हैं जहाँ से हमने उन्हें लिया है।

वैयक्तिक जीवन के लिए उपदेश: -

• अपने बच्चों का अच्छा नाम रखो, क्योंकि क़यामत के दिन ईश्वर के दरबार में सब नाम से पुकारे जाएंगे। (cemveo Denceo, Deyet oeTo)

• हर एक मुसलमान को शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य है। (Fyves ceepee)

• शिक्षा प्राप्त करो। चाहे इसके लिए तुम्हें चीन जाना पड़े। (peF&heâ noerme/ efkeâefceÙeeS meDeeole)
(300 BC mes 1000 AD lekeâ Ûeerve efJe%eeve keâe keWâõ Lee)

• स्वास्थ (Healthy) बनों। (cegefmuece)
(क्योंकि तंदुरुस्त व्यक्ति समाज की सेवा कर सकता है।)

• अपने माता पिता की ऐसी सेवा करो कि ईश्वर तुमको मुक्ति दे दे। जो ऐसा नहीं करता वह जीवन में अपमानित हो। (yegKeejer)

• Deiej legce Deheves ceeB yeehe mes DeÛÚe JÙeJenej keâjesies, lees legcnejs yeÛÛes Yeer legcemes DeÛÚe JÙeJenej keâjWies~ (मुसतदरक-७२५८)

• ईश्वर माता पिता की आज्ञापालन और सेवा करने से आयु बढ़ा देता है।
(कन्जुल आमाल-४५४६८)

• अगर माता पिता नाराज़ हुए तो ईश्वर भी नाराज़ होगा। (MeesSyegue Fceeve-7830)

• आप (स.) बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। आप (स.) की सबसे छोटी बेटी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) जब भी आप (स.) से मिलने आतीं आप (स.) उनके माथे को चूमते थे।

• आप (स.) ने कहा कि जो छोटों से प्रेम और बड़ों का आदर न करें, वह मुसलमान नहीं। (eflejefce]peer, Deyet oeTo)

• युवकों को चाहिए कि अगर विवाह करना उनके लिए संभव हो तो विवाह कर लें। विवाह नज़रें नींची रखता है, और व्यभिचार व अश्लीलता से बचाता है। (Fyves ceepee Vol-2, Page 20)

• meyemes MegYe efJeJeen Jen nw efpemeceW KeÛee& keâce mes keâce nes~ (मस्नद अहमद-२४५२९)

● जो जान बुझकर जैसी जीवन शैली अपनाएगा। उसे उसी अवस्था में मौत आएगी।

(eflejefce]peer)

(अर्थात कोई पाप करता रहे और सोचे कि बुढ़ापे में सज्जन हो जाऊंगा, तो ऐसा नहीं होगा। वह व्यक्ति पाप करते ही मरेगा। इसलिए पाप छोड़ने में बिल्कुल देरी नहीं करनी चाहिए।)

● पुरुष अपनी नीगाहें नींची रखें। (पराई स्त्री को न देखें) (heefJe$e]kegâjDeeve 24:30)

● अपने आप को ऐश और आराम वाले जीवन से बचाओ क्योंकि ईश्वर के खास बंदे ऐश-व-आराम वाली जिंदगी नहीं गुज़ारते। (cemveo Denceo, cegvleKye DeyeJeeye Vol-2, No. 1317)

● किसी नशे वाली चीज़ और बुद्धि भ्रष्ट करने वाली चीज़ का उपयोग मत करो

(अबूदाऊद-३६८६)

● ncesMee meÛe yeesuees, Ûeens GmeceW veg]keâmeeve ve]pej Deelee nes~ keäÙeeWefkeâ meÛÛeeF& ceW ner meheâuelee (yeÛeeJe) nw~ (कन्जुल आमाल ६९५६)

● F&MJej keâe veece ueskeâj Skeâ meeLe yew" keâj Yeespeve KeeDees~ Fmemes legcnejs efueS yejkeâle (meblegef°, mece=fæ) nesieer~ (अबूदाऊद-३७६४)

● सबसे बड़ा खतरा ज़बान से है

(तिरमिज़ी-२४१०)

(लोग सबसे अधिक नरक में अपनी ग़लत बातचीत के कारण जाएंगे।)

● किसी व्यक्ति के झूठा होने के लिए इतनी बात काफी है कि वह सुनी सुनाई बात को जांचने और परखने से पहले लोगों से कहता फिरें। (cegefmuece-8)

● पाप वह है जो तेरे दिल में खटके और तुझे अच्छा न लगे, कि लोगों को इसकी खबर हो।

(मुस्लिम-६६८०)

● जो व्यक्ति ऐसा रास्ता चले जिसका उद्देश्य सत्य का ज्ञान प्राप्त करना हो, तो अल्लाह (ईश्वर) उसके लिए स्वर्ग का रास्ता आसान कर देंगे। (cegefmuece-6853)

● अगर तुम दूसरों के लिए भी वही पसंद करोगे जो अपने लिए पसंद करते हो तो पूरे पूरे मुसलमान हो जाओगे।

(cemveo Denceo/eflejefcepeer/cee®hegâue noerme Vol-2, Page 148)

सामाजिक जीवन के लिए उपदेश :-

● यह संसार ईश्वर का परिवार है। जो मानवजाति की सेवा करता है ईश्वर उससे प्रेम करता है। (efceMkeâele, lepeg&ceeves noerme Vol-2, 239)

● ईश्वर ने कुछ बन्दों को लोगों की ज़रुरत पूरी करने के लिये पैदा किया है, लोग उन के पास अपनी ज़रुरत ले कर जाते हैं, लोगों की ज़रुरत पूरी करने वाले यह लोग अल्लाह के अज़ाब से महफ़ूज़ रहेंगे। (leyejeveer keâyeerj : 13334, Deyoguueen efyeve Gcej)

● आप (स.) ने कहा तुम धरती वालों से प्रेम

और उपकार करो, तो जो आकाश पर है (ईश्वर) वह तुमसे प्रेम करेगा और तुम पर उपकार करेगा। (DeyetoeGo, eflejefce]peer)

• Jen JÙeefkeäle cegmeueceeve veneR nes mekeâlee nw efpeme mes Gmekeâe hel[esmeer hejsMeeve nes~ (बुखारी)

• F&MJej, hew]iecyej Deewj Meemekeâ kesâ DeeosMe keâe heeueve keâjes~ (पवित्र क़ुरआन ४:५९)

• व्यक्ति अपने मित्र के धर्म का पालन करता है। इसलिए हर एक को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि वह किससे मित्रता करता है। (DeyetoeTo, eflejefce]peer)

(DeLee&le og°, DeOeceea Deewj DehejeefOeÙeeW mes efce$elee cele keâjes~)

• efpeme meceepe ceW vÙeeÙe veneR nesiee Gme meceepe ceW efnbmee keâer lešveeSB yengle nesieer~ (मुअत्ता-१६७०)

• तुम्हारे कर्म ही तुम्हारे शासक हैं। तुम्हारे जैसे कर्म होंगे, वैसे ही शासक तुम पर राज करेंगे। (peJeeefnjs efnkeâcele)

• लोग कंघी के दानों की तरह है। (जवाहिरे हिकमत)

(सारे लोग एकदम बराबर हैं। जात-पात का कोई भेदभाव नहीं।)

• ऐ लोगो! ईश्वर की प्रार्थना किया करो तो ईश्वर तुम्हें आसान (बग़ैर कठिनाई के) और पाकीज़ा (पवित्र) जीवन देगा। और तुम्हारे हृदय को धनवान (ग़नी/Rich) कर देगा। और अगर तुम लापरवाही करोगे तो न तुम्हारी व्यस्तता (मसरुफियत) कम करेगा और न तुम्हारी पैसों की तंगी दूर करेगा।

(इब्ने माजा ४१०-तिरमिज़ी-२४६६)

(जो ईश्वर की इबादत (प्रार्थना) नहीं करते उन्हें काम से कभी फुरसत नहीं मिलेगी। और श्रीमंत होने के बावजूद उनके पास दान-धर्म या खुशी से खर्चा करने के लिए कभी Extra पैसा नहीं होगा।)

• हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि, ''पैग़म्बरों में मैं सबसे आखरी पैगम्बर हूँ। अब कोई पैग़म्बर नहीं आएगा। और इस युग के बाद सबको, मुझे आखरी पैग़म्बर मानने और ईश्वर को एक मानने पर ही मुक्ति मिलेगी।''

(मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब Vol-1, Page-26)

• अगर सागर में उंगली डाल कर निकालो तो जो पानी उंगली में लगा रहता है वह उस सागर के पानी की तुलना में जितना कम है उतना ही कम हमारी इस धरती का जीवन परलोक के जीवन की तुलना में कम है। (cegefmuece, eflejefce]peer, lepeg&ceeves noerme, Vol-1,page-26)

(अर्थात आख़िरत (परलोक) का जीवन अनंत है।)

• इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर ईश्वर उस दिन से पहले किए हुए सभी पापों को क्षमा कर देता है। (cegefmuece, cegvleKye DeyeJeeye, Vol-1, Page-80)

(बाद में किए हुए पापों का हिसाब किताब होगा।)

व्यवसाय से सम्बन्धित उपदेश :-

- हमेशा सकारात्मक सोचो। यहाँ तक कि अगर तुमको विश्वास हो कि अभी क़यामत आने वाली है और तुम्हारे पास कोई पौधा (Branch) है और इतना समय है कि उसको लगा सको, तो उसे लगा दो।
  (आदाबे मुफारद उर्दू ४७९)

- F&MJej keâer DeefveJeeÙe& Fyeeole (ØeeLe&vee) kesâ yeeo Deheves heefjJeej kesâ heeueve hees<eCe kesâ efueS Oeve keâceevee Yeer DeefveJeeÙe& nw~ (तिबरानी वाऽबीर ९७५१) (DeLee&le vecee]pe, jes]pee,]pekeâele, n]pe Ùen lees keâjvee ner nw~ Fmekesâ meeLe DeeojCeerÙe ceeOÙece mes Oeve keâceevee Yeer DeefveJeeÙe& nw~ keâesF& yeeyee yeve keâj Oeve keâceeS lees Ùen]ieuele nw~)

- जो आदरणीय जीवन बिताने, अपने माता पिता की सेवा करने, और अपनी पत्नी और बच्चों के पालनपोषण के लिए उचित माध्यम से रोज़ी रोटी कमाता है तो उसका यह कर्म ईश्वर की इबादत (प्रार्थना) है। (efleyejeveer)

- ईश्वर ने उन्नती (बरकत) के बीस भाग किए हैं। उसमें से १९ भाग व्यापार को दिया है, और नौकरी करने वालों को एक भाग दिया है। (keâvpegue Deeceeue 16/4, jkeâcegue noerme 9354)

- ईश्वर जिस माध्यम (Source of income) से तुम को रोज़ी रोटी दे उसको उस समय तक मत छोड़ो जब तक उससे आमदनी Income होना बंद न हो जाए और कोई दूसरी समस्या न हो जाए। (Fyves cee]pee, keâvpegue Deeceeue 9266)

(नया व्यवसाय तलाश करते रहो मगर पुराने मुख्य व्यवसाय को बंद मत करो।)

- जो दास (Employee) हैं, यह तुम्हारे भाई हैं। इन्हें ईश्वर ने तुम्हारे सेवा में रखा है। अगर ईश्वर ने एक भाई को दूसरे भाई की सेवा में रखा है तो उस धनवान भाई को अपने सेवक से सबसे अच्छा व्यवहार करना चाहिए। उन्हें वही खिलाओ जो तुम खाते हो। उन्हें वही पहनाओं जो तुम पहनते हो। उनसे कठिन काम लेना पड़े तो उनकी सहायता करो। (yegKeejer, cegefmuece, DeyetoeTo, eflejefce]peer)

- धरती के गुप्त ख़ज़ानों में अपनी रोज़ी तलाश करो। (keâvpegue Deceeue-Vol-2, Page 197)

- मज़दूर की मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो। (Fyves cee]pee)

- जो काम करो उत्तम तरीक़े से करो।
  (मुस्लिम, हदीसे नबवी नं.३६५)

- हलाल तरीके से रोज़ी कमाओ। (cegmeleoejkeâ nekeâerce-214)

- धोखा मत दो। (Fyves ceepee-2250)

- दूसरी बार धोखा मत खाओ।
  (बुखारी, मुस्लिम)

- झूठ मत बोलो। (yegKeejer,

cegefmuece)

- अपने बेचे हुए सामान की गारंटी दो।
(इब्ने माजा-२२६५)

- किसी का नुक़सान मत करो।
(Fyves ceepee 2248)

- किसी का शोषण मत करो।
(इब्ने माजा २२५३)

- अपने वचन को पूरा करो।(heefJe$e]kegâjDeeve 5:1)

- जब सामान का वज़न करो तो झुकता तौलो। (थोड़ा सा अधिक दो।) (eflejefce]peer-2305)

- भाव बढ़ाने के लिए माल को रोक कर मत रखों। (Fyves ceepee-2229)
(अर्थात जमाखोरी मत करो।)

- न ब्याज़ लो और न ब्याज़ दो। न किसी के ब्याज के लेनदेन में सहायता करो।

(efceMkeâele)

- अपने लेनदेन का लिखित रेकॉर्ड रखो।
(तिरमिज़ी, पवित्र क़ुरआन २:२९२)

- पेड़ पर फसल आने से पहले उस फसल के सारे फलो का Advance में सौदा मत करों।
(इब्ने माजा-२२६५/२२९४)

- meeceeve yesÛeles meceÙe Fixed Rate Jeeueer hee@efuemeer DeheveeDees~ (इब्ने माजा-२२८१)

- किसी की मज़बूरी का लाभ मत उठाओ।
(इब्ने माजा-२२६९)

- जो चीज़ें तुम्हारे ताबे में हैं केवल उनका सौदा करो। (Fyves ceepee)

- नाई (हज्जाम) मत बनो। (Fyves ceepee-2242)

- efÛe$ekeâej cele yevees~
(इब्ने माजा-२२२७)

- अभिनेता मत बनो।
(तिरमिज़ी, सफ़ीना निजात-२३७)

- लैंगिकता (Sex) से जुड़े कोई भी कारोबार मत करो। (cegleeefheâkeâe Deuewn)

- oe®, pegJee, pÙeesefle<e MeeŒe mes pegÌ[s keâejesyeej cele keâjes~ (मुताफिका अलैह)

- नाच गाने से जुड़ा कोई कारोबार मत करो।

(cegleeefheâkeâe Deuewn)

- जो व्यक्ति चोरी का माल खरीदे और उसे मालूम हो कि वह माल चोरी का है तो वह उस चोरी के पाप में साझीदार है। (cegmeleoekeâ-2253)

- कारोबार में बिल्कुल डूब मत जाओ।

(eflejefce]peer)
(परिवार, समाज और धर्म के काम के लिए भी समय दो।)

- पाप करने से ईश्वर रोज़ी छीन लेता है।
(मुस्लिम ३७२१, इब्ने माज़ा मुस्नद अहमद २१८८१)

- सुबह देर तक सोने से रोज़ी कम हो जाती है। (cegmveo Denceo Vol-1, 73)

- जिस धन से ज़कात (दान) नहीं निकाला जाता वह धन बरबाद हो जाता है।
(efceMkeâele, meheâervee efvepeele -60)

हज़रत मुहम्मद (स.) का आख़िरी पैग़ाम मानवजाति के नाम:

हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने आख़िरी हज के अवसर पर जो उपदेश लोगों को दिया था उसके मुख्य अंश इस प्रकार है;

● ईश्वर एक है। और उसके अलावा कोई पूजने के लायक नहीं। उसका कोई साथी नहीं। ईश्वर ने अपना वचन पूरा किया। केवल उसने ही सभी अधार्मिक शक्तियों को पराजित किया। (और इस्लाम धर्म को फैला दिया।)

● लोगो! ईश्वर ने तुम सबको एक स्त्री और एक पुरुष से जन्म दिया। और तुम्हें अलग-अलग समुदाय और कबीलों में बाट दिया, ताकि तुम पहचाने जाओ। तुममें सबसे अधिक आदरणीय वह है जो सबसे अधिक ईश्वर से डरने वाला हो। न कोई अरब ग़ैर अरब से महान है। न कोई ग़ैर अरब किसी अरब व्यक्ति से महान है। न कोई गोरा व्यक्ति किसी काले से महान है न कोई काला व्यक्ति किसी गोरे से महान है। (अर्थात् जात-पात, रंग व नस्ल का कोई भेदभाव नहीं) महानता केवल ईश्वर से डरने और आचरण की पवित्रता पर निर्भर है।

● लोगो! आज (हज) का दिन, यह (हज का) महीना और यह मक्का शहर जिस तरह आदरणीय है उसी तरह तुम लोगों की जान, माल और (इज़्जत) सम्मान एक दूसरे के लिए आदरणीय है। (अर्थात् कोई एक दूसरे के जान व माल और सम्मान को नुकसान न पहुँचाए)

● लोगो! मेरे बाद गुमराह न हो जाना। न एक दूसरे से युद्ध करना। सारे मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं। अपने दासों (गुलामों) की चिंता करना। उनको वही खिलाओ जो तुम खाते हो। उनको वही पहनाओ जो तुम पहनते हो।

● मुसलमान होने के पहले की सारी दुश्मनी को मैं ख़त्म करता हूँ। मेरे क़बीले ने जो एक हत्या का बदला लेना बाकी है उसको मैं क्षमा करता हूँ।

● मुसलमान होने के पहले जो ब्याज (Interest on Money) का लेना देना था वह मैं माफ करता हूँ। मेरे चाचा हज़रत अब्बास ने जो क़र्ज़ दिया है, उसका सारा सूद (ब्याज) मैं माफ करता हूँ (अब न कोई ब्याज ले न दे।)

● लोगो! अल्लाह ने हर हक़दार का हक़ (अधिकार) तय कर दिया है। अब कोई किसी वारिस के लिए वसीयत न करें।

(अर्थात् जायदाद में परिवार के किसी सदस्य को कितना हिस्सा मिलेगा यह ईश्वर ने पवित्र क़ुरआन में अवतरित कर दिया है। अब अपनी मर्ज़ी से कोई मरते समय किसी का हिस्सा कम या अधिक न करे।)

● बच्चा उसी का जिसके बिस्तर (घर) में पैदा हुआ। व्यभिचार करने वालों का दंड पत्थर से मारना है। न्याय अल्लाह के यहाँ होगा। जो कोई अपने खानदान के बारे में झूठ बोलेगा उसपर अल्लाह की लानत है।

● जो क़र्ज़ ले उसे वापस करे।

● कोई चीज़ अगर तुम कुछ समय के लिए उधार लो तो वापस करो।

● उपहार लो तो दिया भी करो।

● अगर किसी की गॅरंटी लो तो अपना वादा पूरा करो। (उसकी तरफ से जुरमाना भरो)

● बलपूर्वक किसी से कोई वस्तु न ले।

● अपने आप से और दूसरों के साथ अन्याय न करो।

● अगर एक बदसूरत हब्शी भी तुम्हारा शासक बना दिया जाए और अगर वह ईश्वर के आदेश के विरुद्ध आज्ञा न दे तो उसका आदेश मानना तुम सबके लिए अनिवार्य है।

● अब मेरे बाद कोई पैग़म्बर नहीं आएगा। और तुम अंतिम उम्मत (समुदाय) हो।

● पत्नी के लिए यह जाएज़ नहीं कि पति के बग़ैर अनुमति के वह उसका माल किसी को दे।

● पति का पत्नी पर और पत्नी के पति पर कुछ अधिकार (कर्तव्य) हैं। पत्नी का यह कर्तव्य है कि वह व्यभिचार न करे और ऐसे व्यक्ति को घर न आने दे जिसे उसका पति पसंद नहीं करता है।

● अगर पत्नी व्यभिचार करे तो हलका दंड दो यहाँ तक कि वह सुधर जाए। उसके बाद उस से अच्छा व्यवहार करो। अच्छा खिलाओ पिलाओ, क्योंकि वह तुम पर निर्भर है। पति पत्नी का शारीरिक संबध ईश्वर का नाम लेने के बाद (विवाह के बाद) ही जाएज़ होता है। इसलिए पति पत्नी को अपने वैवाहिक जीवन में ईश्वर के आदेश का ख्याल रखना चाहिए।

● अब अपराधी खुद अपने अपराध का दण्ड भोगेगा। अब न बाप के अपराध का दंड बेटे को मिलेगा, और न बेटे के अपराध का दंड बाप को।

● आप (स.) ने कहा ''ऐ लोगो! तीन बातें हृदय को पाक साफ रखती हैं (आपसी झगड़े-फसाद को नहीं होने देतीं)

१) कोई भी कार्य का उद्देश्य शुद्ध हो।
(आमाल में इखलास)

२) हमेशा सबके हित के कार्य करो।
(दीनी भाईयों की खैरख्वाही)

३) आपस में सहमति बनाए रखो।
(इत्तिहाद बनाए रखो।)

● लोगों! महीनों को आगे पीछे मत करो। (अर्थात् साल के बारा महीने हैं। इन्हें हमेशा १२ महीने रखो। कुछ दिन या महीने जोड़ कर Lunar महीने को Solar calender के साथ न मिलाओ।)

● लोगो! ईश्वर का आदेश मैंने तुम लोगों तक पहुँचा दिया। मैं तुम लोगों के बीच दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। अगर तुम उन दोनों को पकड़े रहोगे। तो कभी गुमराह नहीं होगे। वह दोनों चीज़ हैं। अल्लाह की किताब (पवित्र क़ुरआन) और मेरी सुन्नत (मेरे जीने का तरीक़ा)

● लोगो! अपने मालिक की प्रशंसा करो। पाच समय नमाज़ पढ़ो। महीने भर रोज़ा (उपवास) रखो। ज़कात (दान) दो। हज किया करो। अपने शासक की आज्ञा मानों। ऐसा करोगे तो तुम स्वर्ग प्राप्त करोगे।

● ऐ लोगो! जो यहाँ मेरी बात सुन रहे हैं। वह मेरी बात उन लोगों तक पहुँचा दें जो यहाँ नहीं हैं। हो सकता है कि कोई जो उपस्थित नहीं है वह तुमसे अधिक समझने और याद रखने वाला है। (K e g l e y e e nppelegue efJeoe)

****

अग्नि का रहस्य इस पा" का बाकी हिस्सा

कहलाएंगे। और इमानदार का कर्तव्य है की वह अपने रब के आदेशों को माने और रब के पैगम्बर के बताए मार्ग पर चल कर जीवन गुज़ारे। व्यापार के इस्लामी नियम मैंने अपनी पुस्तक ''कानूने तरक़्क़ी'' में लिखा है, इस पुस्तक को पढ़कर अपने कारोबारी व्यवहार को और सुधार लें। ईश्वर को मन में याद करते रहें। उसके नाम का जाप करते रहें। उसके दो मुख्य नाम हैं। हादी और रहीम। तो ''या हादी'', ''या रहीम'' का जब भी समय मिले विर्द (जाप) करें।

इतना करने के बाद एक बार पवित्र क़ुरआन का अनुवाद पढो। हदीस पढो और किसी जान पहचान के विद्वान से सम्पर्क में रहो और नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज़ के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करो और उस पर अमल करो।

****

८. एक ईश्वर का अस्तित्व है इसका प्रमाण

क्या आप एक ईश्वर को मानते हैं?

नहीं?

कोई बात नहीं।

मैं आप से कुछ प्रश्न पूछता हूँ। कृपया उसका उत्तर दें।

• बीसवीं शताब्दी (1900 AD) में वैज्ञानिकों ने इस बात को जाना कि आरंभ में कोई बहुत गर्म छोटी सी चीज़ थी, जो एक धमाके की तरह फैलना शुरु हो गई और फैलते फैलते सारे बह्माण्ड में फैल गई। इसे Big Bang Theory कहते हैं। जब वह कुछ ठंडी हुई तो गरम धुएं की तरह हो गई। फिर और ठंडी हुई तो धरती आकाश बने। धरती पर हर तरफ पानी पानी हो गया। फिर ज़मीन पानी के नीचे से ऊपर उठी। और पानी से सभी प्राणी पैदा हुए।

• पवित्र क़ुरआन जो १४०० वर्ष पूर्व (610 AD से 632 AD में) अवतरित हुआ है। उसमें लिखा हुआ है कि पहले धरती और आकाश सब गरम धुआँ थे। ईश्वर ने उससे धरती और आकाश का निर्माण किया। (heefJe$e]kegâjDeeve 41-11)

तो जो सत्य और तथ्य वैज्ञानिकों को बीसवीं शताब्दी में मालूम् हुए वे १४०० वर्ष पूर्व पवित्र क़ुरआन में कैसे आ गए?

इस प्रकार के कुछ सत्य और तथ्य निम्नलिखित हैं;

• वैज्ञानिकों ने 1800 A.D. में अनुमान लगाया कि सभी जीवित प्राणियों का जन्म पानी से हुआ है। १४०० वर्ष पूर्व क़ुरआन में ईश्वर ने कहा है कि ''सभी जीवित प्राणियों को हमने पानी से जन्म दिया।'' (heefJe$e]kegâjDeeve 21:30)

• प्राचीन युग में लोगों की ऐसी सोच थी कि सूर्य और चंद्रमा दोनों मशाल की तरह जलते हैं और प्रकाश फैलाते हैं। १९ वीं शताब्दी में वैज्ञानिकों ने खोज लगाया कि केवल सूर्य ही अपना ईंधन जलाकर प्रकाश बिखेरता है। चंद्रमा तो केवल सूर्य के प्रकाश से उज्वलित है। यही तथ्य १४०० वर्ष पूर्व पवित्र क़ुरआन में लिखा हुआ है, (heefJe$e]kegâjDeeve 25:6)

• प्राचीन काल से लोगों का विश्वास था कि धरती स्थिर है। सूर्य चंद्रमा और सारा बह्माण्ड इस पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगाते हैं।

१६०९ में जर्मन वैज्ञानिक Johnannas Kepler ने इस तथ्य की खोज की कि सारे प्लॅनेट सूर्य के चारो तरफ चक्कर लगाते हैं, और अपने Axis पर भी घूमते हैं। बीसवीं शताब्दी में यह पता लगा कि सूर्य भी स्थिर नहीं है। यह भी अपने Axis पर घूमता है और सारे प्लॅनेट्स को साथ लेकर १५० मील/सेकंड की गति से Solar Apex के चारों तरफ चक्कर लगाता है। और एक चक्कर २०० Million वर्ष में पूरा करता है।

१४०० वर्ष पूर्व ही ईश्वर ने इस तथ्य को पवित्र क़ुरआन में बता दिया था कि सूर्य

और चंद्रमा यह सब अपने-अपने Orbit में चक्कर लगाते रहते हैं। (heefJe$e kegâjDeeve 21:33)

● सूर्य में Helium गैस का Fusion होता है। इस प्रक्रिया से ऊर्जा और प्रकाश निकलता है। जब सूर्य में Helium गैस समाप्त हो जाएगी तो Fusion प्रक्रिया भी रुक जाएगी और सूर्य ठंडा होना शुरु होगा। वह एक गुलाबी रंग का गैस का गोला बन जाएगा और फैलते फैलते पृथ्वी को भी अपने अंदर समा लेगा। उस समय आकाश गुलाबी नज़र आएगा। और धरती पर हर जगह केवल दिन होगा।

इस तथ्य को वैज्ञानिकों ने पचास वर्ष पूर्व खोज निकाला है, जब कि यह तथ्य १४०० वर्ष पूर्व ही पवित्र क़ुरआन में उल्लेखित है।

(पवित्र क़ुरआन, ५५:३७)

(और यह दिन क़यामत (प्रलय) का दिन होगा।)

● प्राचीन काल से लोगों का ऐसा सोचना था कि आकाश में दो तारों के बीच कुछ भी नहीं है। कुछ वर्ष पहले वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि उनके बीच भी प्लाजमा है। (Plasma is fourth state of matter)

जब कि यह तथ्य १४०० वर्ष पूर्व ही पवित्र क़ुरआन में लिखा हुआ है कि उनके बीच भी कुछ है। (heefJe$e]kegâjDeeve-25:59)

● १९२५ में Edwin Hubble ने इस बात का पता लगाया कि बह्माण्ड में जो आकाशगंगा (Galaxy) है वह एक दूसरे से दूर जा रही है। या यह बह्माण्ड फैल रहा है।

''हम इस बह्माण्ड को फैला रहे हैं'' यह बात ईश्वर ने १४०० साल पहले ही पवित्र क़ुरआन में अवतरित कर दिया था।

(पवित्र क़ुरआन-५१:४७)

● किसी भी पदार्थ के सबसे छोटे कण को ATOM कहते हैं। प्राचीन काल में इसे दूसरे नामों से भी जाना जाता था। जैसे जौरह, जरराह इत्यादि। कुछ वर्षों पहले वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि एटम से छोटे पार्टिकल भी हैं जिसे Sub-Atomic particles कहते हैं।

१४०० साल पहले ईश्वर ने इस तथ्य को पवित्र कुरआन में बता दिया था कि ATOM से छोटे पार्टिकल का अस्तित्व है जो ईश्वर के ज्ञान में है। (heefJe$e kegâjDeeve, 34:3)

● धरती पर बहुत सी ऐसी जगह हैं जहाँ समुद्र में दो प्रकार का पानी है। और वह दोनों पानी एक दूसरे में Mix नहीं होते बल्कि अलग-अलग रहते हैं। ऐसा Meditaranian sea में है और Atlantic Sea में है। और इस तथ्य का ज्ञान लोगों को १०० वर्ष पूर्व हुआ। जब कि इस तथ्य को ईश्वर ने १४०० वर्ष पूर्व ही पवित्र क़ुरआन में बता दिया था।

(पवित्र क़ुरआन २५:५३)

● यह धरती जिस पर हम चलते हैं। अगर हम अपने कदमों के नीचे १०० कि.मी. गहरा गड्ढा खोदें तो नीचे से गरम लावा निकल आएगा। हम धरती की सतह (Surface) पर १०० कि.मी. मोटी परत पर बसते हैं। यह १०० कि.मी. मोटी परत भी कई परतों से मिल कर बनी है। जब एक परत दूसरे परत पर फिसलती या सरकती है तो भूकंप आते हैं। धरती पर जो पहाड़ हैं यह दो परतों में खूंटों (Wedge) की तरह धसे हुए हैं और एक दूसरे पर परतों को फिसलने से या सरकने से रोकते हैं।

इस तथ्य (Fact) को वैज्ञानिकों ने बीसवीं

शताब्दी में जाना। जब कि ईश्वर ने इस सत्य को पवित्र क़ुरआन में १४०० वर्ष पहले ही अवतरित किया था। (heefJe$e]kegâjDeeve 79:32)

● स्त्री के गर्भ में बच्चा लड़का पैदा होगा या लड़की यह पुरुष के वीर्य (Sperm) पर निर्भर करता है।

करोमोजोम के २३ वें जोड़े में अगर पुरुष के वीर्य से XX जोड़ा बनेगा तो लड़की का जन्म होता है और XY जोड़ा बना तो लड़का जन्मेगा।

बच्चा लड़का होगा या लड़की यह माँ नहीं बल्कि बाप पर निर्भर करता है, यह तथ्य और सत्य वैज्ञानिकों को अब बीसवीं शताब्दी में मालूम हुआ। जब कि यह तथ्य १४०० वर्ष पहले ही क़ुरआन में अवतरित हुआ है।
(पवित्र क़ुरआन ७५:३५-३९) (५३:४५-४६)

● इसी तरह पानी, हवा, पहाड़, पक्षी, जानवर, कीड़े, मकोड़े,मनुष्य का शरीर और उस का जन्म इत्यादि इनके बारे में वह सत्य और तथ्य जो वैज्ञानिकों ने कुछ शताब्दी पहले खोज कर के जाना है ईश्वर ने वह सब १४०० वर्ष पूर्व ही पवित्र क़ुरआन में अवतरित कर दिया है।

● ऐसे ८०से अधिक वैज्ञानिक तथ्य जो पवित्र क़ुरआन में हैं, हारुन याहया ने अपनी पुस्तक Allah's Miracles in the Quran में लिखा है। डा.ज़ाकिर नाईक की भी इस विषय में The Quran and Modern Science नामक पुस्तक है।

● पवित्र क़ुरआन में क्या लिखा है और यह वैज्ञानिक तथ्यों को कैसे प्रमाणित करता है यह समझने के लिए आप पहले हारुन याहया और डा. ज़ाकिर नाईक की पुस्तकें पढ़ें, फिर पवित्र क़ुरआन का अध्ययन करें। इससे आप को पवित्र क़ुरआन समझने में आसानी होगी।

● वह लोग जो एक ईश्वर को नहीं मानते, वह बताएं कि, वह तथ्य जो एक वैज्ञानिक केवल आधुनिक मशीन और साधन के द्वारा ही जान सकता है वह १४०० वर्ष पूर्व पवित्र क़ुरआन में कैसे लिख गऐ?

● इन तथ्यों को वही जान सकता है जिसने उन्हें बनाया है। ईश्वर ने उन्हें बनाया है इसलिए ईश्वर ही उन्हें जानता है। और यह इस बात का भी प्रमाण है कि एक ईश्वर का अस्तित्व है।

पवित्र क़ुरआन को ईश्वर ने ही अवतारित किया है। इसलिए वह तथ्य और सत्य इसमें १४०० वर्ष पूर्व से मौजूद है। जिन्हें वैज्ञानिकों ने अभी जान पाया है।

एक ईश्वर अनंत काल से था और हमेशा रहेगा। इस ब्रहमाण्ड की रचना केवल ईश्वर ने की है। यह अपने आप वजूद में नहीं आ गया है।

ईश्वर सच्चा है उसकी अवतारित की हुई पुस्तक (क़ुरआन) भी सच्ची है। और वह जिस पर यह पुस्तक अवतरित की गई वह भी सच्चा और ईश्वर का दूत है।

Allah's Miracles in the Quran
Publishers :- Goodword books
1, Nizamuddin west Market,
New Delhi-110013
Tel:- 41827083, 46521511
Fax-011-46651771
Email- info@goodwordbooks.com

****

The Quran & Modern Science
Compatible or Incompatible?
Publishers :- Islamic Research Foundation
56/58 Tandel Street (North),
Dongri, Mumbai-400009, India.
Tel:- 91-22--23736875
Email- islam@irf.net,
Website:- www.irf.net
Fme hegmlekeâ keâes Deehe nceejs JesyemeeF&š Website:-

९. पैग़म्बर कौन?

• F&MJej पवित्र क़ुरआन में कहता है, ''इन्सान और जिन्नात को हमने अपनी प्रार्थना के लिए पैदा किया है।'' (heefJe$e]kegâjDeeve 51:56)

• F&MJej पवित्र क़ुरआन में कहता है, ''क्या लोगों ने समझ रखा है कि वे बस इतना कहने से छोड़ दिये जायेंगे कि 'हम मुसलमान हो गए', और उनकी परीक्षा न ली जाएगी?''

(पवित्र क़ुरआन २९:२)

(अर्थात hejer#ee दिए बिना किसी को स्वर्ग नहीं मिलेगा)

• F&MJej पवित्र क़ुरआन में कहता है, ''अगर F&MJej चाहता तो तुम सबको एक समुदाय बना देता, मगर वह चाहता है कि जो हुक्म तुमको दिया है उसमें तुम्हारी परीक्षा ले। तो पुण्य के काम करने में एक दूसरे से आगे बढ़ो।'' (heefJe$e]kegâjDeeve 5:48 keâe meejebMe)

• शैतान ने F&MJej को आवाहन (Chalange) किया था कि मैं तेरे बन्दों को बहकाता रहूँगा। और तेरे कुछ नेक बन्दों के सिवा तेरे सारे बन्दे मेरे बहकावे में आ जाऐंगे।

(पवित्र]kegâjDeeve १७:६२ का सारांश)

• ईश्वर पवित्र क़ुरआन में कहता है, हमने हर समुदाय और समाज में अपने पैग़म्बर भेजे।

(पवित्र क़ुरआन १०:४७)

• शैतान लगातार लोगों को बहकाता रहता है, इसलिए दयालु F&MJej हर युग में अपने दूत या पैग़म्बर भेजता रहा, जो मनुष्यों को परीक्षा में सफलता और मुक्ति की राह बताते रहे।

• तो पैग़म्बर ईश्वर के प्रतिनिधि हैं जो हमें स्वर्ग प्राप्त करने का सच्चा रास्ता समझाते रहें हैं।

पैग़म्बर कौन बनाता है?

• ईश्वर पवित्र क़ुरआन में कहता है कि हमने तुम्हें बनाया फिर तुम्हारी शक्लें (Faces) बनाईं। (heefJe$e]kegâjDeeve 7:11)

विद्वान इस आयत का अर्थ ऐसा बताते हैं कि ईश्वर ने पहले सभी मानवजाति की आत्माएं बनाईं। फिर उन आत्माओं के लिए शरीर बनाया।

• ईश्वर पवित्र क़ुरआन में कहता है, ''और जब ईश्वर ने पैग़म्बर आदम की पीठ से उनकी संतानों को निकाला, और उनको खुद उनका साक्षी (गवाह) बनाकर पूछा, ''क्या मैं तुम्हारा ईश्वर नहीं हूँ?'' तो वह कहने लगे हम साक्षी देते हैं कि आप हमारे ईश्वर हैं। और यह वचन (Statement) इसलिए लिया कि, कहीं प्रलय (क़यामत) के दिन मनुष्य यह न कहने लगें कि ''हे ईश्वर हम तो तुझे जानते ही न थे।'' और कहीं ऐसा न कहो कि ईश्वर के साथ देवी-देवताओं को तो हमारे पूर्वज पूजते थे, हम तो केवल उनकी संतान हैं, जो उनके बाद पैदा हुए। तो जो पाप की परंपरा उन्होंने स्थापित की उसका दंड हमें क्यों मिलेगा?''

(पवित्र क़ुरआन ७:१७३ का सारांश)

● विद्वान कहते हैं कि यह वचन लेने की प्रक्रिया भी उस समय की है जब मनुष्य केवल आत्मा था और उस समय अभी शरीर नहीं बने थे।

● जैसे ईश्वर ने तमाम इन्सान की आत्मा उस का शरीर बनाने से पहले बनाया है उसी तरह ईश्वर ने पैग़म्बर या प्रेषित भी मनुष्य के जन्म से पहले ही बनाया है। निम्नलिखित पवित्र क़ुरआन की आयत इस तथ्य को प्रमाणित करती है।

● ईश्वर पवित्र क़ुरआन में कहता है, ''और जब हमने पैग़म्बरों से वचन लिया और (ए मुहम्मद) तुमसे और नूह (मनु) से और इब्राहीम से और मूसा से और वचन भी उनसे पक्का लिया। (heefJe$e]kegâjDeeve 33:7)

● अर्थात यह धरती और आकाश बनाने से पहले ही ईश्वर ने धरती पर क़यामत (प्रलय) तक पैदा होने वाले सभी इन्सानों की आत्माओं को बना दिया था। और उसी समय सभी पैग़म्बरों की आत्माओं को भी बना दिया था। फिर जैसे समय गुज़रता गया मनुष्य भी धरती पर अपने समय पर पैदा होते रहे। और उनके मार्गदर्शन के लिए पैग़म्बर भी आते रहे।

● मगर जैसे मनुष्य घोर तपस्या करके संत, महापुरुष या वली बन जाता है, वैसे कोई घोर तपस्या करके पैग़म्बर नहीं बन सकता है। क्योंकि पैग़म्बर ईश्वर खुद नियुक्त करता है। और सारे पैग़म्बरों को वह करोड़ों वर्ष पूर्व ही नियुक्त कर चुका है। ईश्वर के इस पैग़म्बर नियुक्ति के अमल में मनुष्य का कोई दखल नहीं है। यह ईश्वर का एक तरफा फैसला है।

● ईश्वर जिन आत्माओं को पैग़म्बर नियुक्त करता है वह उन्हें सबसे अच्छा और सम्मानित खानदान (वंश), सबसे अच्छा व्यक्तित्व, सब से अच्छा आचरण, पवित्र विचार, और ज्ञान भी देता है। इसका एक कारण यह है कि भले ही मानवजाति किसी पैग़म्बर के आदेशों और शिक्षा को अपनी जिद से न माने, मगर वह यह कह कर किसी पैग़म्बर को नहीं झुठला सकती है कि यह पैग़म्बर तो नीच जाति का है या इसका चरित्र खराब है। या इसको सोच समझ नहीं है या यह मूर्ख है। वह ऐसा कभी नहीं कह सकते। सभी पैग़म्बर सर्वोत्तम वंश, चरित्र, व्यक्तित्व वाले और बुद्धिमान थे।

इस तथ्य को ईश्वर ने कई बार पवित्र क़ुरआन में कहा है।

पैग़म्बरों की पाप से दैविक रक्षा

● ईश्वर पैग़म्बरों को खास तरीक़े से बनाता है और पैदा करता है और उसके साथ वह इस धरती पर भी उनकी सभी प्रकार की गलतियों और पापों से रक्षा करता है।

इस बात का सबूत क़ुरआन में हज़रत युसूफ (अ.स.) के जीवन-कथा से मिलता है। जो निम्नलिखित है;

● हज़रत यूसुफ (अ.स.) कनान में पैदा हुए। ग़ुलाम बनकर मिस्र (Egypt) में बिके। मिस्र के राजा के एक वज़ीर ने उनको खरीदा और अपने बेटे की तरह पाला। जब वह बड़े हुए तो बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व वाले हुए। उन पर वज़ीर की पत्नी जुलेखा आशिक हो गई। उसने एक बार हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) को कमरे में बुला कर कमरे के द्वार और खिड़की बंद कर दिये और उनसे सम्बन्ध करना चाहा। यह ईश्वर की मदद ही थी कि हज़रत यूसुफ (अ.स.) वहाँ से पीछा छुड़ाकर भागने में सफल हुए। इस बात को ईश्वर पवित्र क़ुरआन में इस तरह कहता है;

''और जब वह (हज़रत यूसुफ़) अपनी

युवावस्था को प्राप्त हुए तो हमने उन्हें निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया। और उत्तमकारों को इसी तरह हम बदला दिया करते है।''

जिस स्त्री के घर में वह रहते थे, वह उन पर डोरे डालने लगी। और द्वार बंद करके कहने लगी 'युसूफ़ जल्दी आओ।' हज़रत युसूफ़ (अ.स.) ने कहा, 'ईश्वर की शरण चाहता हूँ। वह (यानी तुम्हारे पति) तो मेरे आका (मालिक) हैं उन्होंने मुझे अच्छी तरह से रखा है। (मैं ऐसा जुल्म नहीं कर सकता) निश्चय ही ऐसे जालिम (पापी) कभी सफल नही होंगे।'

उस स्त्री ने उसका इरादा कर लिया, और यदि उसके रब की एक दलील (निशानी या प्रमाण) युसूफ़ के सामने न आ गई होती तो युसूफ़ भी उसकी ओर बढ़ते। उनके सामने अल्लाह की दलील (निशानी) आई ताकि हम युसूफ़ से बुराई और निर्लज्जता को दूर रखें। निसंदेह वह हमारे चुने हुए (नेक) बंदों में से थे।''

(पवित्र क़ुरआन १२:२३-२५)

(अर्थात ईश्वर ने ही हज़रत युसूफ़ (अ.स.) को निर्लज्जता व कुकर्म से बचाया।)

● हम साधारण लोग जब कोई ग़लती करते हैं तो दो फरिश्ते जो हमेशा मनुष्य के साथ रहते हैं, वह उसे लिख लेते हैं। फिर क़यामत के दिन हमने जो पाप और पुण्य किया है उसका फैसला होगा।

मगर पैग़म्बरों के साथ ऐसा नहीं होता है। ईश्वर कदम,कदम पर पैग़म्बरों का मार्गदर्शन करता है। और अगर उनसे बड़ी ग़लती होती तो तुरंत उन्हें दंड भी देता।

पैग़म्बरों का मार्गदर्शन

पैग़म्बरों के मार्गदर्शन और दंड के उदाहरण निम्नलिखित हैं,

● धनवान लोगों का समाज में दबदबा होता है। वह जो कहते हैं और करते हैं वह समाज सुनता और अपनाता है। अगर एक क़बीले का सरदार मुसलमान हो जाए तो उसका सारा क़बीला मुसलमान हो जाता है। इसलिए जब कोई सरदार हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आता तो आप उसका आदर करते और बहुत एकाग्रता से उसको धर्म की शिक्षा देते।

एक बार कई सरदार हज़रत मुहम्मद (स.) से मिलने आए और आप (स.) उनको कुछ समझा रहे थे। उसी समय एक अंधे और गरीब मुसलमान साथी (अब्दुल्ला बिन उम्मेकतूम) भी वहाँ आ गये और कुछ धर्म से संबधित सवाल आप (स.) से पूछना चाहते थे।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने चाहा कि पहले सरदारों से बात पूरी कर लें फिर अंधे साथी को उत्तर दें। सरदारों को धर्म सीखने की इतनी चाह न थी जितनी उन अंधे साथी को थी। ईश्वर के नज़र में सरदार और ग़रीब सब बराबर हैं। और ईश्वर चाहता है की जिसको धर्म के ज्ञान की अधिक चाह हो पहले उसी को ज्ञान दो। इसलिए ईश्वर ने फौरन पवित्र क़ुरआन की आयत (८०:१-११) अवतरित करके हज़रत मुहम्मद (स.) को सही तरीक़ा समझाया।

(तिरमिज़ी)

पैग़म्बरों को दैविक दण्ड

● पैग़म्बर को दंड देने का उदाहरण इस प्रकार है;

हज़रत यूनुस (अ.स.) Nineveh समुदाय के लिए पैग़म्बर थे। नैनवा बगदाद से 250 k.m दूर था। उन्होंने उस समुदाय को बहुत समझाया मगर वह न माने। आखिर में हज़रत युनूस (अ.स.) ने उस समुदाय के लिए बददुआ (श्राप) दी और वहाँ से दूसरे देश के लिए चल दिए। वह ईश्वर के आदेश से पहले ही वहां से

जा रहे थे। (जो के एक पैग़म्बर के लिए उचित न था) हज़रत यूनुस (अ.स.) एक नाव से दूसरे शहर के लिए रवाना हुए। समुद्र में जब तूफान आया और नाव तूफान में घिर गई तो नाव के डूबने का खतरा देखकर नाव चलाने वाले ने हज़रत यूनुस (अ.स.) को समुद्र में फेंक दिया और एक बड़ी मछली उनको निगल गई। इस तरह ईश्वर ने उनको एक बड़ी मछली के पेट में कैद कर दिया। हज़रत यूनुस (अ.स.) को अपनी गलती का अनुमान हुआ। उन्होंने पश्चात्ताप (तौबा) किया, तब कहीं जाकर ईश्वर ने उन्हें माफ किया। वरना वह क़यामत तक मछली के पेट में कैद रहते। (heefJe$e kegâjDeeve 21:87 keâe meejebMe)

● ईश्वर ने जिस शिक्षा या धर्म के साथ हज़रत मुहम्मद (स.) को भेजा था वह यह है कि ''ईश्वर एक है, और उसका कोई सहायक नहीं है। इस संसार का बनाने, संभालने और चलाने के लिए उसको किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है।'' मक्का के लोगों का ऐसा विश्वास था कि ईश्वर तो एक है मगर बहुत सारे देवी देवता उसकी सहायता करते हैं। और यही बड़ा मतभेद मुसलमानों और मक्का वालों में था।

एक मुसलमान के मन में जैसे ही यह विश्वास आ जाएगा कि कोई ईश्वर का सहायक है तो वह मुसलमान नहीं रह जाता है। मक्का के सरदार एक षडयंत्र (साजिश) रच रहे थे। वह चाहते थे कि मुसलमान इस बात को मान लें कि ईश्वर के सहायक हैं। इसलिए वह शांति और सद्भावना की बात करते और कहते कि, हम तुम्हारी कुछ बात मान लेते हैं और तुम हमारी कुछ बात मानो। और हमारे देवी देवता को कुछ महत्व दे दो। इस घटना का वर्णन पवित्र क़ुरआन में इस प्रकार है;

'ऐ मुहम्मद (स.)! ये तो इसी में लगे थे कि हमने जो वहयी (सत्य धर्म का ज्ञान) तुम्हारी ओर अवतरित कीया है उससे तुम्हें फेर दें, और तुम ऐसी बात हमारी तरफ से कहो जो हमने अवतरित नहीं की है। अगर तुम ऐसा करते तो वह तुम्हें घनिष्ठ मित्र बना लेते। यदि हम तुम्हें संभाल न लेते तो तुम उनकी ओर कुछ न कुछ झुकने के निकट जा पहुँचे थे। (अगर ऐसा होता तो) हम तुम्हें जीवन में भी दोहरा दंड देते,और मृत्यु के बाद भी दोहरा दंड देते। फिर तुम हमारे मुक़ाबले में अपना कोई सहायक न पाते।'(heefJe$e]kegâjDeeve 17: 73-75)

सारांश: -

● इस पाठ का सारांश यह है कि ईश्वर ने मनुष्य के पैदा होने के पहले ही पैग़म्बरों को नियुक्त किया था। उसने पैग़म्बरों को सर्वोत्तम वंश, व्यक्तित्व, आचरण और बुद्धि दी।

पैग़म्बरों के जीवनकाल में ईश्वर पैग़म्बरों का मार्गदर्शन करता रहता है और सभी प्रकार के पापों से उनकी सुरक्षा करता है।

और अगर कोई पैग़म्बर जान बूझ कर ईश्वर के आदेश को नहीं मानता या पाप करता, तो ईश्वर उसे फौरन दंड देता।

धरती पर ऐसा कभी नहीं हुआ कि कोई पैग़म्बर जीवन भर पाप भी करता रहा और पैग़म्बर भी बना रहा।

इसलिए धरती पर लगभग १,२४,००० पैग़म्बर आए और किसी ने कोई बुरा काम नहीं किया।

धर्म का कोई ग्रंथ कितना ही माननीय हो, अगर उसमें लिखा है कि पैग़म्बर ने कोई ग़लत काम किया या पाप किया है तो वह ग्रंथ ग़लत हो सकता है मगर पैग़म्बर पाप नहीं कर सकता है।

१०. पैग़म्बरों के दुश्मन कौन?

हज़रत ज़करिया (अ.स.)

• n]pejle .pekeâefjÙee (De.me.) एक महान पैग़म्बर थे। उनकी यह शिक्षा कि F&MJej एक है लोगों को अच्छी नहीं लगी। और लोगों ने उन्हें जान से मारना चाहा। वह दुश्मनों से बचते हुए ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक पेड़ के सीवा छुपने की कोई जगह न थी। उन्होंने उस पेड़ से शरण मांगी। पैग़म्बर की बात पेड़ कैसे टाल सकता था। उसका तना बीच से फट गया और हज़रत pekeâefjÙee (De.me.) उसमें समा गए। शैतान यह दृश्य देख रहा था। जब दुश्मन पीछा करते हुए वहाँ पहुँचे तो शैतान ने इशारा करके n]pejle pekeâefjÙee (De.me.) के छुपने की जगह उन लोगों को बता दी। और लोगों ने आरी से पेड़ को n]pejle .pekeâefjÙee (De.me.) के साथ बीच से चीर डाला। इस तरह एक महान पैग़म्बर को लोगों ने शहीद कर दिया।

हज़रत याहया (De.me.):-

• n]pejle याहया (De.me.) यह भी एक बुजुर्ग पैग़म्बर गुज़रे हैं। यह जिस प्रांत में पैग़म्बर हुए वहाँ का राजा (Hairo Antipass) अपनी भतीजी से शादी करना चाहता था। पैग़म्बर का काम ही है कि जब कुछ ग़लत हो तो लोगों को उससे सावधान कर दें। इसलिए उन्होंने राजा से कहा कि आप का अपनी भतीजी से शादी करना उचित नहीं है। यह बात Yeleerpeer Deewj Gme keâer ceeB (Hairo Dias) को बहुत बुरी लगी और उन्होंने राजा से उपहार के रुप में हज़रत याहया का सर मांगा, और उस दुर्भागी राजा ने उन दोनों को खुश करने के लिए n]pejle याहया (De.me.) का सर तन से जुदा करके उन्हें पेश कर दिया।

हज़रत ईसा (De.me.) :-

n]pejle ईसा (De.me.) भी एक महान पैग़म्बर थे। F&MJej ने उन्हें अपनी कुदरत से बगैर बाप के पैदा किया था। यह जब पालने में थे, तब ही से लोगों से बात करते और F&MJej का आदेश उन तक पहुँचाते थे।

Deuueen (F&MJej) ने इन्हें बहुत सारी चमत्कारी शक्ति दी थी। वह अंधों और कोढ़ियों को अच्छा करते, मिट्टी की चिड़िया बना कर फूँक मारते और वह जीवित होकर उड़ जाती। यहाँ तक कि वह मुर्दा व्यक्ति को भी Deuueen (F&MJej) के आज्ञा से जीवित कर देते।

बाईबल का एक श्लोक है कि, n]pejle ईसा (De.me.) ने कहा कि तुम ऐसे मत समझो कि में पुराने धर्म को नष्ट करने आया हूँ बल्कि मैं तो उसी धर्म को स्थापित करने आया हूँ।

(बाईबल St. Matew 5:17)

अर्थात् n]pejle ईसा (De.me.) से पहले n]pejle cetसा (De.me.) ने लोगों को जो धर्म सिखाया था, n]pejle ईसा (De.me.) ने वही शिक्षा लोगों को दी

और धर्म में आए बिगाड़ को दूर किया। n]pejle ईसा (De.me.) ३२ साल की आयु तक लोगों को निरंतर धर्म की शिक्षा देते रहे। मगर समाज के कुछ लोगों को उनकी शिक्षा अच्छी नहीं लगी। उन्होंने एक षड़यंत्र रचा और विद्रोह के झूठे आरोप में आप को गिरफ़्तार करवा कर जान से मारने की पूरी कोशिश की।

पैग़म्बरों से लोग दुश्मनी क्यों करते हैं?

● हमने तो सिर्फ तीन पैग़म्बरों का यहाँ वर्णन किया है मगर वास्तव में लोग हजारों पैग़म्बरों का क़त्ल कर चुके हैं।

मगर पैग़म्बरों की हत्या क्यों की जाती है?

क्या पाप किया था उन महान और पवित्र पैग़म्बरों ने?

आइए हम इस विषय में कुछ जानने की कोशिश करते हैं।

● जैसे राजनीति एक व्यवसाय बन चुका है। लोग नेता करोड़ों रुपया कमाने और सत्ता में रहने के लिए बनते हैं। इसी तरह बेईमान और चालाक लोगों द्वारा धर्म को व्यवसाय बनाना और उसके धार्मिक गुरु बन जाना प्राचीन काल से चला आ रहा है। इस में भी बहुत अधिक धन सत्ता और सम्मान मिलता है।

ईसाइयों के पोप का एक हज़ार वर्ष तक युरोप पर राज रहा। उनका आदेश टालने की या उनके विरुद्ध एक शब्द भी कहने की किसी यूरोपियन राजा में हिम्मत न थी।

यही हाल हर धर्म और हर प्रांत में धार्मिक गुरुओं का रहा है।

किसी भी पैग़म्बर के आते ही ऐसे Oeeefce&keâ गुरुओं की दुकान एक दम से बंद हो जाती थी। इसलिए ऐसे लोगों ने हमेशा पैग़म्बरों का विरोध किया।

● समाज के धनवानों में बहुत से ऐसे होते हैं जिन्होंने धन, गरीबों का शोषण करके कमाया होता है। पैग़म्बर आता ही इसलिए है कि ग़रीबों का शोषण बंद हो, अत्याचार खत्म हो, हर तरफ न्याय और शांति हो, इन्सान-इन्सान की दासता और ग़ुलामी से आज़ाद होकर सिर्फ अल्लाह (ईश्वर) का उपासक बने। मगर धनवान अपनी सत्ता और शोषण के व्यवसाय को बंद नहीं होने देना चाहता है इसलिए यह धनवान वर्ग भी हमेशा से पैग़म्बरों का शत्रु रहा है।

● पैग़म्बरों को सताने और बदनाम करने का यह काम उन पैग़म्बरों के जीवन के समाप्त होते ही खत्म नहीं हो जाता था, बल्कि उन पैग़म्बरों के धर्म और शिक्षाओं पर से लोगों का विश्वास कम करने के लिए लोग उनके मृत्यु के पश्चात् भी उनको बदनाम करने का काम जारी रखते थे।

उनके बदनाम करने के दो तरीके थे। एक तो वह उस पैग़म्बर की अवतरित ग्रंथ में गलत बातें शामिल करने का प्रयास करते थे। दूसरे वह उस पैग़म्बर के चरित्र को बदनाम करने की कोशिश करते थे।

● जो कुछ शिक्षा n]pejle मूसा (De.me.) ने लोगों को दिया था उसी का पालन n]pejle ईसा (De.me.) खुद भी करते और लोगों को भी करने का उपदेश देते।

n]pejle मूसा (De.me.) ने खुद भी विवाह किया था और वैवाहिक जीवन उनकी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग था। अगर n]pejle ईसा (De.me.) विवाह करते तो यह कोई पाप न था। न उनकी बदनामी होती। मगर n]pejle ईसा (De.me.) ने पूरी तरह अपने आप को धर्म की पुन: स्थापना के लिए अर्पित कर दिया था। ३२ साल की उम्र तक वह अविवाहित रहे, परन्तु जब उनकी

शिक्षा से परेशान होकर उनके दुश्मन उनकी जान के प्यासे हो गये तो ईश्वर ने उन्हें ज़िन्दा आसमान पर उ"e efueÙee~

आज उनके धरती से चले जाने के २००० साल बाद भी लोग उनके बारे में झूठी कहानियाँ गढ़ रहें हैं। और इस बात का प्रचार कर रहे है कि उनकी एक गुप्त पत्नी थी जिसका नाम ST. Mary Magdalene था। और उनका एक गुप्त पुत्र भी था जिसका नाम ST. Michael Lee~

इस विषय पर Dan Brown ने The Da Vinci Code नाम की पुस्तक लिखी है और इस विषय पर फिल्म भी बन चुकी है।

कॅथोलिक चर्च ने लोगों से इस फिल्म को न देखने का आग्रह किया था। मगर जिस काम से लोगों को रोका जाए उसे लोग और अधिक करते हैं।

इस तरह हज़रत ईसा (अ.स.) के दुश्मनों ने उनकी शिक्षा को बदलने की भरपूर कोशिश की। बाईबल हज़रत ईसा (अ.स.) के धरती से चले जाने के लगभग १०० वर्ष बाद पुस्तक के रुप में लिखा गया। पुस्तक के रुप में बाईबल को लिखते समय इस में ऐसी बातें भी शामिल की गईं जिसका एक धार्मिक आदमी कल्पना भी नहीं कर सकता है।

उदाहरण के तौर पर बाईबल में लिखा है, हज़रत लूत (अ.स.) Sodom (सदूम) शहर के लिए पैग़म्बर थे। वहाँ की अधिकतर जनता Homosexual थी। अर्थात वह औरतों को छोड़कर पुरुषों से काम इच्छा पूर्ति करते थे। इसलिए ईश्वर ने दो फरिश्तों को भेजा जिन्होंने हज़रत लूत (अ.स.) और उनके परिवार को बचा लिया (सिवाय उनके पत्नी के)। सारे शहर को जलती गंधक की वर्षा करके मार डाला।

इस घटना के बाद हज़रत लूत (अ.स.) और उनकी दो लड़कियाँ जंगल में रहने लगे। उनकी लड़कियों को जब इस बात का अनुमान हुआ कि उनसे विवाह करने के लिए अब कोई पुरुष नहीं बचा है तो उन्होंने अपने बाप हज़रत लूत (अ.स.) को ही खूब शराब पिलाई और उनके साथ रात गुजारी। इस तरह दोनों गर्भवती हो गईं। (yeeF&yeue Genesis Chp. 19, Verses-30)

यह जो बाईबल में लिखा है क्या यह संभव है?

नहीं!

क्योंकि फरिश्तों ने केवल एक शहर को खत्म किया था। सारे संसार को नहीं। इसलिए दूसरे शहरों में पुरुष थे जिनसे n]pejle लूत (De.me.) की लड़कियों का विवाह हो सकता था। और हर धर्म में शराब पीना हराम था। इसलिए कोई पैग़म्बर शराब पीकर ऐसा मदहोश नहीं हो सकता कि उसे पता ही न चले की वह किससे काम इच्छा पूर्ति कर रहा है।

● इसी तरह बाईबल में लिखा है कि n]pejle दाऊद (De.me.) को उनके एक सैनिक की पत्नी बहुत पसंद आ गई, तो उन्होंने उस सैनिक को युद्ध पर भेज दिया और उसकी पत्नी से अपनी इच्छा पूरी की। (समोएल २-११, नूर सरमदी Page-191)

n]pejle दाऊद (De.me.) (David) Skeâ ceneve hew]iecyej ieg]pejs nQ~ Jen Skeâ efove Keevee Keeles Deewj Skeâ efove GheJeeme (jes]pee) jKeles~ F&MJej ves peyetj «ebLe Gvehej DeJeleefjle efkeâÙee Lee~ Gvekeâer DeeJee]pe Fleveer DeÛÚer Leer efkeâ peye Jen peyetj

heÙ{les lees henelÙ[(heye&le) Yeer Gvekesâ meeLe Jepo ceW Deeles Ùeeveer Petceles Les~ Jen efheâefuemleerve kesâ jepee Yeer Les~ Gvekeâe yesše n]pejle meguewceeve (De.me.) Yeer hew]iecyej Deewj efheâefuemleerve Menj kesâ jepee ngSs, Deewj n]pejle meguewceeve (De.me.) keâer 99 heeflveÙeebbb Leerb~ n]pejle oeTo (De.me.) Ûeenles lees 200 heeflveÙeebb jKe mekeâles Les~ Ùen kewâmes nes mekeâlee nw efkeâ Skeâ hew]iecyej pees jepee Yeer nw Deewj lehemJeer Yeer nw Jen Deheves Skeâ mewefvekeâ mes OeesKee keâjs~ Ùen DemebYeJe nw ceiej yeeF&yeue ceW efueKee ngDee nw~

इसका क्या कारण है?

इसका कारण समाज के सलमान रुश्दी जैसे लोग हैं। सलमान रुश्दी में क्या खास बात है? उसकी सोच में सेक्स से रुचि और धर्म से नफ़रत भरा पड़ा है। इसलिए जो सेक्स से प्यार और धर्म से नफ़रत करते हैं वह उनका हीरो है। उसे ब्रिटिश सरकार ने (Sir) की पदवी दी है। आज याही सलमान रुश्दी अगर हज़रत मुहम्मद (स.) की तारीफ में कुछ कहे या लिखने लगे तो वही लोग उसे आतंकवादी घोषित कर देंगे।

तो सलमान रुश्दी जैसे लोगों ने बहुत कुछ ग़लत लिखा। अपनी इच्छा और स्वार्थ के अनुसार सच्चाइयों को बदल डालने की भरपूर कोशिश करते रहे और सही शिक्षाओं को तोड़मरोड़ कर अपने गंदे चरित्र के अनुरुप बनाते रहे। सत्ताधारी समाज ने उसे स्वीकार किया और जानबूझ कर पवित्र ग्रंथों में उसे शामिल करवा दिया।

हज़रत ईसा (अ.स.) को बदनाम करके लोगों को क्या मिलेगा?

अगर हज़रत ईसा (अ.स.) के चाल चलन पर लोगों को शक हुआ तो उनकी ईसाई धर्म से भी आस्था उठ जाएगी।

जब आदमी ईश्वर पर विश्वास करता है तो उसकी शक्ति बढ़ जाती है और वह अन्याय के विरुद्ध लड़ने से भी नहीं डरता। जब आदमी को मरने के बाद ईश्वर के सामने अपने कर्मों का हिसाब किताब देने का यकीन होता है तो वह पाप नहीं करता है और जीवन में ऐश व आराम कम करता है।

नास्तिक डरपोक होता है। वह मरने से बहुत डरता है। और जब मरने के बाद स्वर्ग की कल्पना नहीं रहती है तो लोग इसी जीवन में हर प्रकार का ऐश करना चाहते हैं। चाहे इसके लिए उन्हें गलत काम ही क्यों न करना पड़े और एक तरह से वह जानवरों की तरह जीते हैं।

यहूदी सारे संसार पर राज करना चाहते हैं। अपने चाह को वास्तविकता में बदलने के लिए उनकी एक गुप्तलिखित योजना है जिसे (Protocol) कहा जाता है।

इस प्रोटोकॉल में लिखा है कि अगर तुम संसार पर राज करना चाहते हो तो लोगों का धर्म से विश्वास उठा दो। और ऐसी ही योजना कई कट्टर धार्मिक संस्थाओं और प्रगतिशील देशों की भी है।

11. क्या हज़रत मुहम्मद (स.) हिंसा की शिक्षा देते थे?

• विकृत बुद्धि के लोगों का यह आरोप है कि हज़रत मुहम्मद (स.) हिंसा की शिक्षा देते थे। आईए हम देखते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) हिंसा की शिक्षा देते थे या खुद हिंसा बर्दाश्त करके अहिंसा की शिक्षा देते थे।

• हज़रत मुहम्मद (स.) को अल्लाह (ईश्वर) ने ४० वर्ष की आयु में अपना संदेश लोगों तक पहुँचाने का आदेश दिया था। वह ६३ वर्ष की आयु तक जीवित रहे। मगर ५५ वर्ष की आयु तक अर्थात् पैग़म्बरी की ज़िम्मेदारी मिलने के शुरु के १५ वर्ष तक विरोधियों द्वारा अत्याचार करने पर उनको और अन्य मुसलमानों को हथियार से या और किसी प्रकार से बदला लेने की अल्लाह की आज्ञा नहीं थी। हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके अनुयायी या तो हिंसा सहन करते, या मक्का शहर छोड़ कर किसी अन्य देश या शहर चले जाते।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने जो हिंसा और अन्याय बरदाश्त किया है उसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं;

• हज़रत मुहम्मद (स.) को पैग़म्बरी की ज़िम्मेदारी देने के बाद तीन वर्ष तक अल्लाह ने उन्हें केवल व्यक्तिगत स्तर पर लोगों में धर्म का प्रचार करने का आदेश दिया था। और चौथे वर्ष से उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर भाषणों के माध्यम से प्रचार करने का आदेश दिया।

चौथे वर्ष जैसे ही हज़रत मुहम्मद (स.) ने काबा शरीफ के पास लोगों को अल्लाह (ईश्वर) का संदेश दिया, लोगों ने उन्हें घेर लिया। हज़रत मुहम्मद (स.) को बचाने के प्रयास में हज़रत ख़दीज़ा (रज़ि.) के बड़े बेटे हज़रत हारिस बिन अबी हाले (रज़ि.) शहीद हो गए।

• अबू लहब और उक्बा बिन अबी मुअीत यह दोनों हज़रत मुहम्मद (स.) के पड़ोसी थे। यह दोनों हमेशा हज़रत मुहम्मद (स.) के घर में गंदगी फेंकते रहते। हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत सवेरे ही नमाज़ पढ़ने काबा शरीफ जाते। जिस रास्ते से हज़रत मुहम्मद (स.) काबा शरीफ जाते अबू लहब की पत्नी उस रास्ते में कांटे बिछा देती ताकी हज़रत मुहम्मद (स.) को तकलीफ पहुँचे।

• अबू लहब हज़रत मुहम्मद (स.) का सगा चाचा था। और हज़रत मुहम्मद (स.) की दो बेटियों का रिश्ता अबू लहब के दो बेटों से हुआ था। (बिदाई नहीं हुई थी) अबू लहब के दबाव में आकर दोनों बेटों ने हज़रत मुहम्मद (स.) की दोनों बेटियों को तलाक दे दिया। अरब देश में इसे बहुत बुरा और अपमान समझा जाता था।

• पैग़म्बरी के पांचवें साल एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) काबा शरीफ में नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप सजदे में गये तो उक्बा बिन अबी मुअीत ने हज़रत मुहम्मद (स.) की गर्दन पर ऊंट की ओझडी (आंत) लाकर रख दिया। जो इतनी वज़नी थी कि आप (स.) सजदे से सर न उठा सके। जब आप (स.) के घर वालों को मालूम हुआ तो हज़रत फातिमा (रज़ि.) दौड़ते हुए आईं और आप (स.) की गर्दन से ऊंट की गंदी ओझड़ी (लाद) को हटाया।

● एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) काबा शरीफ में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक्बा बिन अबी मुअीत आया और हज़रत मुहम्मद (स.) की गर्दन में चादर का फंदा डाल कर पेंच देने लगा। गला घुटने से आप (स.) की आँखें निकल पड़ीं। जब हज़रत अबू बक़र (रज़ि.) ने बीच में पड़कर आप (स.) को फंदे से आज़ाद किया तो उन्होंने हज़रत अबू बक़र (रज़ि.) को भी बहुत मारा।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के एक साथी (सहाबी) कहते हैं। मुसलमान होने से पहले मैंने मक्का में देखा कि एक खूबसूरत नौजवान है और वह लोगों को इस्लाम की बात समझा रहा है। 'मैंने पूछा यह कौन है?' किसी ने कहा यह कुरेश क़बीले का एक नौजवान मुहम्मद (स.) हैं जो बेदीन (अधर्म) हो गया है। सुबह से वह नौजवान लोगों को धर्म की बात समझाता रहा यहाँ तक कि सूरज सिर पर आ गया। इतने में मैंने देखा एक आदमी ने आकर उनके मुंह पर थूक दिया। दूसरे ने गिरहबान फाड़ दिया, तीसरे ने सिर पर मिट्टी डाल दी और चौथे ने चेहरे पर थप्पड़ मारा। लेकिन नौजवान की ज़बान से बद्दुआ (श्राप) का एक शब्द न निकला।

इतने में एक लड़की फूटफूट कर रोती हुई पानी का प्याला लेकर आयी। लड़की को रोता हुआ देखकर हज़रत मुहम्मद (स.) की आंखें भर आईं और कहा ''बेटी अपने बाप का ग़म न कर। तेरे बाप की अल्लाह रक्षा करता है। और इस्लाम धर्म हर कच्चे पक्के मकान में पहुँचेगा।'' एक आदमी से मैंने पूछा यह लड़की कौन है? किसी ने जवाब दिया कि इनकी बेटी जैनब (रज़ि.) हैं।

(बसीरत अफरोज़ वाक्यात, सफा नं २२)

● हज़रत मुहम्मद (स.) की यही बड़ी बेटी कुछ वर्ष बाद मक्का से मदीना जा रही थीं। रास्ते में अकरमा बिन अबू जहल और उसके साथियों ने रास्ता रोक लिया और आप (रज़ि.) के ऊंट को ज़ख्मी कर दिया। जिससे आप ऊंट की पीठ से ज़मीन पर आ गिरीं। आप गर्भवती थीं। आप जख़्मी हो गईं, हमल गिर गया और इन्हीं जख्मों के कारण कुछ वर्षों बाद आपका देहांत हो गया।

● पैग़म्बरी के सातवें साल जब मक्का के सरदारों को लगा कि इस्लाम तो फैलता ही जा रहा है और इसे रोकना असंभव हो गया है तो उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) के सारे क़बीले का सामाजिक बहिष्कार कर दिया और आप के सारे क़बीले को शहर से बाहर दो पहाड़ी के बीच रहने पर मजबूर कर दिया।

इस सामाजिक बहिष्कार के कारण क़बीले का सारा अनाज़ खत्म हो गया। छोटे छोटे बच्चे जब भूख से रोते तो उनकी आवाज़ घाटी के बाहर तक सुनाई देती। कुछ नौजवान तो पुराने चमड़े भी भूख मारने के लिए उबाल कर खा जाते। हज़रत मुहम्मद (स.) और सारा क़बीला तीन साल तक ऐसी तकलीफ उठाता रहा। आप (स.) की पत्नी हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) जो लगभग ६५ साल की थीं और आप (स.) के चाचा अबू तालिब जो लगभग ८० साल के थे, इस सामाजिक बहिस्कार से इतने कमजोर और बीमार हो गए थे कि बहिस्कार समाप्त होने के एक वर्ष के अंदर ही दोनों का इन्तकाल (देहांत) हो गया।

● पैग़म्बरी मिलने के दसवें साल हज़रत मुहम्मद (स.) ने तायफ़ का सफ़र किया ताकि वहां भी इस्लाम की रोशनी फैलायें। वहां के तीनों सरदार, अब्दिया लैल, मसऊद और हबीब का जवाब बहुत अपमानित करनेवाला था। न वह ख़ुद सुनना चाहते थे और न यह चाहते थे, कि हज़रत मुहम्मद (स.) उनकी

क़ौम में इस्लाम का प्रचार करें। इसलिए शहर के बदमाश और गुंडों को हज़रत मुहम्मद (स.) के पीछे लगा दिया कि आप (स.) जहां जायें आप (स.) की हंसी उड़ायें और आप (स.) जिधर से भी गुज़रे आप पर पत्थर फेकें। हज़रत मुहम्मद (स.) दस या बीस दिन तक ये मुसीबतें झेलते रहे और सब्र करते रहे। आख़िरी दिन तो तायफ़ के लोगों ने ज़ुल्म की हद कर दी। वह अपने हाथों में पत्थर ले कर लाईन से खड़े हो गये। हज़रत मुहम्मद (स.) कदम उठाते और ज़मीन पर रखते तो वह बदबख़्त आप (स.) के टख़्नों (Ankle) की हड्डियों पर पत्थर मारते। चूंकि उनका कत्ल का इरादा न था सिर्फ यातना देना था। इसलिए तीन मील तक वह आप (स.) का इसी तरह पीछा करते रहे और पत्थर बरसाते रहे। उनकी बस्ती से निकलते निकलते जब आप (स.) थक कर और ज़ख्मों से चूर होकर बैठ जाते तो फिर वह गुंडे आप (स.) का बाजू पकड़कर खड़ा कर देते, गालियां देते, तालियां बजाते, आवाज़ कसते और चलने पर मज़बूर करते और फिर उसी तरह पत्थर की बारिश करते। पत्थरों से इतनी चोटें आयीं कि हज़रत मुहम्मद (स.) के जूते ख़ून से भर गए। जिस्म ज़ख्मों से चूर हो गया और फिर यहां तक कि आप (स.) बेहोश होकर गिर पड़े। हज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने आप (स.) को अपनी पीठ पर उठा कर आबादी से बाहर लाये। (efme-meyes Denceo cegpeleyee)

● मक्का में तकरीबन तेरह साल तक हज़रत मुहम्मद (स.) तकलीफ़ उठाते रहे। लोग ज़लील हरकतें करते, गुन्डों के झुण्ड हज़रत मुहम्मद (स.) के पीछे आवाज़ें कसते। रास्ते में गंदगी उनके ऊपर डाली जाती, रातों में चलने वाले रास्ते में कांटे बिछाये जाते। गालियां दी जातीं, सर पर मिट्टी फेंकी जाती। अबू जहल ने खुद एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) को पत्थर से मार डालने की कोशिश कर डाली। इस तरह ऐसी हज़ारों तकलीफ़ें आप (स.) बर्दाश्त करते रहे। पैग़म्बरी के तेरहवें वर्ष कुरैश के चालीस दरिन्दों ने हज़रत मुहम्मद (स.) को शहीद करने के इरादे से रात भर आप (स.) के घर को घेरे रखा। मगर आप (स.) सुरक्षित मक्का से मदीना हिजरत (Migration) कर गये।

● ग़ज्वे-ए-ओहद के दिन अब्दुल्लाह इब्ने उमैय्या ने इस ज़ोर का हमला किया कि हज़रत मुहम्मद (स.) का चेहरा मुबारक ज़ख्मी हो गया। खोत (Helmet) के दो हल्के (Ring) चेहरा मुबारक में धंस गये और होंठ कट गया। उत्बा अबी वकास ने पत्थर फेंक कर मारा जिससे नींचे के दांत मुबारक टूट गये और होंठ कट गया। अब्दुल्लाह बिन शहाब ज़ौहरी ने पत्थर मारकर पेशानी लहूलुहानकर दिया। खोत की रिंग चेहरे में इतनी गहरी चुभ चुकी थी कि जब हज़रत अबू उबैद इब्न जर्राह ने खोत के एक रिंग को दांतों से पकड़कर ज़ोर से खींचा तो हज़रत अबू उबैद इब्न जर्राह का दांत भी टूट गया और हज़रत अबू उबैद पीठ के बल ज़मीन पर गिर पड़े। इसी तरह जब दूसरा रिंग दांत से पकड़कर खींचा तो इतना ज़ोर लगाना पड़ा कि उनका दूसरा दांत भी टूट गया। हज़रत मुहम्मद (स.) के ज़ख्मों से ख़ून किसी तरह बंद नहीं हो रहा था। ज़ख़्मी हालत में कुछ दूर चले ताकि सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाएं। कि अबू आमिर फ़ासिक़ के खोदे हुए गड्ढे में गिर गए। जिसे उसने पत्तों से ढांक रखा था। हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) की मदद से बड़ी मुश्किल से गड्ढे से निकल कर ऊंचाई पर तशरीफ ले गये। (efme-meyes Denceo cegpeleyee)

● इतनी हिंसा बर्दाश्त करने के बाद भी कभी

आप (स.) ने अपने दुश्मनों को श्राप नहीं दिया। मक्का से मदीना जाने के आठ साल बाद जब आप (स.) अपने दस हज़ार साथियों के साथ मक्का पहुँचे, तो मक्का के जिन लोगों ने पिछले २१ साल तक आप (स.) और आपके साथियों को हर प्रकार की यातनाएं दीं थीं। कई बार मदीना पर हमला किया, और जान से मार डालना चाहा था। मगर उन पर पूरी तरह विजय पाने के बाद भी आप (स.) ने किसी एक भी आदमी से बदला नहीं लिया, और सबको माफ कर दिया। क्या इन्सानी इतिहास में और किसी व्यक्ति की दयालुता का ऐसा उदाहरण मिलता है?

कोई नहीं!

अहिंसा की इस्लामिक शिक्षा: -

● यह तो वह उदाहरण थे जिसमें हज़रत मुहम्मद (स.) ने हिंसा को बर्दाश्त किया। अब हम आप (स.) की इस्लामी शिक्षा का अध्ययन करते हैं।

● अल्लाह (ईश्वर) पवित्र क़ुरआन में कहता है जिसने किसी इन्सान को क़त्ल के बदले, या धरती पर बिगाड़ फैलाने के दंड के सिवा किसी और कारण से क़त्ल कर डाला, तो (यह इतना बड़ा पाप है जैसे) उसने मानो सारे ही इन्सानों का क़त्ल कर दिया। और जिसने किसी बेगुनाह की जान बचाई उसने मानो सारे इन्सानों को जीवनदान दिया।

(पवित्र क़ुरआन सूरे माईदा- आयत ३२)

● अल्लाह (ईश्वर) पवित्र क़ुरआन में कहता है देश में दंगे होने की चाह न करो। क्योंकि ईश्वर (अल्लाह) दंगे करने वालो को पसंद नहीं करता।

(पवित्र क़ुरआन सूरे कसस- आयत ७७ का सारांश)

● आप (स.) ने कहा तुम धरती वालों से प्रेम और उपकार करो, तो जो आकाश पर है (ईश्वर) वह तुमसे प्रेम करेगा और तुम पर उपकार करेगा। (DeyetoeGo, eflejefcepeer)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा ''वह व्यक्ति मुसलमान नहीं हो सकता है जिससे उसका पड़ोसी परेशान हो।'' (yegKeejer)

हज़रत मुहम्मद (स.) का आदेश: -

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया दुश्मन से युद्ध की इच्छा न करो। और जब युद्ध शुरु हो जाए तो सब्र करो। (yegKeejer efkeâleeyegue efpeneo 53)

● हज़रत अब्दुल्ला बिन अफी (रज़ि.) कहते हैं कि एक बार युद्ध के मोर्चे पर हज़रत मुहम्मद (स.) ने शाम तक दुश्मनों के हमले का इंतज़ार किया, लेकिन दुश्मन ने हमला नहीं किया। (और हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी पहले हमला नहीं किया।) सूरज डूबने के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने फौजियों को संबोधित किया और कहा युद्ध की इच्छा मत करो, और शांति और समृद्धि की प्रार्थना करो। लेकिन जब तुम पर हमला हो तो सब्र से इंतज़ार करो और बहादुरी से लड़ो। (yegKeejer 156-56)

● हज़रत अबू सईद (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) से किसी ने पूछा कि 'कौन सा बंदा (व्यक्ति) सर्वश्रेष्ठ और क़यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह के नज़दीक बुलंद दर्जे (High Status) वाला होगा?' हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया 'अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करने वाले मर्द और औरतें!' हज़रत मुहम्मद (स.) से फिर पूछा गया कि 'या रसूलुल्लाह! क्या यह अल्लाह के रास्ते में

शहीद होने से भी और बुलंद दर्जा (High Status) दिलाने वाला है?'

हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा, 'अगर कोई व्यक्ति अल्लाह के दुश्मनों पर तलवार चलाए यहाँ तक कि (अनथक तलवार चलाते रहने के कारण) वह तलवार टूट जाए और वह खुद भी खून में रंगीन हो जाए (शहीद हो जाए) फिर भी अल्लाह तआला की याद करने वाले का (प्रार्थना करने वाले का) दर्जा (Status) उस व्यक्ति (शहीद) से बड़ा होगा।'

(अहमद तिर्मिजी Vol-१, मुन्तखब अबवाब, हादीस ४२९)

● हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि.) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया कि, ''सबसे ज़्यादा बाईज़्ज़त (सम्मानित) व्यक्ति कौन है?'' (इसका मतलब यह है कि कौन सा व्यक्ति क़यामत के दिन सफल और सम्मानित होगा?) हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब में फ़रमाया, ''जिस बंदे ने लंबी आयु पायी और नेक (पुण्य के) कर्म किए।'' फिर उस व्यक्ति ने सवाल किया, ''सबसे ज़्यादा बुरा आदमी कौन है?'' (इसका मतलब यह है कि कौन सा व्यक्ति नर्क में रहेगा और क़यामत के दिन सज़ा पाऐगा?) हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब में फ़रमाया, ''जिस बंदे ने लंबी आयु पायी और बुरे कर्म करता रहा।'' (cegmveo Denceo, cee®hegâue Deneoerme-82)

● हज़रत उबेद बिन ख़ालिद (रज़ि.) कहते हैं कि दो व्यक्ति मदीना आकर मुसलमान हो गए। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन दोनों का एक अन्सारी सहाबी (स्थानीय मुसलमान साथी) के साथ रहने का इंतज़ाम कर दिया। फिर यह हुआ कि उनमें से एक साहब कुछ ही दिनों में जिहाद में शहीद हो गए फिर एक हफ़्ते बाद दूसरे साहब का भी देहांत हो गया। (यानी उनकी मृत्यु किसी बीमारी से घर ही पर हुई), तो हज़रत मुहम्मद (स.) के साथियों ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़ना दिया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वाले उन साथियों से पूछा कि आप लोगों ने (नमाज़े जनाज़ा) में क्या कहा (यानी मरनेवाले भाई के हक़ में तुमने अल्लाह से क्या दुआ की?) उन्होंने कहा कि हमने उसके लिए यह दुआ की कि अल्लाह तआला उनको मुक्ति दे और उन पर कृपा करे और अपने उस भाई और साथी के साथ कर दे जो पहले शहीद हो गए थे। यह जवाब सुनकर हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया, फिर उसकी (बाद में मरने वाले की) वह नमाज़े कहाँ गयीं जो उस शहीद होने वाले भाई की नमाज़ों के बाद उन्होंने पढ़ी। और दूसरे वह नेक कर्म कहाँ गए जो उस शहीद के आमाल के बाद उन्होंने किए, उसके बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया, ''उन दोनों के मुकामात (Status) में उससे भी ज़्यादा अंतर है जितना कि ज़मीन और आसमान के दरम्यान अंतर है।''

(अबू दाऊद, निसाई, मआरिफुल हदीस जिल्द २, हदीस ८३)

व्याख्या: हज़रत मुहम्मद (स.) के इरशाद (कहने) का मतलब यह था कि तुमने बाद में साधारण मौत मरने वाले उस भाई का दर्जा पहले शहीद होने वाले उस भाई से छोटा (कम) समझा, इसलिये तुमने अल्लाह से दुआ की कि अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल और करम से बाद में साधारण मौत मरने वाले को भी शहीद भाई के साथ कर दे। जबकि बाद में मरने वाले भाई ने शहीद होनेवाले भाई की शहादत के बाद भी जो नमाज़ें पढ़ीं, और जो रोज़े रखे और जो दूसरे नेक काम किए? उससे उसका दर्जा पहले शहीद होने वाले भाई से ज़्यादा बुलंद (ऊँचा) हो चुका है। यहाँ तक कि दोनों के मुक़ामात (Status) और दर्जात में ज़मीन और आसमान से ज़्यादा अंतर है।

(अबू दाऊद, निसाई, मआरिफुल हदीस जिल्द २,

हदीस ८३)

इन हदीसों पर विचार कीजिये। इस्लाम की शिक्षा यह नहीं है कि धर्म के लिए जान देना और जान लेना ही बहुत पुण्य का काम है। बल्कि इस्लाम की शिक्षा है कि यदि लंबी आयु तक जीवित रहो और अल्लाह (ईश्वर) की प्रार्थना करते रहो तो श्रेष्ठ हो जाओगे।

● हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया, ''सारी मख़लूक (प्राणी) अल्लाह का परिवार है और अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा वह पसंद है जो उसकी मख़लूक से नेक व्यवहार (सुलूक) करता है।''

(मिश्कात, तर्जुमानुल हदीस, जिल्द २, हदीस २३९)

● हज़रत अबू हूरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया, ''अल्लाह तआला क़यामत के दिन एक व्यक्ति से पूछेगा, ''ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार था, भूखा और प्यासा था, मगर तूने मेरी देखभाल नहीं की और मुझे न खाना खिलाया न पानी पिलाया।''

वह व्यक्ति कहेगा, ऐ मेरे रब! मैं कैसे आप की देखभाल करता। आप तो सारे ब्रह्माण्ड के मालिक हो। अल्लाह तआला फरमाएगा, क्या तू नहीं जानता मेरा फलाँ बंदा बीमार और भूखा-प्यासा था। अगर तू उसकी देखभाल करता और खाना खिलाता, पानी पिलाता तो मुझे उसके पास पाता।

(lejpegceeves noerme, Vol-2 noerme 245)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया, कि एक आदमी को रास्ता चलते हुए बहुत प्यास लगी। वह एक कुंए के क़रीब पहुँचा। कुंए के अंदर उतरकर अपनी प्यास बुझायी और बाहर आया। बाहर आकर उसने देखा कि एक प्यासा कुत्ता गीली मिट्टी चाट रहा था। उसने अपने दिल में कहा कि कुत्ता अपनी प्यास की अधिकता से तड़प रहा है। जैसा मैं तड़प रहा था। इसलिए वह दुबारा कुएं में उतरा। अपने जूते में पानी भरा। अपने दातों से उस जूते को पकड़कर कुएं से बाहर आया और कुत्ते की प्यास बुझायी। अल्लाह तआला को यह अदा (काम) पसंद आयी और उस बंदे के गुनाहों को माफ़ कर दिया।

यह सुनकर लोगों ने पूछा, ''ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! क्या हमें जानवरों की सेवा करने पर भी पुण्य मिलेगा?'' हज़रत मुहम्मद (स.) ने फ़रमाया, ''हर जानदार (प्राणी) की सेवा करने पर पुण्य मिलेगा।'' (यानी हर जानदार की सेवा करने पर सवाब (पुण्य) मिलेगा।) (yegKeejer efpeuo 3, efkeâleeye 646 veb. /43)

● हजरत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि, हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुझसे कहा, 'ऐ मेरे प्यारे बेटे। अगर तुम्हारे लिए संभव हो कि ऐसा जीवन गुज़ारो जिसमें किसी के लिए तुम्हारे हृदय में कोई ग़लत भावना न हो तो ज़रुर ऐसा जीवन गुज़ारो। और यह मेरे जीने का तरीक़ा है। जो मेरे जैसा जियेगा तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वह मुझसे प्रेम करता है। और जो मुझसे प्रेम करेगा वह मेरे साथ स्वर्ग में रहेगा।' (noerme cegefmuece)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि, 'मुसलमानों के शासन में मुसलमान शासकों का यह कर्तव्य है कि ग़ैर-मुस्लिम जनता के जान, माल और सम्मान की रक्षा करें। अगर कोई मुसलमान एक ग़ैर-मुसलमान की जायदाद जबरदस्ती ले लेता है, या उनका शोषण करता है, या उनको कोई तकलीफ देता है तो क़यामत के दिन जब ईश्वर के सामने सब को अपने कर्मों का हिसाब किताब देना होगा, उस दिन मैं (हज़रत मुहम्मद) उस ग़ैर-मुस्लिम

की तरफ से अल्लाह के न्यायालय में उस मुसलमान के विरुद्ध मुकदमा लड़ूँगा।'

(अबू दाऊद, सफीना निजात १५१)

पवित्र क़ुरआन में युद्ध की शिक्षा क्यों?

● आप ने देखा कि इस्लाम में कहीं हिंसा की शिक्षा नहीं है।

तो फिर क़ुरआन में वह आयतें क्यों हैं जिसमें काफिरों (अधर्मियों) से युद्ध करने के लिए कहा गया है? इसके चार कारण निम्नलिखित हैं।

न्याय (Justice) :-

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने जब अल्लाह (ईश्वर) का पैग़ाम लोगों तक पहुँचाना शुरु किया तो हज़रत सुमैया (रज़ि.) ने और उनके परिवार ने इसे स्वीकार किया और वह मुसलमान हो गए।

मक्का के लोग और खास करके धनवान और सरदार यह नहीं चाहते थे कि कोई भी इस्लाम धर्म स्वीकार करे। और जो मुसलमान होता उसे भयानक यातनाएँ देते।

● उन लोगों ने हज़रत सुमैया (रज़ि.) उनके पति हज़रत यासिर (रज़ि.) बिन आमिर और उनके दो में से एक बेटे को यातनाएँ देकर शहीद कर दिया।

● इन्हीं लोगों ने हज़रत खब्बाब (रज़ि.) को तपती धूप में आग के अंगारों पर लिटा कर सीने पर पत्थर रख दिया। वह आग उनकी चरबी पिघलने से बुझी। हज़रत खब्बाब (रज़ि.) की जान तो बच गई मगर बाक़ी उमर पीठ पर केवल चमड़ी और हड्डी थी मांस बिल्कुल जल चुका था।

● मक्के के लोग जो नहीं चाहते थे कि ईश्वर के सच्चे संदेश पर लोग चलें उन्हीं लोगों ने एक सहाबिया को एक ऊंट की चमड़ी में बंद करके सिल दिया और धूप में फेक दिया, और वह उसमें तीन दिन तक तड़पती रहीं और अंत में मर गई।

● ऐसे हज़ारों लोग थे जिन्हें लोग बहुत यातनाए देते और अत्याचार करते। ऐसे लोगों के लिए अल्लाह (ईश्वर) ने पवित्र क़ुरआन में निम्नलिखित आदेश दिए,

● 'और जो अपने ऊपर जुल्म किये जाने के बाद (बराबर का) बदला लें तो ऐसे लोगों के विरुद्ध (उलाहना) का कोई मार्ग नहीं (इन पर कोई इलज़ाम नहीं)। (उलाहना) का मार्ग तो केवल उनके विरुद्ध है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और धरती में नाहक उपद्रव मचाते हैं। यही लोग हैं जिनके लिए (नर्क में) दुःख दायिनी यातना है। और जो सब्र करे और क्षमा कर दे तो निश्चय ही यह बड़े साहस के कामों में से है।' (heefJe$e]kegâjDeeve 42, 41-43)

● पवित्र क़ुरआन के इन आयतों को फिर से पढ़कर विचार करो। इन आयतों में ऐसा नहीं कहा गया है कि तुम ज़रुर बदला लो। बल्कि ऐसा कहा गया है कि अगर कोई बदला ले ले तो कोई बात नहीं वरना व्यक्तिगत स्तर पर मुसलमानों को यातनाएँ देने वालों को क्षमा करने की शिक्षा यह कह कर दी गई है की क्षमा करना यह बहुत साहस का काम है।

आत्मरक्षा (Self Defence) :-

● जब हज़रत मुहम्मद (स.) मक्का से मदीना चले गए तब भी मक्का वालों ने दो बार मदीना पर हमला किया, और तीसरी बार सारे अरब

देश से १०,००० सैनिक जमा करके मदीना पर धावा बोल दिया। मुसलमान केवल ३००० थे। वह इतनी बड़ी सेना का सामना नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने शहर की सीमा पर गहरी खाईं (Trench) खोद कर मदीना शहर का बचाव किया। मगर उन सब कबीलों को जिन्होंने एक साथ गुट बना कर मदीना पर हमला कर दिया था, अगर उन्हें बाद में एक-एक करके पराजित न किया जाता तो यह उससे भी बड़ी सेना लेकर फिर हमला कर देते। इसलिए ईश्वर ने मुसलमानों को उनसे लड़ने का आदेश इस प्रकार दिया।

● 'ऐ ईमान लाने वालो (एक ईश्वर को मानने वालो)! उन क़ाफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास हैं, और चाहिए कि वे तुममें सख़्ती पायें, और जान रखो कि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो अल्लाह से डर रखने वाले हैं।'

(पवित्र क़ुरआन ९-१२३)

● इस आयत में काफिरों (इन्कार करने वालों) से ईश्वर युद्ध करने का आदेश इसलिए दे रहा है कि वह मुसलमानों को शक्तिशाली समझें और हमला करने या उन्हें सताने और यातनाएँ देने की हिम्मत न करें। यह आत्मरक्षा (Self Defense) का एक तरीक़ा है।

मगर यह हर ग़ैर मुस्लिम पर आम हमला करने का आदेश नहीं था उसके साथ निम्नलिखित आदेश भी थे।

● (ईश्वर पवित्र क़ुरआन में कहता है कि तुम युद्ध करो मगर) 'सिवाय उन ग़ैर-मुस्लिमों के जिनसे तुमने सन्धि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की सहायता की। तो उनके समझौते को उनके नियमित समय तक पूरा करो। निस्सन्देह अल्लाह डर रखने वालों से प्रेम रखता है।' (अर्थात् जिन्होंने अपने शांति संन्धि को नहीं तोड़ा उनसे मत लड़ो।)

(heefJe$e]kegâjDeeve 9-4)

● अल्लाह (ईश्वर) ने पवित्र क़ुरआन में यह आदेश दिया कि,

''और यदि ग़ैर-मुस्लिमों में से कोई व्यक्ति तुमसे शरण का इच्छुक हो, तो उसे शरण दो यहाँ तक कि वह अल्लाह का क़लाम (पवित्र क़ुरआन) सुन ले, फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो। यह इसलिए कि ये ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं।' (इन्हें ज्ञान नहीं है।)

(heefJe$e]kegâjDeeve 9-6)

● ईश्वर ने पवित्र क़ुरआन में यह भी कहा कि,

''लड़ो अल्लाह की राह में उनसे जो तुमसे लड़ते हैं। और ज़्यादती (अत्याचार) न करो। अल्लाह तआला ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता।'' (heefJe$e]kegâjDeeve, 2:190)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने साथियों को सख़्ती से हुक्म दिया था कि जो हथियार न उठाए और जो बूढ़ा है उसको न मारें। न औरतों और बच्चों को मारें, और न फल देने वाले पेड़ को काटें। और न किसी को जलाएं। (Fyves keâmeerj)

समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखना :- (Enforcing Law and order in society)

● देश में जब कही दंगे होने लगते है तो पहले पोलिस वहाँ कर्फ्यू लगा देती है। और जब लोग कर्फ्यू की परवाह नहीं करते है और दंगा करते ही रहते है, तो फिर सरकार पोलिस को आदेश देती है की ''दंगाईयों को देखते ही गोली मार दो'' ''Look and Shoot''। किसी पर बिगर

मुकदमा चलाए देखते ही गोली मार देना यह कितना भयानक कानून है। मगर यह समाज में शांति बनाए रखने के लिए बहुत जरुरी है। इसलिए विश्व के सभी देशों में यह कानून है।

● कुछ अरब के वहशी (Barbarian) क़बीले ऐसे थे, जो किसी धर्म का पालन न करते और न किसी संन्धि (Peace agreement) का पालन करते। यह हर तरह से मुसलमानों को मार डालने की फिक्र में रहते। एक बार क़बीला अज़ल वकारा मदीना आकर हज़रत मुहम्मद (स.) से कहा कि हम मुसलमान हो गए हैं। हमारी शिक्षा के लिए बहुत सारे मुसलमान हमारे क़बीले में भेज दो। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनकी बातों को सच माना और अपने १० साथी उनके साथ भेज दिए। उन लोगों ने रास्ते में राजीया के पास आठ को मार डाला। और दो को मक्का वालों के हाथ बेच दिया।

इसी तरह अबू बरा आमिर ने नज़द के इलाके में इस्लाम की शिक्षा के लिए ७० मुसलमानों को हज़रत मुहम्मद (स.) से मांग कर ले गया और बिर माउना के मुकाम पर क़बीला रिगल और क़बीला ज़ाकुवान के साथ मिल कर ६९ को धोके से शहीद कर दिया। सिर्फ एक सहाबी (साथी) किसी तरह बच आए।

तो जिनका न कोई धर्म था न कर्म। जो बिल्कुल जानवर थे उनके लिए ईश्वर ने निम्नलिखित आदेश दिया,

● 'क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जो अपनी प्रतिज्ञा भंग करते रहे हैं और जिन्होंने रसूल को देश से निकाल देने का निश्चय किया था और ज़्यादती का आरंभ करनेवाले वही थे? क्या तुम उनसे डरते हो? अगर तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह इसका ज़्यादा हक़दार है कि उससे डरो।' (heefJe$e]kegâjDeeve 9:13)

● फिर जब हराम (पवित्र) महीने (ऐसे महीने जिन में युद्ध नहीं किया जाता है।) बीत जायें, तो अधर्मियों को जहाँ-कहीं पाओ क़त्ल करो, और उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे तौबा (पाप न करने की प्रतिज्ञा) कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, तो उनका मार्ग छोड़ दो। निसन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

(पवित्र क़ुरआन ९:५)

('हराम' शब्द का अरबी भाषा में अर्थ है, पवित्र व आदरणीय)

● ईश्वर ने इन आयतों में भी अधर्मियों को हमेशा मारते रहने का आदेश नहीं दिया। बल्कि उसी समय तक जब तक वह वहशी (हिंसक/आक्रमक) हैं। सुधर जाने के बाद उनका पीछा छोड़ देने के लिए कहा है।

जनकल्याण:- (For Freedom of Human being)

● अल्लाह (ईश्वर) ने मानवजाति के कल्याण के लिए भी युद्ध करने के लिए कहा है। जिससे अल्लाह (ईश्वर) को मानने वाले लोग जालिमों की ग़ुलामी से निकलकर विश्व में सम्मान और शांति से रह सकें। और एक अल्लाह (ईश्वर) की बग़ैर किसी डर और बाधा के खुल कर इबादत (प्रार्थना) कर सकें। मानवजाति के कल्याण के लिए लड़ाई वाली आयत इस तरह है।

''Deeef]Kej keäÙee keâejCe nw efkeâ legce Deuueen kesâ ceeie& ceW Gve yesyeme ceoeX, DeewjleeW Deewj yeÛÛeeW kesâ

efueS ve ueÌ[es, pees keâce]peesj heekeâj oyee efueS ieS nQ, Deewj pees]HeâefjÙeeo keâj jns nQ efkeâ Ss nceejs jye, ncekeâes Fme yemleer mes efvekeâeue efpemekesâ efveJeemeer]peeefuece nQ, Deewj Deheveer Deesj mes nceeje keâesF& meceÙe&keâ Deewj meneÙekeâ hewoe keâj os~''

(पवित्र क़ुरआन ४:७६)

lees Ssmeer pees Yeer DeeÙeleW heefJe$e]kegâjDeeve ceW nQ Gvekesâ kegâÚ keâejCe nQ, Gvekeâe kegâÚ mekeâejelcekeâ GösMe nw~ Jejvee Fmueece ves efkeâmeer efveoex<e keâer nlÙee keâjves keâer efMe#ee keâYeer veneR oer nw~ yeefukeâ efveoex<eeW keâer nj Øekeâej mes j#ee keâer yeele keâer nw~

• पहले विश्व युद्ध में २ करोड़ लोग मारे गए। दूसरे विश्व युद्ध में ६ करोड़ लोग मारे गए। सन २००० में अमेरिका के इराक पर किए हमले में २० लाख लोग मारे गए।

हर वर्ष महाराष्ट्र में १५०० किसान आत्महत्या करते हैं। हर महीने मुंबई में ४५० लोग ट्रेन से कट कर मरते हैं।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने जीवन काल में जितने युद्ध किए उसमें केवल १०१८ लोग मारे गए। (इस संख्या में भी करीब आधे मुसलमान हैं।) इससे अधिक तो हर वर्ष महाराष्ट्र के किसान आत्महत्या करते हैं। तो क्या आप हज़रत मुहम्मद (स.) ने जो लड़ाई लड़ी उसे युद्ध कहेंगे?

• हज़रत मुहम्मद (स.) को Deuueen (F&MJej) ने ४० वर्ष की आयु में पैग़म्बरी का काम सौंपा। आप (स.) ६३ वर्ष की आयु तक जीवित रहे। मगर ५५ वर्ष की आयु तक (अर्थात् पहले १५ वर्ष) हज़रत मुहम्मद (स.) और अन्य मुसलमानों को हथियार उठाने की अनुमति नहीं थी।

अगर ईश्वर उन्हें और आठ साल हथियार उठाने की अनुमती न देता तो इस धरती पर केवल एक ईश्वर की प्रार्थना करने वाला एक भी व्यक्ति जीवित न होता। और वह धर्म जिस की शिक्षा आदम (अ.स.), नूह (मनु) (अ.स.), इब्राहीम (अ.स.), मूसा (अ.स.) और अन्य पैग़म्बरों ने मानवजाति को दी थी कब की ख़त्म हो गया होती।

श्री कृष्णजी का आदेश :-

• हिन्दू धर्मग्रंथ महाभारत के अनुसार कर्ण एक सज्जन पुरुष थे। वह अर्जुन के सबसे बड़े भाई थे। वह पापी न थे और श्री कृष्णजी का बहुत अधिक आदर करते थे मगर महाभारत के युद्ध में वह दुर्योधन के पक्ष से लड़े जो के ग़लत रास्ते पर था।

• महाभारत के युद्ध में एक बार कर्ण के रथ का पहिया ज़मीन में धस गया। कर्ण शस्त्र रख कर रथ का पहिया ज़मीन से निकालने लगे। उसी समय श्री कृष्णजी ने अर्जुन को कर्ण की हत्या करने का आदेश दिया। कर्ण ने अपने भाई अर्जुन से कहा, ''नियम से युद्ध करो''

(निहत्थे पर हमला करना नियम के ख़िलाफ़ था) अर्जुन को लगा कि शायद श्री कृष्णजी ने उन्हें युद्ध के नियम के ख़िलाफ़ निहत्थे कर्ण की हत्या करने का आदेश दिया है। जब अर्जुन कुछ देर रुक कर सोचने लगे तो श्री कृष्णजी ने कहा,

''क्या धर्म है और क्या अधर्म है इसका फैसला कौन करेगा? यह वह नहीं करेंगे जो खुद ग़लत हैं और ग़लत मार्ग पर चलते हैं। यह वह करेंगे जो खुद सत्य के मार्ग पर चलते हैं और जो सत्य धर्म की स्थापना के लिए जीते हैं। तुम्हारा अपने शत्रु का युद्ध में हत्या करना उचित है, और तुम ऐसा ही करो।''

''एक क्षत्रिय की जो ज़िम्मेदारी होती है, उसको याद रखते हुए तुमको समझना चाहिए कि तुम्हारे लिए जो सबसे अच्छा काम है वह है सत्य धर्म की स्थापना के लिए युद्ध करना। इसलिए ऐ अर्जुन इस काम के करने से पिछे मत हटो।'' (Geeta chapter 2- Verse 31)

और अर्जुन ने अपने निहत्थे और बड़े भाई कर्ण की हत्या कर दी।

''सत्य धर्म की स्थापना के लिए युद्ध करो'' यह उपदेश या यह शिक्षा बहुत सारे धर्म में रही है, और यह आतंकवाद नहीं है। आतंकवाद तो अन्याय के कारण पैदा होता है और बढ़ता है। इस युग में सबसे पहले आतंकवाद की शुरुआत स्कॉटलैंड से हुई। क्योंकि स्कॉटलैंड के निवासियों को लगा कि इंग्लैंड उनके साथ न्याय नहीं कर रहे हैं। फिर फिलस्तीन के लोगों ने आतंकवाद को अपनाया। उन्हें लगा की अमरीका, इंग्लैंड और इस्राईल उनसे न्याय नहीं कर रहा है। फिर आतंकवाद को श्रीलंका के तमिल लोगों ने अपनाया क्योंकि उनको भी सिंहाली सरकार से यही शिकायत थी।

● (Terrorism) आतंकवाद को खत्म करने का एक ही उपाय है और वह है समाज में सबके साथ न्याय। न स्कॉटलैंड के ईसाई को, न श्रीलंका के हिन्दू को, और न फिलिस्तीन के मुसलमानों को, उनके धर्म ने आंतकवाद की शिक्षा दी थी। धर्म आतंकवाद नहीं सिखाता। यह तो सत्ता के लालची राजनेताओं के दुष्कर्म हैं जिनके कारण आतंकवादी पैदा होता है।

काफ़िर कौन?

काफ़िर यानी न मानने वाला। जो भी Deuueen (F&MJej) के आदेश को ग़लत कहेगा वह काफ़िर कहलाएगा। काफ़िर (इन्कारी) कोई भी हो सकता है। उदाहरण के तौर पर ईश्वर ने कहा हज़रत मुहम्मद (स.) के बाद अब कोई पैग़म्बर नहीं आएगा। उसके बाद अगर मुसलमानों का कोई समुदाय यह कहे कि अब भी पैग़म्बर आ सकते हैं। तो वह लोग भी क़ाफिर (न मानने वाले) कहलाएंगे। पाकिस्तान के कुछ लोग क़ादयानी को पैग़म्बर मानते हैं। वह लोग खुद को मुसलमान कहते हैं मगर विश्व के सारे मुसलमान उन्हें काफ़िर समझते हैं।

मुशरिक कौन?

मुशरिक यानी ईश्वर के साथ किसी और को भी पूजनीय और शक्तिशाली मानने वाला। यह केवल ग़ैर-मुस्लिम ही नहीं बल्कि मुसलमान भी हो सकते हैं।

जो भी यह कहे कि ईश्वर तो दुआ सुनता है और हमारी मुराद (इच्छा) पूरी करता है मगर यह पैग़म्बर, संत, महात्मा या बाबा भी हमारी मुराद (इच्छा) पूरी करता है तो यह बात ईश्वर जैसा दूसरों को भी समझना है, तो वह मुसलमान भी मुशरिक है।

१२. हज़रत मुहम्मद (स.) की १२ पत्नियाँ क्यों थीं?

● अब हम हज़रत मुहम्मद (स.) पर ग़लत फहमी और लोगों के अत्याचार के कारण लगे दूसरे आरोपों के बारे में जानने की कोशिश करेंगे। हज़रत मुहम्मद (स.) पर दूसरा आरोप उनके विवाह से सम्बन्धित है।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने १२ विवाह क्यों किए?

● एक से अधिक पत्नी रखने की सभी धर्मों में अनुमति है। इस युग में जो केवल एक पत्नी रखने का कानुन है वह हिन्दू या ईसाई या यहूदी धर्म का नहीं है बल्कि यह नेताओं और सरकार के बनाए हुए नियम हैं।

● हिन्दू धर्म ग्रन्थ के अनुसार श्री कृष्ण जी की १६,००० से अधिक पत्नियाँ थीं।

हज़रत सुलैमान (अ.स.) की ९९ पत्नियाँ थीं।

राजा दशरथ जी की चार पत्नियाँ थीं।

ऐसे अनगिनत पैग़म्बर या राजे महाराजे हुए हैं जिनकी एक से अधिक पत्नियाँ थीं।

● हज़रत मुहम्मद (स.) की बारह पत्नियाँ होंगी यह हज़रत मुहम्मद (स.) का भाग्य था। और यह भविष्यवाणी ४००० वर्ष पूर्व ही अथर्ववेद में कर दि गयी थी। वह श्लोक इस प्रकार है;

उष्टा यस्य प्रवाहिणो वधुमन्तों द्विर्दश।

वर्ष्मा रथस्य नि जिह्मीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः।

(अथर्ववेद, कुन्ताप सूक्तः २०-२)

अर्थात जिसकी सवारी में दो सुंदर ऊँटनियाँ हैं। या जो अपनी १२ पत्नियों के साथ ऊँट पर सवारी करता है। उसकी इज़्ज़त-व-एहतराम (आदर और महानता) की बुलंदी, अपनी तेज़ गति से आकाश को छू कर नीचे उतरती है।

(भाषांतर डा. एम. ए. श्रीवास्तव 'हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ' पेज नं. १५)

● यदि कुछ लोगों को इस विवाह के पीछे यह ग़लतफ़हमी हो कि इसमें कामुकता का तत्व सम्मिलित था, तो जब कोई व्यक्ति बहुत कामुक होता है तो बचपन से ही उसके व्यवहार व चरित्र में कामुकता का लक्षण होता है। या उसके कर्मों में अश्लीलता होती है।

लेकिन आज मुसलमानों से अधिक ग़ैर मुस्लिम हज़रत मुहम्मद (स.) के चरित्र को जानते हैं। क्योंकि मुसलमान वही पुस्तक पढ़ते हैं जो मुसलमान लेखक लिखता है। और मुसलमान लेखक अपने पैग़म्बर की बुराई क्यों लिखेगा। जब कि ईसाई और यहूदी लेखक अगर वह सज्जन है तो सच लिखेगा। और संप्रदायिक है तो ज़हर उगलेगा और हज़रत मुहम्मद (स.) को बदनाम करने की हर संभव कोशिश करेगा।

मगर आज तक यह इतिहास गवाह है कि चाहे कोई लेखक मुसलमान हो या ईसाई या यहूदी या किसी धर्म का हो और कितना ही संप्रदायिक हो और मुसलमानों के लिए उसके दिमाग में कितना ही ज़हर भरा हो। तब भी वह सब मिलकर हज़रत मुहम्मद (स.) के पैग़म्बर होने से पहले के खराब चरित्र या आचरण का एक भी उदाहरण नहीं दे सकते।

अगर हज़रत मुहम्मद (स.) के आचरण सही नहीं थे तो उनके अश्लील आचरण का एक भी उदाहरण इतिहास में क्यों नहीं है? क्या इतिहासकारों से भूल चूक हो गई है या ऐसे उदाहरण हैं ही नहीं?

● हज़रत मुहम्मद (स.) पैग़म्बर तो इस पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले भी थे। मगर हज़रत मुहम्मद (स.) इन्सान के रुप में जब पैदा हुए तो 'आप पैग़म्बर हैं' ऐसा ईश्वर ने आप को ४० वर्ष की आयु में बताया था। ४० वर्ष तक हज़रत मुहम्मद (स.) लोगों के बीच एक साधारण व्यक्ति की तरह रहे।

मगर इस साधारण जीवन में भी हज़रत मुहम्मद (स.) को लोग मुहम्मद नहीं पुकारते थे, बल्कि आदर से सादिक (सच्चा) और अमीन (जो कभी धोखा नहीं देता) पुकारते थे।

ऐसे युवक पर जिस पर बहुत कामुक होने का आरोप है उसे लोग सादिक और अमीन क्यों पुकारते थे?

● हज़रत मुहम्मद (स.) का विवाह हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से २५ वर्ष की आयु में हुआ। ५० वर्ष की आयु तक (अर्थात २५ वर्ष तक) आप ने हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के साथ एक खुश्हाल जीवन बिताया। आप दोनों को अल्लाह (ईश्वर) ने दो बेटे और चार बेटीयाँ दी थी।

● जब हज़रत मुहम्मद (स.) ५० वर्ष के थे तब हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) का देहांत हो गया। उनके देहांत के बहुत समय बाद तक हज़रत मुहम्मद (स.) ने विवाह नहीं किया। हज़रत मुहम्मद (स.) की बड़ी बेटी (हज़रत जैनब (रज़ि.)) का विवाह हो गया था और वह अपने ससुराल में थीं। हज़रत मुहम्मद (स.) के मुँह बोले बेटे हज़रत ज़ैद (रज़ि.) का भी विवाह हो गया था और वह अपनी पत्नी के साथ अलग रहते थे। इस तरह हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के देहांत के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) के घर में केवल तीन कम उमर बेटियाँ थीं। सारा मक्का शहर हज़रत मुहम्मद (स.) का दुश्मन था। इसलिए आप (स.) के साथियों ने आप (स.) से दूसरे विवाह के लिए आग्रह किया। आप (स.) ने उनकी बात मान ली और एक विधवा जिसकी आयु ६५ वर्ष से अधिक और जो बहुत मोटी और ऊंचे क़द की थीं उनसे विवाह कर लिया। उनका नाम हज़रत सौदा (रज़ि.) था। और उनके साथ बग़ैर किसी दूसरी पत्नी के चार साल तक रहे। (अर्थात् हज़रत सौदा (रज़ि.) अकेले ही आप के साथ रहतीं और कोई दूसरी पत्नी उनके साथ न थी।)

मेरा हज़रत मुहम्मद (स.) पर आरोप लगाने वालों से प्रश्न है कि अगर हज़रत मुहम्मद (स.) का आचरण सही नहीं था, तो आप (स.) की पहली पत्नी के देहांत के बाद आप (स.) ने तुरंत दूसरा विवाह क्यों नहीं किया? और जब आप (स.) ने विवाह भी किया तो एक बूढ़ी विधवा से क्यों किया? और चार वर्ष अकेले उनके साथ क्यों रहे?

● पैग़म्बर के सपने अल्लाह (ईश्वर) के आदेश होते हैं। जैसे हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने सपना देखा और अपने बेटे की कुर्बानी देने का प्रयास किया। इस घटना का वर्णन अथर्ववेद में 'पुरुषमेधा' के नाम से किया गया है। (अथर्ववेद १०-२-२६) (आप इसे मेरी पुस्तक 'पवित्र वेद और इस्लाम धर्म' में भी पढ़ सकते हैं।)

● इसी तरह अल्लाह (ईश्वर) ने हज़रत मुहम्मद (स.) को हज़रत आयशा (रज़ि.) को रेशम के कपड़े पहने हुए उनकी दुल्हन के रुप में दिखाया था। यह ईश्वर का आदेश था।

(ऐसा आदेश क्यों दिया था इसके बारे में हम बाद में चर्चा करेंगे।) तो जब लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) को हज़रत आयशा (रज़ि.) का रिश्ता पेश किया तो आप (स.) ने इन्कार नहीं किया। (आप ने खुद रिश्ता नहीं मांगा था।)

● हज़रत मुहम्मद (स.) का निकाह हज़रत आयशा (रज़ि.) से हो गया। उस समय हज़रत आयशा (रज़ि.) बालिग़ थीं। मगर हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत आयशा (रज़ि.) को बिदा करके अपने घर नहीं लाए। हज़रत आयशा (रज़ि.) विवाह के बाद भी तीन वर्ष तक अपने माता-पिता के घर पर ही थीं।

मेरा प्रश्न है कि अगर हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत कामुक थे तो उन्होंने एक जवान पत्नी को उसके माता पिता के घर तीन वर्ष क्यों छोड़े रखा। होना तो यह चाहिए था कि विवाह के तुरंत बाद उन्हें विदा करके घर ले आते। क्योंकि घर में जो पत्नी थी वह एक बूढ़ी, मोटी और ऊँचे क़द की महिला थीं। मगर ऐसा न हुआ।

आख़िर क्यों?

● हज़रत आयशा (रज़ि.) से विवाह के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने और ९ विवाह उचित कारणों की बुनियाद पर किये। अगर आप का आरोप है कि वह सब कामइच्छा (सेक्स) की बुनियाद पर थे तो फिर बताइए कि उन पत्नियों से ढेर सारी संतानें क्यों नहीं हुईं? हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से हज़रत मुहम्मद (स.) को छे संतानें थी। अर्थात आप (स.) में कोई बीमारी ना थी। (हज़रत मुहम्मद (स.) Infertile न थे) इसी तरह आप (स.) की पत्नियों में एक को छोड़कर कोई भी कुंवारी न थीं।

● आप मेरे एक भी प्रश्न का उत्तर दलील के साथ नहीं दे सकते। हज़रत मुहम्मद (स.) पर लगने वाले सारे आरोप बेबुनियाद और ग़लत हैं। यह 'सलमान रुश्दी' जैसे लोगों ने लगाए हैं जिनका खुद का कोई चरित्र नहीं है और जिनके सर पर सेक्स का भूत सवार रहता है और दिमाग में धर्म और ईश्वर के विरुद्ध ज़हर भरा हुआ है।

● हज़रत मुहम्मद (स.) पर यह भी आरोप है कि, जब आप ने हज़रत आयशा (रज़ि.) से विवाह किया तो उनकी आयु केवल ६ वर्ष थी।

● यह आरोप भी ग़लत है। इस आरोप का कारण यह है कि यह बात हदीस की एक पुस्तक में लिखी हुई है।

● जो लोग कहते हैं कि जो बुखारी में लिखा है वही सच है तो उनसे मेरा प्रश्न है कि हज़रत आयशा (रज़ि.) 'इल्मे-निसाब' की माहिर (Expert) थीं। 'इल्मे-निसाब' इतिहास जैसा ही एक विषय (Subject) है। मगर इसमें व्यक्ति को हजारों लोगों के वंश और उनके पूर्वजों का पूरा ज्ञान होता है। उन्हें हजारों लोगों के नाम उनके पुर्वजों के साथ याद होते हैं। आज हम हज़रत मुहम्मद (स.) से हज़रत आदम (अ.स.) तक उनके वंश के सभी लोगों का नाम जानते हैं, वह इसी 'इल्मे-निसाब' के कारण जानते हैं।

हज़रत आयशा (रज़ि.) साहित्य में भी माहिर थीं। आप को बहुत से शेर (Poem) याद थे।

● ६ साल की आयु में बच्चा स्कूल में पहली कक्षा में होता है और उसे ठीक से १०० तक गिनती गिनने भी नहीं आती है। तो ६ वर्ष की आयु में हज़रत आयशा (रज़ि.) 'इलमे-निसाब' और साहित्य की विद्वान कैसे हो गईं?

क्या विवाह के बाद उनको कोई ट्यूशन पढ़ाता था? क्योंकि 'इल्मे-निसाब' यह हज़रत

मुहम्मद (स.) ने किसी को नहीं पढ़ाया। तो उनको यह ज्ञान कहाँ से मिला।

उनके पिता हज़रत अबू बकर (रज़ि.) इस ज्ञान में माहिर (Expert) थे और उन्होंने ही इसे अपनी बेटी को सिखाया था।

● हज़रत आसमा (रज़ि.) यह हज़रत आयशा (रज़ि.) की बड़ी बहन हैं और जो हज़रत आयशा (रज़ि.) से १० वर्ष बड़ी थीं। हज़रत आसमा (रज़ि.) का निधन १०० वर्ष की आयु में हुआ उस समय इस्लामी वर्ष ७३ हिजरी था। इसलिए जब हज़रत मुहम्मद (स.) ने ७३ वर्ष पहले मक्का से मदीना हिजरत किया उस समय हज़रत आसमा (रज़ि.) की आयु २७ वर्ष थी। हज़रत आयशा (रज़ि.) हज़रत आसमा (रज़ि.) से १० वर्ष छोटी थीं, इसलिए उस समय आप की आयु १७ वर्ष हुई।

● मौलाना सय्यद सुलैमान नदवी ने अपनी पुस्तक (सीरते आयशा-पेज नं १५३) में लिखा है कि हज़रत आयशा (रज़ि.) का निधन इस्लामी वर्ष ६७ हिजरी में हुआ। और आप ४० वर्ष तक विधवा थीं। इन अंकों से भी हमें पता चलता है कि विधवा होते समय आप की आयु २७ वर्ष थी इसलिए विवाह के समय हज़रत आयशा (रज़ि.) की आयु १६ वर्ष थी।

● अगर हम हज़रत आयशा (रज़ि.) का विवाह के समय आयु १६ वर्ष मान भी लें तो तब भी यह बहुत कम है। हज़रत मुहम्मद (स.) जो उस समय ५० वर्ष के थे तो उन्होंने एक १६ वर्ष की कन्या से विवाह क्यों किया?

● पहली बात तो यह है कि यह हज़रत मुहम्मद (स.) ने खुद रिश्ता नहीं मांगा था। लोगों ने Propose किया था। दूसरी बात यह है कि सपने में आप ने जो देखा वह एक तरह का हज़रत आयशा (रज़ि.) के साथ विवाह करने का ईश्वर का आदेश था। जो आप टाल न सके।

● ईश्वर ने एक १६ वर्ष की कन्या का ५० वर्ष के पैग़म्बर के साथ विवाह करने का आदेश क्यों दिया था?

● बच्चा ३ वर्ष की आयु में Jr. KG.
५ वर्ष की आयु में 1 Std.
१५ वर्ष की आयु में 10 Std
१७ वर्ष की आयु में XII Std.
२१ वर्ष की आयु में Graduate.
२४ वर्ष की आयु में Post Graduate
२७ वर्ष की आयु में Ph.D पास करता है।

Ph.D करने के बाद वह जीवन भर किसी भी विद्यालय में कुशल तरीके से छात्रों को शिक्षा दे सकता है।

● जो बातें १५ से २७ वर्ष की आयु में सीखी जाती हैं, वह ४० वर्ष बाद ६७ वर्ष की आयु में भी अच्छी तरह याद रहती हैं, और किसी को सिखाई जा सकती हैं। क्योंकि कम आयु में मस्तिष्क में याद रखने की क्षमता अधिक होती है।

अगर कोई ४५ वर्ष की आयु में कोई बात याद करने का प्रयास करे तो, न तो वह अच्छी तरह याद होगा और न ४० वर्ष बाद अर्थात् ८५ वर्ष की आयु में वह किसी को उसकी शिक्षा दे सकता है।

● इसी कारण ईश्वर ने एक १६ साल की छात्रा (हज़रत आयशा (रज़ि.)) का दाखला विश्वविद्यालय (हज़रत मुहम्मद (स.)) के पास कर दिया।

हज़रत आयशा (रज़ि.) ने १६ वर्ष की आयु से २७ वर्ष की आयु तक हज़रत मुहम्मद (स.)

को अच्छी तरह पढ़ा। और फिर हज़रत मुहम्मद (स.) के इन्तेकाल (निधन) के बाद भी ४० वर्ष तक हज़रत मुहम्मद (स.) की एक एक बात लोगों को बताती रहीं। इस तरह इन्तेकाल (निधन) के बाद भी हज़रत मुहम्मद (स.) के दिन रात का जीवन अगले ४० वर्ष तक लोगों के सामने जीवित था।

हज़रत मुहम्मद (स.) मर्द-औरत दोनों के लिए अल्लाह का पैग़ाम लेकर आये थे। पवित्रता प्राप्त करना स्त्री पुरुष दोनों की ज़रुरत है। स्त्री की प्रकृति पुरुष से भिन्न है। वह माहवारी के समय अपवित्रता के काल से गुजरती है, फिर बच्चे के जन्म के समय किस तरह वह पाकी हासिल करे, कुछ ऐसी व्यक्तिगत बातें हैं जो एक स्त्री को स्त्री ही बता सकती है। एक पुरुष के लिए यह संभव नहीं है। हज़रत मुहम्मद (स.) पुरुष थे आप स्त्री पुरुष दोनों के लिए अल्लाह का संदेश लाये थे, तो स्त्री की व्यक्तिगत बातें बताने के लिए एक ऐसी स्त्री की ज़रुरत थी जिसको पैग़म्बर बता और समझा सकें। पत्नी से यह काम भलीभांति लिया जा सकता था। तो अल्लाह ने एक ऐसी उम्र वाली पत्नी प्रदान की जो पैग़म्बर के जीवन में अधिक समय तक रह कर सारी बातों को सीखकर लोगों को अधिक समय तक सिखाती रहे। और ऐसा ही काम अल्लाह ने हज़रत आयशा से लिया।

● जो कुछ इस्लाम धर्म के हदीस की किताबों में लिखा है। उसकी ३० प्रतिशत शिक्षा विद्वानों को हज़रत आयशा (रज़ि.) से मिली है।

इसी कारण अल्लाह (ईश्वर) ने हज़रत आयशा (रज़ि.) का कम आयु में हज़रत मुहम्मद (स.) से विवाह करा दिया।

● मौलाना मोहम्मद फारुख खान ने अपनी पुस्तक (हज़रत आयशा (रज़ि.) की शादी और असल उमर) में इस बात का पक्का सबूत दिया है की हज़रत आयशा (रज़ि.) की आयु विवाह के समय १६ वर्ष की थी।

(Firdaus Publication. 1781, Hauz Suiwalan, New Delhi-110002)

● हज़रत मुहम्मद (स.) पर यह भी आरोप है कि उन्होंने अचानक हज़रत ज़ैद (रज़ि.) की पत्नी हज़रत जैनब (रज़ि.) को देखा। जो उनको बहुत अच्छी लगीं। इसलिए ज़ैद (रज़ि.) ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया और हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनसे विवाह कर लिया।

● दूसरे आरोपों की तरह यह आरोप भी ग़लत है। इसके कारण निम्नलिखित हैं;

● हज़रत जैनब (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) के फुफ्फी की लड़की थीं। जब हज़रत मुहम्मद (स.) २० वर्ष के थे तो वह पैदा हुई थीं।

● हज़रत जैनब (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) के सामने ही खेलकूदीं और जवान हुईं।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के एक ग़ुलाम थे जिनका नाम हज़रत ज़ैद (रज़ि.) था। यह बचपन से ही आपके पास थे। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनको आज़ाद करके अपना मुंह बोला बेटा बनाया था। जब दोनों जवान हुए तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने खुद दोनों का विवाह कर दिया। अगर हज़रत जैनब (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) को बहुत पसंद होतीं तो वह खुद अपना विवाह करते न कि हज़रत ज़ैद (रज़ि.) का।)

● हज़रत जैनब (रज़ि.) सबसे सम्मानित और हज़रत मुहम्मद (स.) के वंश से थीं और गुलामों को सबसे नीच जाति समझा जाता था।

इसलिए हज़रत जैनब (रज़ि.) और हज़रत ज़ैद (रज़ि.) के बीच हमेशा तनाव रहता था। और आखिरकार हज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने हज़रत जैनब (रज़ि.) को तलाक दे दिया।

● अरब देश में एक परंपरा रही की वह मुंह बोले बेटे को भी अपने सगे बेटे जैसा समझते थे। बेटे के पिता के स्थान पर अपना नाम लगाते और उसको भी सगे बेटे जैसा विरासत में हिस्सा देते।

● अल्लाह (ईश्वर) को यह सब रिवाज नापसंद है। इन्सान अपनी मर्जी से न अपने सगे बेटा-बेटी को अपनी जाएदाद से बेदखल कर सकता है और न किसी ग़ैर को बेटा-बेटी बना कर अपनी विरासत में हिस्सा दे सकता है।

● शादी ब्याह के लिए जो रिश्ते जाएज़ हैं वह भी मुंह बोला बेटा-बेटी बनाने से नाजाएज़ नहीं हो जाएंगे।

● मुंह बोले रिश्तों का कोई महत्व नहीं है। समाज के मन में इस बात को मज़बूती से बैठाने के लिए ईश्वर ने हज़रत जैनब (रज़ि.) और हज़रत मुहम्मद (स.) का विवाह करा दिया। वरना बेटे की पत्नी (अर्थात् अपनी बहू) से पिता विवाह नहीं कर सकता है।

● हज़रत मुहम्मद (स.) के बारह विवाह में से यही एक विवाह है जो धरती पर नहीं हुआ बल्कि आसमान पर हुआ। जैसे हज़रत आदम (अ.स.) और हज़रत हव्वा (अ.स.) का निकाह खुद अल्लाह (ईश्वर) ने किया था उसी तरह हज़रत मुहम्मद (स.) और हज़रत जैनब (रजि.) का निकाह भी खुद अल्लाह (ईश्वर) ने किया था। इस विवाह का वर्णन क़ुरआन में इस प्रकार है;

ऐ नबी, याद करो वह अवसर जब तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे, जिसपर अल्लाह ने और तुमने उपकार किया था कि अपनी पत्नी को न छोड़ और अल्लाह से डर।'' उस समय तुम अपने दिल में यह बात छिपाए हुए थे जिसे अल्लाह खोलना चाहता था। तुम लोगों से डर रहे थे * हाँलाकि अल्लाह इसका ज़्यादा हक़ रखता है कि तुम उससे डरो। फिर जब जैद ने उसे तलाक दे दिया तो हमने उसका तुमसे विवाह कर दिया ताकि ईमानवालों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे। (heefJe$e]kegâjDeeve, 33:37)

(* जब आप को पता चला की तलाक के बाद अल्लाह तआला हज़रत जैनब से आप का विवाह करने का इरादा रखते हैं तो आप डर गए कि लोग क्या कहेंगे और यह बड़ी बदनामी वाली बात होगी। आप चाहते थे कि तलाक न हो और अल्लाह चाहता था कि यह प्रथा आप के ज़रिए टूटे। और वही हुआ जो अल्लाह चाहता था।)

● हज़रत जैनब (रज़ि.) को उनके घर में जो अचानक देखने की बात है तो यह भी बात ग़लत है। उसके कारण निम्नलिखित हैं;

● अल्लाह (ईश्वर) ने पवित्र क़ुरआन में आदेश दिया है कि किसी के घर में बग़ैर सलाम किए और बग़ैर अनुमति लिए मत दाख़िल हो।
(पवित्र क़ुरआन २४: २६-२७)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा है कि, अपनी माँ के कमरे में जाना हो तब भी बाहर से इजाज़त लो उसके बाद ही अंदर दाख़िल हो।
(Fceece ceeefuekeâ, cegvleKeye DeyeJeeye Vol-Hadis-No.754)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा जब किसी के घर जाना तो बिल्कुल दरवाज़े के सामने मत

खड़े होकर सलाम करो या इजाज़त मांगो, बल्कि दरवाज़े से हटकर खड़े हो ताकि अगर कोई महिला बग़ैर पर्दे के भी द्वार खोले तो आप उसे न देख सको।

(Deyet oeTo, cegvleKeye DeyeJeeye Vol 1-Hadis-No.753)

● अल्लाह (ईश्वर) ने पवित्र कुरआन में कहा है कि ईश्वर को यह बात सख्त नापसंद है कि कोई दूसरों को तो उपदेश दे और खुद उस पर अमल ना करे। (heefJe$e]kegâjDeeve 61:3) तो जो हज़रत मुहम्मद (स.) दूसरों को उपदेश देते थे, वह पहले खुद अमल करते थे।

● तो किसी महिला को उसके घर में हज़रत मुहम्मद (स.) का अचानक देखने का सवाल ही पैदा नहीं होता। और हज़रत जैनब (रज़ि.) को हज़रत मुहम्मद (स.) उनकी पैदाइश से देख रहे थे। तो अचानक पसंद करने का प्रश्न कहां होता है। और हज़रत मुहम्मद (स.) ने ही उनका पहला विवाह हज़रत ज़ैद (रज़ि.) से कराया था। अगर आप चाहते तो पहले ही उनसे विवाह कर लेते।

● तो हज़रत मुहम्मद (स.) पर यह आरोप भी दुश्मनों ने लगाया हुआ है। जो आप (स.) को बदनाम करना चाहते हैं।

आप के कुछ विवाह के कारण

● हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) और उनके पति मक्का में यातनाएं सहते सहते तंग आ गए थे। इसलिए मदीना हिजरत (स्थानांतरण) करना चाहा और मदीना जाने के लिए अपने घर से निकल गए। रास्ते में हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के क़बीले ने रोक लिया और उनके पति से कहा कि अगर आप जाना चाहते हो तो जाओ मगर हमारे क़बीले की लड़की को मदीना नहीं ले जा सकते हो। उन लोगों ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) और उनके दूध पीते बच्चे को रोक लिया। और उनके पति रोते हुए मदीना चले गए।

● जब उनके पति के क़बीले वालों को इस घटना का समाचार मिला तो वह बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने कहा कि अगर लड़की तुम्हारी है तो उसके गोद में जो बच्चा है उस पर पिता का ज़्यादा हक़ है इस लिए वह हमारे क़बीले में रहेगा। और वह बच्चा छीन कर ले गए।

● हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने जब पति और बच्चा दोनों खो दिया तो हर दिन जिस स्थान पर वह पति से अलग हुई थीं उसी जगह पर आकर सुबह से शाम तक रोती रहतीं। ऐसा एक वर्ष तक हुआ। आखिरकार किसी को दया आ गई और उन्होंने उम्मे सलमा (रज़ि.) को बच्चा लौटा दिया और मदीना जाने की अनुमति दे दी।

● हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने अकेले ४०० Km का सफर पैदल तय किया और मदीना पहुँची और अपने पति के साथ रहने लगीं। मगर आप ने मदीना में अभी एक वर्ष भी न बिताया था कि आप विधवा हो गईं। दुश्मनों ने मदीना वालों को घेर रखा था। लोग सामान बेचने दूसरे शहर में नहीं जा पा रहे थे। इसलिए लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। ऐसे समय एक विधवा और उसके बच्चे को कोई कितने दिन सहारा देता।

● अगर बग़ैर विवाह किए हज़रत मुहम्मद (स.) उन्हें सहारा देते तो एक और आरोप आप (स.) पर लगता। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) को एक सन्माननीय जीवन का अवसर देने के लिए आप (स.) ने उनसे विवाह कर लिया।

● उम्मे हबीबा (रज़ि.) यह अबू सुफियान की बेटी थीं। अबू सुफियान यह मक्का के बड़े सरदार थे और राजा जैसे थे। वो मुसलमानों के

कट्टर दुश्मन थे। मक्का वालों के मुसलमानों से जितने युद्ध हुए उन सबके अबू सुफियान ही सेनापती थे। जब आप की बेटी मुसलमान हुई तो उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। बेटी का बाप दुश्मन हो गया। उम्मे हबीबा (रज़ि.) लाचार होकर अपने पति उबेदुल्ला इब्ने जहश के साथ हबशा (Euthopia) जो कि सऊदी अरब से समुद्र पार अफ्रीका में है वहाँ चली गईं। अभी कुछ दिन गुजरे थे कि आप के पति का देहांत हो गया। मक्का की राज कुमारी अफ्रीका में बेसहारा और लाचार हो गई। मक्का लौटो तो बाप जान का दुश्मन। अफ्रीका में न कोई जान पहचान न कोई रोज़ी रोटी का सहारा। आगे शेर पीछे खाईं वाली हालत थी आप की। ऐसे में हज़रत मुहम्मद (स.) ने आप को सहारा दिया। और आप से विवाह कर लिया।

● इस तरह आप (स.) ने जितने विवाह किए उनका कुछ न कुछ उद्देश्य था। कुछ महत्वपूर्ण कारण थे जो हो सकता है हम समझ पाएँ, और हो सकता है वह हमारी समझ से बाहर हो। क्योंकि हम २१ वीं शताब्दी में रहते हैं और यह ७ वीं शताब्दी की बात है। उस समय के सामाजिक स्थिति, रीतिरिवाज, लोगों की मज़बूरियां, सामाजिक सुरक्षता, इत्यादी का इस समय हम पूरी तरह अनुमान नहीं लगा सकते हैं।

केवल एक बात याद रखिए कि एक व्यक्ति पाप करते हुए पैग़म्बर नहीं रह सकता। वह पापी होगा या पैग़म्बर। दोनों एक साथ कभी नहीं। हज़रत मुहम्मद (स.) एक सच्चे पैग़म्बर थे और आप (स.) ने कभी कोई ग़लत काम नहीं किया।

● जयपुर के राजा मान सिंग ने बारह विवाह किये थे। और उन सबको एक साथ रखना उन के लिए राज्य चलाने से अधिक कठिन था। मगर राज्य में एकता और सुरक्षितता के लिए उन्हें छोटे-छोटे सरदारों से दोस्ती ज़रुरी थी। इसलिए सबकी बेटियों से विवाह किया और राज्य में शांति बनाने में सफल रहे।

● उनके राज में शांति तो हो गई मगर घर में शांति बनाए रखना उनके लिए बहुत कठिन था। इसलिए जब भी कोई रानी एक शब्द भी मुंह से निकालती एक मुन्शी उसे लिखता रहता। और अगर उस रानी ने कोई ग़लत बात कह दी तो दंड के तौर पर उसे कुछ अनाज़ चक्की चला कर पीसने पड़ते। घर में अगर दो रानियां लड़ पड़तीं तो उन के क़बीले भी लड़ पड़ते।

● इसलिए न केवल मान सिंह के लिए बल्कि हर व्यक्ति के लिए दो पत्नियों के बीच शांति बनाये रखना और न्याय करना बहुत मुश्किल है। और इसमें आनंद से अधिक परेशानी है।

इसलिए जो पैग़म्बर ऐसा करता है किसी खास उद्देश्य से ही करता है।

जयपूर में आमेर किले (Amer Fort) में आज भी बारह रानियों के महल मौजूद हैं। आप जब भी जयपूर जाएँ इस ऐतिहासिक शहर के किलों को ज़रुर देखें।

(हजरत मुहम्मद के आचरण कैसे थे? का
****
yeekeâer efnmmee (hespe

आप कान की लौ तक (कंधे से कुछ ऊपर) लंबे बाल रखते। आप सर में तेल लगाते थे।
(तिरमिज़ी)

● ६३ वर्ष की आयु में आप (स.) के केवल २० बाल सफेद हुए थे।

● आप (स.) की आंखें बड़ी थीं। पुतली काली थी। सफेद हिस्से में लाल धारी थी। भवें लंबी।

****

१३.अग्नि का रहस्य क्या है?

● अग्नि को समझने के लिए हम पहले पवित्र वेदों के श्लोकों का अध्ययन करेंगे। फिर पवित्र क़ुरआन के आयतों का अध्ययन करेंगे और इस रहस्य को जानने का प्रयास करेंगे कि अग्नि कौन हैं?

पवित्र वेदों के श्लोक

हम पवित्र वेदों के निम्नलिखित श्लोक का अध्ययन करते हैं;

● ऋग्वेद का पहला श्लोक है,

''सारी प्रशंसा और प्रार्थना अग्नि के लिए है।''

(ऋग्वेद १:१:१)

● ओह अग्नि! आप ही लोगों की मनोकामना को पूरी करते हो। आप ही प्रार्थना के योग्य हो। आप ही विष्णु, ब्रम्हा और बृहस्पति हो।

(ऋग्वेद २-१-३)

● मित्र, वारुन, अग्नि, गुरु, याम, वायु यह एक ही शक्ति के नाम हैं। विद्वान एक ईश्वर को उसके विशेषता के आधार पर अलग-अलग नाम से पुकारते हैं। ($e+iJeso 10-114-5)

ऊपर लिखे हुए श्लोक यह स्पष्ट करते हैं कि अग्नि यह ईश्वर का ही एक नाम है, जो उसकी विशेषता के अनुसार है।

अब हम पवित्र वेदों के कुछ और श्लोक का अध्ययन करते हैं;

● ''हमने अग्नि को दूत चुना है।''

(ऋग्वेद १-१२-१)

● ''ओह अग्नि! मनु ने आप को पैग़म्बर के रुप में स्वीकार किया है।'' ($e+iJeso 1-13-4)

● अग्नि वह इन्सान है जो ईश्वर की प्रार्थना करने वालों से प्रसन्न होते हैं।

(ऋग्वेद १-३१-१५)

● अग्नि को केवल विद्वान पहचान पाएंगे।

(ऋग्वेद १०-७१-३)

● ज्ञान मंथन से अग्नि का रहस्य खुलेगा। और इसी पर तुम्हारी मुक्ति निर्भर है। अग्नि को मान कर ही आप लोग विश्व के सरदार (इमाम) बनोगे। ($e+iJeso 1-31-15)

● अग्नि के रहस्य का शोध मरुत गण (अर्थात् रेगिस्तान के लोग) करेंगे। ($e+iJeso 3-3-5)

● जब अंतिम मशाल (पवित्र क़ुरआन) को पहली मशाल (पवित्र वेद) पर रखा जाएगा तो ही अग्नि का रहस्य खुलेगा। ($e+iJeso 3-29-3)

पवित्र क़ुरआन की आयतें: -

पवित्र क़ुरआन की पहली आयत (पहला पद) है कि, ''सारी प्रशंसा एक ईश्वर के लिए है जो सारे ब्रम्हाण्ड का मालिक है।''(heefJe$e]kegâjDeeve 1:1)

● ''हज़रत ईसा ने कहा, ऐ बनी इस्राईल (यहूदी समुदाय)। मैं एक पैग़म्बर के, मेरे बाद आने की ख़ुशख़बरी देता हूँ जिसका नाम 'अहमद' है।'' (heefJe$e]kegâjDeeve 61:6)

● ''मुहम्मद किसी पुरुष के पिता नहीं हैं और वह आख़री पैग़म्बर हैं।'' (heefJe$e]kegâjDeeve 33:40)

● ''ऐ मुहम्मद! जल्दी ही हम (ईश्वर) तुम को महमूद की पदवी देंगे।'' (heefJe$e]kegâjDeeve 17:79)

● अल्लाह (ईश्वर) पवित्र क़ुरआन में कहता है,

''हमने हर जानदार को पानी से पैदा किया है।'' (heefJe$e]kegâjDeeve, 21:30)

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा की अगर हज़रत मूसा भी आज जीवित होते तो मुझे पैग़म्बर माने बग़ैर उनको भी मुक्ति न मिलती।
(तिरमिज़ी १४१-३ अहमद ३३८-४)

● क़ुरआन की इन आयतों में जो बात हमको याद रखना है वह यह है कि एक ही महापुरुष को अल्लाह (ईश्वर) ने तीन नाम से याद किया। अहमद, मुहम्मद और महमूद।

अहमद, यह हज़रत मुहम्मद (स.) का धरती पर जन्म से पहले का नाम है। इस धरती पर आप का नाम मुहम्मद (स.) है। आने वाले समय में (परलोक में) आप को महमूद का पद मिलेगा।

अब हम फिर से हिन्दू धर्म के ग्रंथों का अध्ययन करते हैं;

● हमने इसी पुस्तक में इसके पहले अध्ययन किया कि ईश्वर अपने विशेषता (Feature) वाले नाम से पैग़म्बरों को भी सम्बोधित करता है। रहीम, ग़फूर जो कि ईश्वर के नाम हैं इससे उसने पवित्र क़ुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.) को याद किया है। ब्रह्मा यह ईश्वर का नाम है। इस नाम से उसने भविष्य पुराण में हज़रत आदम (अ. स.) और अथर्ववेद में हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को याद किया।

इसी तरह अग्नि भी ईश्वर की एक विशेषता है। और इस नाम से भी उसने एक पैग़म्बर को ऋग्वेद में याद किया है। मगर यह कौन है इस को जानने के लिए हम पवित्र वेदों के कुछ निम्नलिखित श्लोकों का फिर से अध्ययन करते हैं;

● ऐ अग्नि! हम तुम्हारे तीनों रुपों को जानते हैं। जहाँ जहाँ तुम्हारा ठिकाणा है उन स्थानों को भी जानते हैं। हम तुम्हारे गुप्त नाम और तुम्हारे पैदा होने के स्थान को भी जानते हैं। जहाँ से आये हो वह भी जानते हैं। ($e+iJeso 10-45-2)

● अग्नि स्वर्ग लोक में बिजली के रुप में पहली बार प्रकट हुए। दूसरी बार वह मानवजाति में प्रकट हुए, तब वह जातवेद अर्थात (जन्म से ही ज्ञान रखनेवाला) कहलाए। तीसरी बार वह जल में प्रकट हुए। मानवजाति के कल्याण करने वाले हमेशा सफल रहते हैं।
(ऋग्वेद १०-४५-१)

● जिस अग्नि का अनंत रुप कभी ख़त्म नहीं होता, उसे बगैर शरीर वाली आत्मा कहते हैं। जब वह शरीर धारण करते हैं तब असूर (सबसे अंत में आने वाला) और नरांशंस कहलाते हैं। और जब ब्रह्माण्ड को उज्जवलित करते हैं तो मातरेशवा होते हैं। और उस वक्त वह हवा की तरह (सब को लाभ देनेवाले) होते हैं। ($e+iJeso 3-29-11)

● अगर हम इन श्लोकों का विश्लेषण करें तो हमें किसी महापुरुष के चार अवस्था का पता चलता है।

१) पहली अवस्था में वह बिजली की तरह जन्म लेते हैं। उस समय उनका नाम अग्नि होता है।

२) उनका दूसरा जन्म मनुष्य (आत्मा) के रुप में होता है। उस समय उनका नाम जातवेद (जन्म से ही ज्ञान रखनेवाला) होता है।

मनुष्य वास्तव में एक आत्मा है। वह पृथ्वी पर केवल शरीर धारण करता है। और देहांत के बाद फिर प्रलोक चला जाता है। इसीलिए जब कोई मरता है तो उसकी लाश को देखकर कोई नहीं कहता कि यह वह व्यक्ति पड़ा है। बल्कि कहता है कि उसकी लाश पड़ी है। इसलिए यहाँ पर मनुष्य के रुप में पैदा होने का अर्थ है कि बिजली के आकार से मनुष्य की आत्मा का रुप लेना।

३) महापुरुष का तीसरा जन्म पानी में होता है। और उस समय उनका नाम असुर और नराशंस होता है।

पानी में जन्म लेने का अर्थ है शरीर धारण करना। क्योंकि सभी जीवित प्राणियों को ईश्वर ने पानी से पैदा किया है। (पवित्र क़ुरआन २१:३०) और हर मनुष्य का शरीर ६५% पानी ही होता है।

४) महापुरुष का चौथा रुप प्रलोक में फिर प्रकट होगा। उस समय उनका नाम मातरेशवा होगा। और वह सबका कल्याण करेंगे।

अब हम फिर से इस्लामी ग्रंथों का अध्ययन करते हैं।

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हमने एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) से पूछा था ''या रसूल अल्लाह! आप कब पैग़म्बर बने?'' तो आप (स.) ने फ़रमाया ''मैं उस समय भी पैग़म्बर था जब हज़रत आदम (अ.स.) अपनी आत्मा और शरीर के बीच थे।''

(eflejefce]peer, efceMkeâele, yeeye meÙÙeogue cegme&ueerve heâmeue meeveer)

अर्थात् जब ईश्वर पहले मनुष्य हज़रत आदम (अ.स.) को बना ही रहा था। तब भी मेरा अस्तित्व पैग़म्बर के रुप में था।

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा,

''अल्लाह ने पहले मेरा नूर बनाया था।'

(cejkeâleye oheälej-Yeeie 3)

● पवित्र क़ुरआन में ईश्वर कहता है कि हमने हज़रत मुहम्मद (स.) को 'रहमतुल लिल आलमीन' के रुप में भेजा है। (heefJe$e kegâjDeeve, 21:107)

'रहमतुल लिल आलमीन' का अर्थ है कि सारे विश्व के लिए ईश्वर की कृपा। सबका भला करने वाला। सब की मुक्ति का माध्यम बननेवाला।

● हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि क़यामत (प्रलय) के दिन जब सूरज की गरमी से लोग परेशान होंगे और सभी लोग पैग़म्बरों से अनुरोध करेंगे कि अल्लाह (ईश्वर) से विनंती करें कि अल्लाह (ईश्वर) उन सब को क्षमा कर दे और इस गरमी की पीड़ा से बचा ले, तो कोई पैग़म्बर ईश्वर से बात करने की हिम्मत नहीं करेगा। जब कोई पैग़म्बर अल्लाह (ईश्वर) से बात करने की हिम्मत नहीं करेगा। तो लोग मेरे पास आएंगे। मैं उठूँगा और अल्लाह (ईश्वर) के सामने सिजदा करुँगा और उस समय तक सिजदें में रहूँगा जब तक अल्लाह (ईश्वर) मुझे सर उठाने के लिए न कहे। जब अल्लाह (ईश्वर) मुझे सर उठाने के लिए कहेगा तो मैं लोगों की मुक्ति के लिए आग्रह करुंगा। उसके बाद अल्लाह (ईश्वर) मुझे उन सबको नरक से बचाने का आश्वासन देगा जिन लोगों ने शिर्क नहीं किया। अर्थात एक अल्लाह (ईश्वर) को छोड़कर और किसी की उपासना नहीं की।

(अर्थात हज़रत मुहम्मद (स.) क़यामत में एक अल्लाह (ईश्वर) को मानने वाले मानवजाति की मुक्ति का कारण बनेगें।)
(yegKeejer, cegefmuece, cee®hegâue noerme, V-1, Page 245)

अब हम एक एक कड़ी को जोड़ते हैं।

● अग्नि का जन्म सबसे पहले, बिजली की तरह हुआ। हज़रत मुहम्मद (स.) का जन्म सब से पहले नूर (प्रकाश) की तरह हुआ।

● अग्नि का दूसरा जन्म मनुष्य की आत्मा की तरह हुआ। नाम ''जात-वेद''। हज़रत मुहम्मद (स.) का जन्म हज़रत आदम (अ. स.) से पहले रुह (आत्मा) की शक्ल में हुआ। नाम 'अहमद'।

● अग्नि का तीसरा जन्म पानी में। नाम आसुर अथवा नराशंस। ईश्वर ने मानवजाति को पानी से पैदा किया (पवित्र क़ुरआन २१:३०) इसलिए पानी में पैदा होने का अर्थ है कि शरीर धारण करना। हज़रत मुहम्मद (स.) का पृथ्वी पर मनुष्य के रुप में जन्म हुआ। नाम 'मुहम्मद'।

● अग्नि के चौथे रुप में नाम मातरेशवा होगा। काम हवा की तरह सबका कल्याण करना। हज़रत मुहम्मद (स.) का चौथा रुप में नाम 'महमूद' होगा। काम पापियों के मुक्ति के लिए क़यामत के दिन अल्लाह (मुक्ति) से आग्रह करना।

● क्या आप को दोनों में कुछ समानता नज़र आती है?

● डा. वेद प्रकाश उपाध्याय जो के प्रयाग यूर्निवर्सिटी में संस्कृत के विद्वान हैं, उन्होंने वेदों के ज्ञान का मंथन करके यह शोध निकाला की वेदों में जिसे नराशंस, कल्की अवतार और महामे ऋषी कहा गया है वह हज़रत मुहम्मद (स.) ही हैं। उनकी पुस्तक ''नराशंस और अंतिम ऋषी'' को पढ़ कर आप विस्तार से जानकारी हासिल कर सकते हैं। इसे आप मेरी पुस्तक ''पवित्र वेद और इस्लाम धर्म'' में भी पढ़ सकते हैं।

''तो जिस पैग़म्बर को वेदों में अग्नि कहा गया है वह हज़रत मुहम्मद (स.) ही हैं।''

● पवित्र ऋग्वेद में जैसे कहा है कि ''जब अंतिम मशाल (पवित्र क़ुरआन) को पहली मशाल (पवित्र ऋग्वेद) के साथ पढ़ा जाएगा तो ही अग्नि की पहचान होगी।'' तो आज हमने दोनों को पढ़ कर यह रहस्य जान लिया।

● पवित्र ऋग्वेद कहता है कि अग्नि को समझने और मानने के बाद ही हमारा कल्याण होगा, और हम जगत के सरदार बनेंगे। तो आइए हम अपने कल्याण की तरफ पहला कदम उठाएँ।

● पवित्र ऋग्वेद कहता है कि, अग्नि को पहचाने और माने बगैर मुक्ति असंभव है। तो आइए हम हज़रत मुहम्मद (स.) को अंतिम पैग़म्बर की तरह पहचाने और उनके आदेश का पालन करें। ताकि इस जीवन में भी और मरने के बाद भी हम सफल रहें।

हज़रत मुहम्मद (स.) के आदेश का पालन की शुरुआत कैसे करें?

● हज़रत मुहम्मद (स.) के आदेश का पालन की शुरुआत दो कामों से करें।

१) अपने मन में यह पक्का यकीन कर लें कि एक ईश्वर (जो की निरंकार है) के अलावा और कोई भी पूजने के लायक नहीं है। और वास्तव में उस एक अल्लाह (ईश्वर) को छोड़ कर और किसी की भी पूजा और प्रार्थना न करें।

२) अपने कर्मों को जितना बेहतरीन (सर्वश्रेष्ठ) बना सकते हों उतना बेहतरीन बनाएं।

(इस पा keae yeekeaer efnmmee hespe veb 43 hej nw~)

हज़रत मुहम्मद (स.) का जीवन एक नज़र में

आप (स.) के पिताश्री हज़रत अब्दुल्ला का देहांत	आप (स.) के जन्म से ७ महीने पहले 569AD
आप (स.) का जन्म	२०/२२ एप्रिल 570AD
दाई हलीमा आप (स.) को देहात ले गई।	आयु ४ महीने 570AD
दुबारा मां के पास आ गए।	आयु ५ वर्ष 575 AD
हज़रत आमिना (आप (स.) की माताश्री) का देहांत	आयु ६ वर्ष 576 AD
दादा अब्दुल मुत्तलिब का देहांत	आयु ८ वर्ष 578 AD
हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से विवाह	आयु २५ वर्ष 595 AD
हिरा गुफा में उपासना का आरंभ	आयु ३७ वर्ष 607 AD
पैग़म्बरीं का आरंभ	आयु ४० वर्ष 610 AD
मित्रों और रिश्तेदारों में धर्म प्रचार	आयु ४१ वर्ष 610/613 AD
पैग़म्बर होने की खुली घोषणा।	आयु ४४ वर्ष 614 AD
इथोपिया की ओर मुसलमानों का देशांतर	आयु ४५ वर्ष 615 AD
हज़रत मुहम्मद (स.) के कबीलों का सामाजिक बहिष्कार	आयु ४७ वर्ष 616-619 AD
हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) और चाचा अबू तालिब का देहांत	आयु ५० वर्ष 619 AD
ताएफ की ओर सफ़र	आयु ५० वर्ष 619 AD
मेराज की घटना, पाँच समय की नमाज़ पढ़ना ज़रुरी	आयु ५० वर्ष 620 AD
हज़रत आयशा (रज़ि.) से विवाह।	आयु ५१ वर्ष 621AD
मदीना के ७५ लोगों ने इस्लाम कुबूल किया।	आयु ५२ वर्ष 622AD
मक्का से मदीना का सफ़र (Migration)।	आयु ५२ वर्ष 622AD
मस्जिदे-नबवी बनाने का काम आरंभ हुआ।	आयु ५२ वर्ष 622AD
येरुशलेम से मक्का की तरफ नमाज़ में मुँह करने का हुक्म।	आयु ५५ वर्ष 624AD
बदर में पहला युद्ध।	आयु ५५ वर्ष 624AD
ओहद में दूसरा युद्ध।	आयु ५६ वर्ष 625AD

हज़रत मुहम्मद (स.) का जीवन एक नज़र में

तीसरा युद्ध जिसमें खाईं खोदी गई।	आयु ५८ वर्ष 627AD
हुदैबिया में शांति संधी।	आयु ५९ वर्ष 628AD
खैबर के मुकाम पर यहूदियों से युद्ध।	आयु ६० वर्ष 629AD
मुअत्ता के मुकाम पर रोम की सेना से युद्ध।	आयु ६० वर्ष 629AD
मक्का विजय हुआ।	आयु ६१ वर्ष 630AD
हुनैन के मुकाम पर युद्ध	आयु ६१ वर्ष 630AD
तबूक का सफ़र	आयु ६२ वर्ष 631AD
आखरी हज और आखरी खुत्बा (भाषण)	आयु ६३ वर्ष 632AD
बीमारी और देहांत	आयु ६३ वर्ष 632AD

हज़रत मुहम्मद (स.) की आयु Lunar Calender के अनुसार है और घटनाओं की तारीख इतिहास और Solar Calender के अनुसार है, इसलिए आयु और तारीख में कुछ अंतर है।

MR. Q.S. KHAN IS ALSO AUTHOR OF FOLLOWING BOOKS.

Management Topics:-

- Law of success for both the Worlds. (Translated in Hindi & Marathi)
- How to Prosper Islamic Way? (Translated in Hindi & Urdu)

Religious Topics:-

- Teaching of Vedas and Quran (Translated in Hindi, Marathi & Gujarat)
- Hajj Journey Problems and their easy Solutions. (Translated in Urdu, Hindi, Gujarati, Bengali)
- Kya her Mah Chand dekhna Zaroori hai? (Translated in English, Arabic)

Engineering Topics:-

- Design and Manufacturing of Hydraulic Presses

All above mentioned books and many books could be studied and freely downloaded from:

www.freeeducation.co.in
www.tanveerpublication.com

इस पुस्तक को लिखने के लिए निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता ली गयी है। हम उन सब लेखकों और प्रकाशकों के आभारी हैं।

१) पवित्र क़ुरआन (अनुवाद फातेह मुहम्मद जालंधरी)

२) मारुफुल हदीस (मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नोमानी)

३) अगर अब भी न जागे तो
(मौलाना शम्स नवीद उस्मानी,
सय्यद अब्दुल्ला तारिक,
जासिन बुक डेपो,
उर्दू बाजार, जामा मस्जिद, दिल्ली)

४) हज़रत मुहम्मद (स.) और भारतीय धर्मग्रंथ
(डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव, नेशनल प्रिटिंग प्रेस, दरियागंज, दिल्ली)

५) Hazrat Mohammed in world scripture
(A.H.Vidyarthi, Adam Publisher & Distibutors 1542,
Pataudi House, Dariya ganj, New Delhi-110002)

६) पैग़म्बरे इस्लाम गैरमुस्लिमों की नज़र में
(मुहम्मद याहया खान, फरीद बुक डेपो, नई दिल्ली ११०००२)

७) सीरते अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
(शाह मिसबाहुद्दीन शकील, अल् रहमान प्रिटंर्स और पब्लीशर्स,
१८, जकरिया स्ट्रीट, कोलकत्ता ७०००७३)

८) The Quran & Modern Science
(Dr. Zakir Naik, Publishers :-Islamic Research Foundation,
56/58 Tandel Street (North), Dongri, Mumbai- 400 009)

९) सीरते नबी
(लेखक- अल्लामा शिबली नोमानी (रह.), सय्यद सुलैमान नदवी)

१०) संत, महात्मा, विचारवंत और इस्लाम
(संकलक: सोमनाथ देशकर, संदेश प्रकाशन, पुणे-४११ ००५)

११) Barbans Bible

Translated by : Lonsdale And Laura Ragg

Books Written By Mr. Q.S. Khan

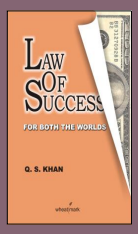

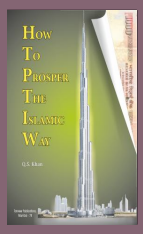

Hindi Translation of
"Law of success for both the worlds"
By Dr. Vimla Malhotra

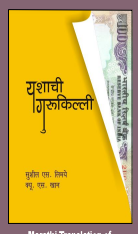

Marathi Translation of
"Law of success for both the worlds"
By Mr. Sushil S. Linye

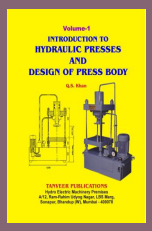

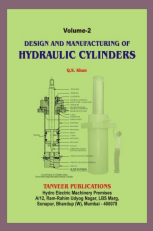

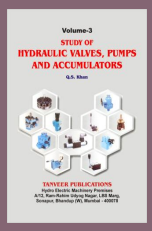

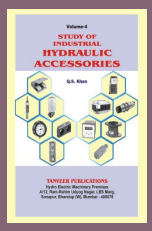

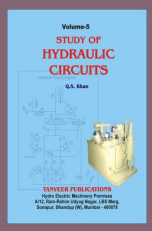

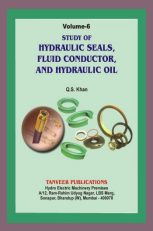

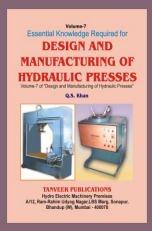

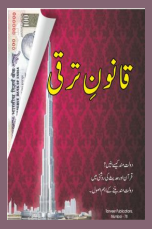

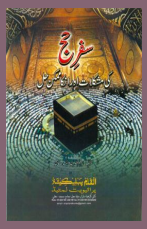

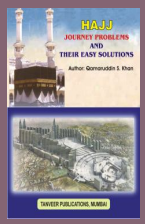

TANVEER PUBLICATION
Hydro Electric Machinery Premises, A/13, Ram-Rahim Udyog Nagar,
Bus stop Lane, L.B.S. Road, Sonapur, Bhandup (w) Mumbai - 400078.
Phone: 022-25965930, Mob: 09320064026. Email: hydelect@vsnl.com
Websites: www.tanveerpublication.com / www.freeeducation.co.in

ISBN NO. 978-93-80778-21-1

Price:- 30/-